





Google समूह
होम विदेह गोजेगुपस

ढोवौ ओउउथिओ विदेह  थौतिने तो वीं गेगुपस विदेह उवि मनोदयासनस नहनुगह  शेनसियोपे

विदेह जाउवृत्तक उसिकसन ओमपम जाउ

संपादकीय

ई-पत्र

पुनियि जाउहुन जी,
अहाँक पडाओ 'विदेह' पाक्षिक क २३० म अंक पूनापन भेठ । एहि सँ पूर्वक अंक सभ सेहो नयिनीति रूप सँ हमना भेटैत नहँ अछि, आ सुविधानुसार हम ओकरा आदि सँ अंत बना पढ़ावैत नहँ छी । कोनो एक व्यक्ती, महत्वपूर्ण पद पन गोकनी कर्तैत, अपन मानवाक्ता के समक्ष कर्तव्य सँ एतेक दूर बना गिवाय यथाआओ, से कम सँ कम मैथिलि समाज मे असंभव वात ।

तहि ठेठ अहाँ क पुन्यास सुगुन अछि । एहि ई-पत्रिका क सुदीर्घ जीवन मे कैकटा पुनर्जासावी कवि-छेपक मैथिलि के भेटैत अछि । आशा कर्तैत छी जे समाजक उदासीनता नहँत अहाँ एहि अभियान के बढ़वैत नहँ ।

'विदेह' अपन गति सँ नीक जाँ यथा नहँ अछि । एक २५० म अंक कछु वशिष्ट हेवाक याहि ।

शुभाशीष ।

बुद्धिनाथ मसि

देहादून

विदेह "गेपाठक वर्तमान मैथिलि साहित्य" वषिक वशिष्ठांक गकिठवाक गेपान केठक अछि जाक संयोजक श्री दगिस धादव जी नहँ ।

अर वशिष्ठांकमे गेपाठक वर्तमान मैथिलि साहित्य के मूल्यांकन नहँ । अर वशिष्ठांक ठेठ सभ वषिक आठयना-समीक्षा-समावेयना आदि पुनर्जाति अछि । समय-सोमा कछु नै जहिया पूना आठेप आवि जेत नहिये, मुदा पुन्यास नहँ जे एहि साठ मर-जून बनाई वशिष्ठांक आवि जाए । उम्मेद अछि विदेहक ई पुन्यास दूग पायापन एकटा पूठ जून वनाए ।

विदेह द्वारा संयोजित "आमंत्रित नयनापन आमंत्रित आठयक टिप्पणी" संपादक दोस गगक घोषणा कए जा नहँ अछि । दोस गगमे अर वेन गीमायव यौधनी जोक नयना आमंत्रित कए जा नहँ अछि आ गीमायवजीक नयना ओ नयनायनतिपन टिप्पणी कर्ता ठेठ कैवस कुमान मसिनीके आमंत्रित कए जा नहँ छनी । दूग गोटाके औपयानिक सूचना जहिये पडाओ जाए । नयनाकानक नयना ओ आठयक आठयना जयने आवि जाएत ओकर अगाँ अंकमे ई



पुनर्काशी कए जाला।

अइ संप्पठाक पहिठि भाग कामगिणीक नयनापन छथ आ टपिपसीकना मयुकांन हाजी छथ।

जेना की सग गोटा जगै छी जे ब्रिटिह २०१५ मे तीग टा वसिषांक तीग साहित्यकानपन पुनर्काशी केठक जकन मापदंड छथ साठमे दूटा वसिषांक जीवति साहित्यकानक उपन नह। जइमे एकटा ६०- ७० वा ओइसँ वेसी साठक साहित्यकान नह। तँ दोस ४०- ५० साठक (मैथिली साहित्यकान मने जाला आ गेपाठ दूगूक) । ऐ कानमे अनवगिह गकुन ओ जगदीश यंदन गकुन "अगठि" जीपन वसिषांक गकिठियुठ अछा। आगूक वसिषांक कगिकापन हुअए नइ छेए एक मास पहिगसँ पाठकक सुहाव भाँगठ गेठ छथ। पाठकक सुहाव आएठ आ ओइ सुहाव अंगाना ब्रिटिहक कछि अगठि वसिषांक पनमेश्वन कापड़, वीनेगदैन मठकि आ कमठा यौधनी पन नह। हमन सवहक पुन्यास नह जे ई वसिषांक सग २०१७ मे पुनर्काशी हुअए मुदा ई नयनाक उपव्यथापन गनिमन कान। मने नयनाक उपव्यथाक हिसावसँ समए उपन- गयिया गइ सकैए। सग गोटासँ आगूनह जे ओ अपन- अपन नयना जगानेन व्रिटिहयोम पन पड दी।

ब्रिटिह सम्मान

ब्रिटिह समानागन साहित्य अकादेमी सम्मान

ब्रिटिह समानागन साहित्य अकादेमी श्रेष्ठ पुनर्काशी २०१०-११

२०१० श्रुती गोवर्गद ह। (समग्न योगदान छेठ)

२०११ श्रुती नमानगद गेमु (समग्न योगदान छेठ)

ब्रिटिह समानागन साहित्य अकादेमी पुनर्काशी २०११-१२

२०११ मूठ पुनर्काशी- श्रुती जगदीश पुनसाद मम्डठ (गामक जगिगी, कथा संग्रह)

२०११ वाठ साहित्य पुनर्काशी- ठेक मायागाथ ह। (जकन गानी यतुन होइ, कथा संग्रह)

२०११ पुत्रा पुनर्काशी- आगद कुमान ह। (कठक, गटक)

२०१२ अगुवाद पुनर्काशी- श्रुती नामवेयन गकुन- (पद्मानदीक माही, वांग्ठा- मानकि वंद्योपाय्याय, उपन्यास वांग्ठासँ मैथिली अगुवाद)

ब्रिटिह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकठपकि साहित्य अकादेमी पुनर्काशीक रूपमे पुनर्काशी)

ब्रिटिह समानागन साहित्य अकादेमी श्रेष्ठ पुनर्काशी २०१२

२०१२ श्रुती नामगदग ठाठ दास (समग्न योगदान छेठ)

ब्रिटिह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकठपकि साहित्य अकादेमी पुनर्काशीक रूपमे पुनर्काशी)

२०१२ वाठ साहित्य पुनर्काशी - श्रुती जगदीश पुनसाद मम्डठ केँ "ननेगन" वाठ पुनक ब्रिटिह कथा संग्रह

२०१२ मूठ पुनर्काशी - श्रुती नामगद मम्डठ केँ "अमवना" (कवति संग्रह) छेठ

२०१२ पुत्रा पुनर्काशी- श्रुतीमती ज्योति सुनीत यौधनीक "अन्यसि" (कवति संग्रह)

२०१३ अगुवाद पुनर्काशी- श्रुती गनेश कुमान वकिठ "ययागि" (मनागि उपन्यास श्रुती वसिमु सप्यानाम प्याम्डठक)

ब्रिटिह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकठपकि साहित्य अकादेमी पुनर्काशीक रूपमे पुनर्काशी)

२०१३ वाठ साहित्य पुनर्काशी - श्रुतीमती ज्योति सुनीत यौधनी- "देवीजी" (वाठ गविग्न संग्रह) छेठ

२०१३ मूठ पुनर्काशी - श्रुती वेयन गकुन केँ "वेठिक अपमान आ छीनद्वेष्टी" (गटक संग्रह) छेठ

२०१३ पुत्रा पुनर्काशी- श्रुती उमेश मम्डठ केँ "गशिक्की" (कवति संग्रह) छेठ



२०१४ अगुवाए पुनस्का- स्त्री वगिण उपपठे “भोल्लदास” (हिनदी उपन्यास स्त्री उदय पुनकास) क मैथिली अगुवाए ठेठ
वदिए भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानागत साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूठ पुनस्का- स्त्री गनद वगिस नाय (सुपानी पेटी- ठु कथा संग्रह)

२०१४ वाठ पुनस्का- स्त्री जगदीश पुनसाह मम्डठ (गै योपै- वाठ उपन्यास)

२०१४ युवा पुनस्का- स्त्री आशेष अगयगिहान (अगयगिहान आप्य- गाठ संग्रह)

२०१५ अगुवाए पुनस्का- स्त्री शम्भु कुमार सहि (पापुठे - तुकानाम नामा शेटक कोकसी उपन्यासक मैथिली अगुवाए)

गाटक, गीत, संगीत, ग्थ, मूनाकिठ, शिपि आ यतिनकठ क्पेनमे वदिए सम्मान २०१२

अगनिय- मुप्य अगनिय,

सुस्त्री शिपि कुमारी, उम्- १७ पति- स्त्री ठक्षमस ह

स्त्री शोभा कान महो, उम्- १५ पति- स्त्री नामअवतान महो,

हास्य-अगनिय

सुस्त्री पुनयिका कुमारी, उम्- १६, पति- स्त्री वैद्यनाथ साह

स्त्री दुगागंठ गकु, उम्- २३, पति- स्त्र नान गकु

ग्थ

सुस्त्री सुप्या कुमारी, उम्- १६, पति- स्त्री हनेनाम पादव

स्त्री अमीत नान, उम्- १८, पति- गागेश्वर काम

यतिनकठ

स्त्री पनकठ मम्डठ, उमे- ३५, पति- स्त्र सुनद मम्डठ, गाम छपगा

स्त्री नमेश कुमार गानगी, उम्- २३, पति- स्त्री मोती मम्डठ

संगीत (हानमोनयिम)

स्त्री पनमानद गकु, उम्- ३०, पति- स्त्री गथुगी गकु

संगीत (ढेठक)

स्त्री वुठन नाउ, उम्- ४५, पति- स्त्र यष्टि नाउ

संगीत (नसगयौकी)

स्त्री वहादु नाम, उम्- ५५, पति- स्त्र सनपुग नाम

शिपि-वसुकठ

स्त्री जगदीश मठकि, ५० गाम- यनौनागंठ

मूना-मनाकिठ

स्त्री यदुगंठ पंडति, उम्- ४५, पति- अशुश्वि पंडति

कापुड-कठ

स्त्री हनेठी मुपयि, पति स्त्र मंगाठ मुपयि, ५५, गाम- छपगा

कसिनी-आत्मनगिन्म संस्कृति

स्त्री ठछनी दास, उमे- ५०, पति स्त्र स्त्री शमी दास, गाम वेनमा

वदिए मैथिली पनकाति सम्मान

- २०१२ स्त्री गवेगु कुमारी ह

गाटक, गीत, संगीत, ग्थ, मूनाकिठ, शिपि आ यतिनकठ क्पेनमे वदिए सम्मान २०१३



मुप्य अगनिप्र-

(१) सुस्त्री आशा कुमारी सुपुत्री स्त्री नामावतान यादव, उमे- १८, पता- गाम+पोस्ट- यनौनागंज, बाया- नमुनिया, जगि- मयुवनी (वहिन)

(२) मो समसाद आठम सुपुत्री मो ईषा आठम, पता- गाम+पोस्ट- यनौनागंज, बाया- नमुनिया, जगि- मयुवनी (वहिन)

(३) सुस्त्री अपनमा कुमारी सुपुत्री स्त्री मगोण कुमान साहु, जगम गथि- १८-२-१८८८, पता- गाम- उक्ष्मगियाँ, पोस्ट- छजगा, बाया- गनहिया, थागा- चौकही, जगि- मयुवनी (वहिन)

हास्य-अगनिप्र-

(१) स्त्री वृहमदेव पासवान उन्ध नामजानी पासवान सुपुत्री- स्व उक्ष्म पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औनहा, बाया- गनहिया, थागा- चौकही, जगि- मयुवनी (वहिन)

(२) टांसहि आठम सुपुत्री मो मुस्ताक आठम, पता- गाम+पोस्ट- यनौनागंज, बाया- हंहापुन, जगि- मयुवनी (वहिन)

गाटक, गीत, संगीत, गृह्य, भूतकिता, शिषि आ यतिनका क्थेनमे वदिह सम्मान (भांगनिपवास सम्मान योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह नागपुनः

स्त्री नामवृक्ष सह सुपुत्री स्त्री अगनिद्व सहि, उमे- ५६, गाम- शुठवनिया, पोस्ट- वाववनही, जगि- मयुवनी (वहिन)

भांगनिपवास सम्मान: मथिगि ठेक संस्कृति संरक्षकः

स्त्री नाम ठपन साहु पे स्व पुशोठा साहु, उमे- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- नागसाना, अगुमंड- शुठपनास (मयुवनी)

गाटक, गीत, संगीत, गृह्य, भूतकिता, शिषि आ यतिनका क्थेनमे वदिह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

गृह्य -

(१) स्त्री हनिगानास मम्ड सुपुत्री- स्व गन्दी मम्ड, उमे- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजगा, बाया- गनहिया, जगि- मयुवनी (वहिन)

(२) सुस्त्री संगीता कुमारी सुपुत्री स्त्री नामदेव पासवान, उमे- १६, पता- गाम+पोस्ट- यनौनागंज, बाया- हंहापुन, जगि- मयुवनी (वहिन)

यतिनका-

(१) जग पुनकास मम्ड सुपुत्री- स्त्री कुशेश्वरी मम्ड, उमे- ३५, पता- गाम- सगपहा, पोस्ट- वौनहा, बाया- सनायगाढ़, जगि- सुपौठ (वहिन)

(२) स्त्री यगदग कुमान मम्ड सुपुत्री स्त्री मोठा मम्ड, पता- गाम- पड़गापुन, पोस्ट- वेठही, बाया- गनहिया, थागा- चौकही, जगि- मयुवनी (वहिन) संपूर्ण, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कथा एवं शिषि महाविद्यालय- पटना

हनिगियाँ हनिगोनिया

(१) स्त्री महादेव साह सुपुत्री नामदेव साह, उमे- ५८, गाम- वेठहा, वान्ड- गं वंद, पोस्ट- छजगा, बाया- गनहिया, जगि- मयुवनी (वहिन)



(२) श्री जागेश्वर पुनसाद नाउ सुपुन स्व नामस्वरूप नाउ, उमेन ६०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जाधि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

ढेठक डेठक

(१) श्री अगुप सदास सुपुन स्व , पना- गाम- गुठसियाही, पोस्ट- मनोहन पट्टी, थागा- मनौना, जाधि- सुपौठ (वहिन)

(२) श्री कठुन नाम सुपुन स्व पट्टी नाम, उमेन- ५०, गाम- ठकूमनियौ, पोस्ट- छपना, भाया- नमुनया, थागा- वैकही, जाधि- मधुवनी (वहिन)

नसगथौकी ब्राह्म-

(१) ब्राह्मदेव नाम सुपुन स्व अगुप नाम, गाम+पोस्ट- गिन्मथी, ब्राह्म १०७ , जाधि- सुपौठ (वहिन)

शिविनी-वसुधक-

(१) श्री वैकु मठकि सुपुन दनवानी मठकि, उमेन- ७०, गाम- ठकूमनियौ, पोस्ट- छपना, भाया- नमुनया, जाधि- मधुवनी (वहिन)

(२) श्री नाम ब्रिजस धनकि सुपुन स्व गेडास धनकि, उमेन- ४०, पना- गाम+पोस्ट- यनौनागंज, भाया- नमुनया, जाधि- मधुवनी (वहिन)

मुनकि-मनकि क-

(१) धुन पंडति सुपुन- श्री मोठू पंडति, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जाधि- मधुवनी (वहिन)

(२) श्री पुन पंडति सुपुन स्व , पना- गाम+पोस्ट- नमुनया, थागा- वैकही, जाधि- मधुवनी (वहिन)

काष्ठ-क-

(१) श्री जादेव साहु सुपुन शनीयन साहु, उमेन- ३६, गाम- गिन्मथी-पुनवास, जाधि- सुपौठ (वहिन)

(२) श्री योगेन्द्र गकु सुपुन स्व वुद्ध गकु उमेन- ४५, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जाधि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

कसिनी- आनगनिगन संस्कृति-

(१) श्री नाम अनाम नाउ सुपुन स्व सुवध नाउ, उमेन- ६६, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जाधि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

(२) श्री नौशन ब्राह्म सुपुन स्व कपठिस्वर ब्राह्म, उमेन- ३५, गाम+पोस्ट- वनगामा, भाया- नमुनया, थागा- वैकही, जाधि- मधुवनी (वहिन)

अष्टमहारा-

(१) मो जीवध सुपुन मो वठि मलूम, उमेन- ६५, पना- गाम- वसहा, पोस्ट- वडहाना, भाया- अगधनागढ़ी, जाधि- मधुवनी, पनि- ८४७४०९

जोगानि-

श्री वय्यन मसुड सुपुन स्व सीतानाम मसुड, उमेन- ६०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जाधि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

श्री नामदेव गकु सुपुन स्व जागेश्वर गकु, उमेन- ५०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जाधि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

पनाती (पुनगाती) गौनहिन आ पाननी पौननी ब्राह्म-

(१) श्री सुकदेव साक्षी



सुपुत्नी स्त्री ,

पता- गाम इहनी, पोस्ट- वेहरी, बाया- निम्मी, थागा- मनौगा, जाति- सुपौठ (वहिन)

पनाली (पुनर्माती) गौरीहिन - (अग्रहणसँ माघ-श्रावण तक गाओठ जाइत)

(१) सुकदेव साक्षी सुपुत्नी स्व वावूनाथ साक्षी, उमेर- ७५, पता- गाम इहनी, पोस्ट- वेहरी, बाया- निम्मी, थागा- मनौगा, जाति- सुपौठ (वहिन)

(२) ठेठु दास सुपुत्नी स्व सगक मम्हउ पता- गाम+पोस्ट- वेरमा, बाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जाति- मधुवनी पति- ८४७४९० (वहिन)

हनी-

(१) मो गुठ हसन सुपुत्नी अवुठ नसीद मन्हूम, पता- गाम+पोस्ट- वेरमा, बाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जाति- मधुवनी पति- ८४७४९० (वहिन)

(२) मो नहमान साहव सुपुत्नी, उमेर- ५८, गाम- नहिया, बाया- शुभपनास, जाति- मधुवनी (वहिन)

गाठ बादक-

(१) स्त्री जगन नानास मम्हउ सुपुत्नी स्व पुशीठाठ मम्हउ, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककनडोठ, बाया- नहिया, थागा- वैकही, जाति- मधुवनी (वहिन)

(२) स्त्री देव नानास बादक सुपुत्नी स्त्री कुशुमठाठ बादक, पता- गाम- वनहुठ, पोस्ट- अमही, थागा- घोघडोठ, जाति- मधुवनी (वहिन)

गीतहालीछेक गीत-

(१) स्त्रीमती शुद्धनी देवी पत्नी स्त्री नामशुठ मम्हउ, पता- गाम+पोस्ट- वेरमा, बाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जाति- मधुवनी पति- ८४७४९० (वहिन)

(२) सुस्त्री सुवर्णा कुमारी सुपुत्नी स्त्री गंगानाम मम्हउ, उमेर- ९८, पता- गाम- मछरी, पोस्ट- वठियानी, बाया- हंदापुन, जाति- मधुवनी (वहिन)

पुनदक बादक-

(१) स्त्री सोनानाम नाम सुपुत्नी स्व जगठ नाम, उमेर- ६२, पता- गाम- ठक्षमनियाँ, पोस्ट- छपना, बाया- नहिया, थागा- वैकही, जाति- मधुवनी (वहिन)

(२) स्त्री ठक्षमी नाम सुपुत्नी स्व पंथू मोयी, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- वेरमा, बाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जाति- मधुवनी पति- ८४७४९० (वहिन)

कौनगेट-

(१) स्त्री यगद नाम सुपुत्नी- स्व जीतन नाम, उमेर- ५०, पता- गाम- ठक्षमनियाँ, पोस्ट- छपना, बाया- नहिया, थागा- वैकही, जाति- मधुवनी (वहिन)

(२) मो सुमान, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- यनौनागांठ, बाया- नमुनिया, जाति- मधुवनी (वहिन)

वेणू बादक-

(१) स्त्री नाम कुमान महो सुपुत्नी स्व ठक्षमी महो, उमेर- ४५, गाम- निम्मी वानुड नं० ०४, जाति- सुपौठ (वहिन)

(२) स्त्री छुनन नाम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- वनगामा, बाया- नहिया, जाति- मधुवनी (वहिन)

गौत गवैया-

(१) स्त्री जीवछ बादक सुपुत्नी स्व नूपाठाठ बादक, उमेर- ८०, पता- गाम इहनी, पोस्ट- वेहरी, बाया- निम्मी, थागा- मनौगा, जाति- सुपौठ (वहिन)



(२) श्री शम्भु मास्ड सुपुत्र स्व अप्पन मास्ड, पना- गाम- वढियाघाट-१सुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, माया- गिन्मथी, जिठा- सुपौठ (वहिन)

पसिंसक- (पसिसा कहैवठा)-

(१) श्री छुल्लू यादव उन्स गामकुमान, सुपुत्र श्री नाम पेठावन यादव, गाम- घोघनडहि, पोस्ट- मनोहन पट्टी, थाना- मनौगा, जिठा- सुपौठ, पना- ८४७४५२

(२) वैजनाथ मुप्या उन्स टहल मुप्या-

(२) सुपुत्र स्व ढोगार मुप्या,

पना- गाम+पोस्ट- औरहा, माया- गनहिया, थाना- वैकही, जिठा- मधुवनी (वहिन)

मथिथि यतिनका-

(१) सुश्री मथिथि कुमारी सुपुत्र श्री नामदेव पुनसाद मास्ड 'हानूदा' पना- गाम- १सुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, माया- गिन्मथी, जिठा- सुपौठ (वहिन)

(२) श्रीमती वीसा देवी पत्नी श्री दीपि हा, उमे- ३५, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनिया, थाना- हंदापुन (आनएस शिविनि), जिठा- मधुवनी पना- ८४७४९० (वहिन)

पानो पौपनी वादक-

(२) श्री कशिनी दास सुपुत्र स्व गेवैर मास्ड, पना- गाम- १सुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, माया- गिन्मथी, जिठा- सुपौठ (वहिन)

नवठा-

श्री उपेन्द्र यौधनी सुपुत्र स्व महावीर दास, उमे- ५५, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनिया, थाना- हंदापुन (आनएस शिविनि), जिठा- मधुवनी पना- ८४७४९० (वहिन)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व सत्तजीन यादव, उमे- ५०, गाम- हाँहपट्टी, पोस्ट- पीपनाही, माया- छनगियाँ, जिठा- मधुवनी (वहिन)

सांगी- (छुना-मुना)

(१) श्री पंथी शकुन, गाम- पपिनाही

हाथि- (हथिवाह)

(१) श्री कुण्डन कुमार कर्मा सुपुत्र श्री रूद्र कुमार कर्मा पना- गाम- गेवाडी, पोस्ट- यौनामहैठ, थाना- हंदापुन, जिठा- मधुवनी, पना- ८४७४०४

(२) श्री नाम पेठावन नाउ सुपुत्र स्व कैरु नाउ, उमे- ६०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनिया, थाना- हंदापुन (आनएस शिविनि), जिठा- मधुवनी पना- ८४७४९० (वहिन)

वौसनी (वौसनी वादक)

श्री नामयन्त्र पुनसाद मास्ड सुपुत्र श्री होटन मास्ड, उमे- ३०, वौसनीवौसनीवासुनी वज्रै छथा पना- गाम- १सुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, माया- गिन्मथी, जिठा- सुपौठ (वहिन)

श्री व्रिजिना हा सुपुत्र स्व कनटी हा, उमे- ५०, पना- गाम+पोस्ट- कछुवी, माया- नमुनिया, जिठा- मधुवनी (वहिन)

थेक गाथा गाथक

श्री नवनिहा यादव सुपुत्र सीतानाम यादव, पना- गाम- तुठसियाही, पोस्ट- मनोहन पट्टी, थाना- मनौगा, जिठा- सुपौठ (वहिन)



श्री पयिकुन सदाय सुपुन स्र मेथन सदाय, उमेन- ५०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जावि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

मजनि व्रादक (छेकटा हाव)

श्री नामपना मम्ड सुपुन स्र अनपुन मम्ड, पना- गाम- नसुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, माया- निन्मथी, जावि- सुपौठ (वहिन)

मृदंग व्रादक-

(१) श्री कपडिश्वर दास सुपुन स्र सुनन दास, उमेन- ७०, गाम- छक्ष्मनिगिँ, पोस्ट- छपना, माया- नहयि, थागा- वैकही, जावि- मधुवनी (वहिन)

(२) श्री ययन सदाय सुपुन स्र वंग सदाय, उमेन- ६०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जावि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

गानपुना सह माव संगीत

(१) श्री नामवधिस दादव सुपुन स्र दुप्यन दादव, उमेन- ४८, गाम- समिना, पोस्ट- सांगी, माया- घोघडिहा, थागा- शुभपनास, जावि- मधुवनी (वहिन)

ननसा नासा-

श्री जोगेन्द नाम सुपुन स्र विष्ट नाम, उमेन- ५०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जावि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

श्री जोगेन्द नाम सुपुन काडेश्वर नाम, उमेन- ५८, गाम- महौना, पोस्ट- छपना, माया- नहयि, जावि- मधुवनी (वहिन)

नमहाविक्रदाविक्रनाथ व्रादक-

श्री सैनी नाम सुपुन स्र ठगि नाम, उमेन- ५०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जावि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

श्री जगन् मम्ड सुपुन स्र उयति मम्ड, उमेन- ६०, नमहाविक्रदाविक्रनाथ व्रादक, १८७५ ईस नमहाविक्रनाथ छथि पना- गाम- वडियाघाट-नसुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, माया- निन्मथी, जावि- सुपौठ (वहिन)

गुमगुमियाँ गुनम वाजा

श्री पनमेश्वर मम्ड सुपुन स्र वहिनी मम्ड उमेन- ४९, १८८० ईस गुमगुमियाँ वाजा छथि

श्री जुगाय साँखी सुपुन स्र श्री श्रीयन्द साँखी, उमेन- ७५, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जावि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

डंका डेठ व्रादक

श्री वदनी नाम, उमेन- ५५, पना- गाम इहनी, पोस्ट- वेठही, माया- निन्मथी, थागा- मनौना, जावि- सुपौठ (वहिन)

श्री जोगेन्द नाम सुपुन स्र विष्ट नाम, उमेन- ५५, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जावि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

डंका (हेथिमे वजाओठ जाइ)

श्री जगन्नाथ यौधनी उन्ध यथिनी दास सुपुन स्र महावीर दास, उमेन- ६५, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जावि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

श्री महेन्द पोद्दा, उमेन- ६५, पना- गाम+पोस्ट- यनौनागां, माया- नमुनया, जावि- मधुवनी (वहिन)

गडना डगिनी-



श्री १११ पुनसाह १११ सुपुन सुव सन्ध्या मोथी, उमे- ५२, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- लुमयि, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनी), जाति- मधुवनी पति- ८४७४१० (वहिन)

वर्द्धक कछि वरिषांक:-

१) हाइकू वरिषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

वर्द्धक १५ ०६ २००८ पद ७ वर्द्धक १५ ०६ २००८ थिनिहा पद ७ १२५६७

२) गजप वरिषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

वर्द्धक ०१ ११ २००८ पद ७ वर्द्धक ०१ ११ २००८ थिनिहा पद ७ २१५६७

३) वरिषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

वर्द्धक ०१ १० २०१० वर्द्धक ०१ १० २०१० थिनिहा ६७

४) वाठ साहित्य वरिषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

वर्द्धक १५ ११ २०१० वर्द्धक १५ ११ २०१० थिनिहा ७०

५) गटक वरिषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर २०१०

वर्द्धक १५ १२ २०१० वर्द्धक १५ १२ २०१० थिनिहा ७२

६) गानी वरिषांक ७७ म अंक ०१ मार्च २०११

वर्द्धक ०१ ०३ २०११ वर्द्धक ०१ ०३ २०११ थिनिहा ७७

७) वाठ गजप वरिषांक वर्द्धक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

वर्द्धक ०१ ०८ २०१२ वर्द्धक ०१ ०८ २०१२ थिनिहा १११

८) गक गजप वरिषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

वर्द्धक १५ ०३ २०१३ वर्द्धक १५ ०३ २०१३ थिनिहा १२६

९) गजप आठयना-समाठयना-समीक्षा वरिषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

वर्द्धक १५ ११ २०१३ वर्द्धक १५ ११ २०१३ थिनिहा १४२

१०) काशीकांग मसिन मधुप वरिषांक १६८ म अंक १ जून २०१५

वर्द्धक ०१ ०१ २०१५

११) अग्रगिह गकुल वरिषांक १८८ म अंक १ नवम्बर २०१५

वर्द्धक ०१ ११ २०१५

१२) गजपिथ यगुल गकुल अगठि वरिषांक १८९ म अंक १ दिसम्बर २०१५

वर्द्धक ०१ १२ २०१५

१३) वर्द्धक सम्मान वरिषांक- २०० म अंक १५ अप्रैल २०१६ २०५ म अंक १ जुलाई २०१६

वर्द्धक १५ ०४ २०१६

वर्द्धक ०१ ०७ २०१६

१४) मैथिली सीडी अठवम गीत संगीत वरिषांक- २१७ म अंक ०१ जून २०१७

वर्द्धक ०१ ०१ २०१७



छेपकसं आभंति १५गाप १५गाप आभंति आभेयकक टपिपामीक संप्य

१ कामनीक पांय टा कवति आ ओरप १५गाप हाक टपिपामी

वस्यएअ २०८१६ सिसु वरिहक दू सए गौम अंक

वरिह ०१ ०८ २०१६

वरिह ६-पत्रिका वीछ १५गाप संग- मैथिलीक सन्वत् २०८१ १५गाप एकटा समागान् १५गाप संकथ

वरिह ६-२ (मैथिली पुनवन्ध-गविन्ध-समाधेयगा २००८-१०)

वरिह ६-३ (मैथिली पद २००८-१०)

वरिह ६-४ (मैथिली कथा २००८-१०)

वरिह मैथिली वरिह कथा [वरिह ६-५]

वरिह मैथिली वरिह कथा [वरिह ६-६]

वरिह मैथिली पद [वरिह ६-७]

वरिह मैथिली गाय अन्त [वरिह ६-८]

वरिह मैथिली शक्ति अन्त [वरिह ६-९]

वरिह मैथिली पुनवन्ध-गविन्ध-समाधेयगा [वरिह ६-१०]

थे गेदेसोड एगठसिह नानसठागिसोड मातिहविमोवे "साहासनावाहना" गेदेसोड योथेयगानि

"साहासनावदिक युहापान पान" हास गिगामोड नाना नहे एगठसिह नानसठागिसोड हास गौम वेग ।वठे गो गमासप नहे गुनयेसोड गेगामोड मातिहवि थहेगेडे नहे आलेसोड हास सगामोड नानसठागिसोड हास मातिहविगौमस गि एगठसिह हमिसोड अडेन नहेसोड नानसठागिसोड ।ये योमपठे नहेसोड गेदे वे नहेगेडयिगि नानसठागिसोड ।नहेसोड वस नहे आलेसोड गेगामोड गौमस एगठसिह

मातिहवि गौमस याग वे दौगठेदेड डोम:

हापसःसितिसोडयोमावदिकयोमवरिह-पोन

मातिहवि गौमस याग वे पुनयहासेड डोम:

हापसःमाधेयग

गेदे नहे डनिसा नमि मातिहवि गौमस याग वे गेदेन कनिहवे - गेदेनस गुप्प मातिहवि गौमस गि पनिहवे डोमग

(युनोसप वरिह) डोम ।माधेय कनिहवे सगोस, नहेसोड गौमस ।ये देववेदेगौमदौदौगिठेससथ:-

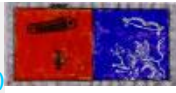
हापसःमाधेयग

अपन भान्ध गगागेदेनवरिहयोम पन पडाउ



गगागेदेनसकु

गगागेदेनवरिहयोम



२३६५

२१७७६१३ पुनसाह माहउठक यागटि ठु कथा

२२१७६१३ गागायस मसिअक यागटि आठेप

२३५१११३ ह- "यकूशंस (मैथिली पत्रिका) "

२४७७६१३ कुमाय सगिह- "माया" (वीहक कथा)

श्री ७७६१३ पुनसाह माहउठक यागटि ठु कथा-

जेकन युन तेकन पुन

सेमी गौनमेगटक सहयोगसँ साहित्यिक कान्यकूमक आयोजन भेल। सेमी गौनमेगटक माने भेल जे नसियति नकमक रूपमे सनकानी सहयोग भेटल आ जग सहयोग सेहो भेल। ओना, जग सहयोगक जेतोक आशा कएल गेल छल तऽ नूपे सहयोग नहि भेटल, माने ई जे पनवानक जगसंय्याक हसिअसँ सहयोगक आशा कएल गेल छल से नर भेटल। ई कहव जे जगमे सहयोगक व्रियानक अभाव भऽ गेल अछि से वात नहि, अपनो लोकक व्रियानमे एहेन यागसा वगैरे अछि जे जावे जगक सहयोग नहि हएत तावे समाजक काज नर यत। आ जँ समाजक काज नर यत तँ समाजक पहचान की वगैत। आ जँ समाजक पहचान नर भेल तप्यन समाज केहेन अछि आ ओर समाजक सामान्य जग केहेन अछि, से केना बुझव सहयोगक यागसा नहिगी सामान्य जगक सहयोग कम भेल। ओना एकना असहयोगक दृष्टिसँ नहि दृष्टि जल सकैत। असहयोग भेल, बुझि कऽ सहयोग नर कनवा मुदा से नहि, साहित्यिक कान्यकूमक महकँ कम बुझगिहल नहने, आर्थिक सहयोग कम भेल तँ ई कहव जे कान्यकूममे कमी भेल सेहो नहि, कएक तँ गाम-गाममे यनपिहिया ब्राह्म, डिकेदान आ नंग-नंगक एजेगट सवहक वहवानिसँ गोक सहयोग भेटल। सेमी कान्यकूम नहने सनकानी वेवस्था एते छल जे गामक यौकीदानकँ सुनकषाक गान भेटल आ जगसेवकक माय्यमसँ सहयोग नासि भेटल। यौकीदान आ जगसेवक दुनू गामक नहने कान्यकूमक कर्मठिक समक्ष अपन-अपन हाजनी पुन छुट्टी छैन वाजल-

“हमहँ तँ गौए छी, तँ ए जँ जगनी हुअए तँ जग कऽ छेवा कए ते सनकाने ते हमहि ने कैश्चित देवऽ मुदा गौआँ होरक गाते एते जगन सन गौनमे नाप्य जे अगौआँ पीहकानी दऽ कऽ ने जाल। जगने पीहकानी पडत तप्यने हम ओहनीमे पडि जालव, तँ ए एते हमनो गविदन अछि।”



कात्यक्कनमक पुनयाय माय्पम गीक नहो गीकक कामस भेठ जे पुनयाय गीक सुत्रिया वढे वेकगीगान नूपे सेहे सम्पन्क होरो अछि गौआँक एकेटा मंसा जे गीक कात्यक्कनम हुअए गीक कात्यक्कनमक भागे भेठ गीक गुटानगि कनव आ गीक मनोगनगो कनव।

नाघव दधिसेँ गाम आए छथ, कुमान वसिवासक मंय ओ देय्पने, तँए मने अपनो जगिआसा नहवे कनव जे ओहने कात्यक्कनमक आयोण हुअए पुनयाय कनैक जाम नाघव उठा छेठका मन टोवैक नसता वुहछे छस जे जेहेन मनक ठोक हुनका ओहने वाग कहि-कहि हड-टुट्टा, टंगा-टुट्टासँ ठस कस कगाह-वहीन चर्कि गुटानी गीक कनवे केठका समय सुग्गसुग भेगे आयोणमे कोनो वाया उपस्यति नहियँ भेठ। प्यार-पियेसँ ठस कस नहै-सहैक सेहे गीक वेवस्था भेठ।

कात्यक्कनम सुनू होइसँ आया घन्टा पहिनेसँ मंयपन साहित्यिकान, पत्रिकान, नेडियो स्टेसनक कठकान आ जमैप्रा गीतकान-संगीतकानक आगमन हुअ छथ। अचकिास ठोकक संग अपन-अपन दूटा-यागिटा मुँह छुआ नहति अछि गुनप वना सन वैसवो केठ आ अपन-अपन मुँह-छुआक संग सुसनाहैट सेहे कनैये छथ।

असजने नायेस्याम काका वीयमे वैसठ यानू दसि तँकै नहैथ जे कनिकोसँ हमहूँ गप कनी। मुदा गपोक तँ काग्हि होइ छै, सान होइ छै से काग्हि भिये ने कनैग। तहूमे मने ईहे नहवे कनैग जे गंभीर साहित्यिकान सवहक गुटानी छी तँए जँ मंयपन गंभीरना नर वनव सेहे केहेन हए। ओना, युपा-युपी नर छथ मुदा गुप-युपी नर छथ सेहे नहियँ कहथ जा सकैए। से तँ छेछेहे नेडियो स्टेसनक वदू गाय सेहे नहैथ। मुदा ओ अपन ड्यूटीमे नहैथ तँए नायेस्याम काकासँ कनी हठ नहैथ। दू गोमे ने कनी दूनसोसँ गप कएथ जा सकैए मुदा जौगम छानाक मधुमाछी जाकाँ सौसे मंयपन मन-मनी यथ नहथ अछि, तौगम कम्स आनि वागथे तँ नहियँ जा सकैए। ओना, वीयमे ईहे होइथ अछि जे जेमहन आँप-कान नहथ ओमहुनका कनी सुनिकोक वाग सुनियँ सकै छी आ देय्यियँ सकै छी। मुदा छथे ईहे होनि जे गंभीरनोक तँ अपन-अपन ब्रियान होइए। जप्पन साहित्यिक कात्यक्कनमे आए छी जप्पन तँ ओर ब्रियानक गमिनजना कनए ने पड़। मुदा तैवीय एकटा पुनश्न तँ उडिये जाइ जे जप्पन कात्यक्कनमक गयिम पुनवक घोषणा हए जप्पन ने जे जेहेन छी से तेहेन गंभीरना पुनश्नति कनव। नर वीय भागे कात्यक्कनम सुनू होइसँ पहिने, तँ सन सामाग्य जग छी भागे मग्य होइक गाते मग्य छी, मग्यक वीय वैसठ छी जप्पन जँ कुसठो-समायाय नर हुअए सेहे केहेन हए।

ओना, वीय-वीयमे नायेस्याम काका ईहे जानू देय्यवे कनैथ जे पुदना-पुदनी नव आगन्तुक सन जप्पन मंयपन अवै छैथ तँ आँपयिक रशानासँ पुनामाम-पागी, कुसठ-छेम सन काइये उर छैग, संगे ईहे गजैपन एवे कनैग जे कयि-कयि अपन दूग हाथ उठा रशानामे कछि कहति छेथपनि।

वदूओ गाय अपन संगी-साथीक वीय गप-सप कनि छथ, की गप कनै छथ से तँ ओ जानैथ, मुदा मुँहक नूपसिँ जानू वुहपिडै छथ जे पयिडी गोठ जाकाँ अपन पयिडी कात्यक्कनमक योणना गनसिक वना नहथ अछि तँए कयनो-कयनो जप्पन-जप्पन ओनववठ मजियारक हाँस औ छेछेन तँ मुँह वदिक जाइ छेछेन आ जप्पन-जप्पन धीक टाँस औ छेछेन जप्पन-जप्पन मुँह कछैस जाइ जाइना। नायेस्याम काकाकेँ नर नहथ जेठैना। आँप उठा वदू गायपन ई सोयि अँटकौठेन जे वदू गाय यानू कोस हहिनकोसा प्पेठारवठ शकिनी छथिये, जानू गजै उठा तके कनवा। जप्पन गजै-मे-गजै मयि जप्पन गजैयिसँ कहवै जे कनी अहूँ आगु घुसकु, अपन संगीकेँ छोड़िससू आ कनी हमहूँ ससै जाइ छी। जप्पन दूग गोमे एक काग्हिक छी जप्पन जँ दूगम नहव तँ दूगियाकेँ गीक जाकाँ थोडे देय्य पएव।



आँपयिक रशानासँ नायेस्याम काका वज्ज-
 “ह्माडा गे दन, युग नमाकुठ कएि वग्ग”
 प्पग ज्ञानए प्पगक वोठ, वदू माय आँपयिक रशानासँ ज्ञाव दैठकै-
 “शुशुशु-शुशुशु”
 माने ई जे अहूँ कनी एक गाग गज जाउ आ हमहूँ गज जाइ छी। एकदम होशो नमाकुठो प्पाएव आ मंयक-हुनयिँक-पेठो
 दैप्यव।
 नायेस्याम काका सेहो वीयसँ घुसकै-घुसकै एक गाग भेठा आ वदू माय सेहो वदू। एकदम होशो हुनू गोने हाथ
 मथिपर ठाठा। हाथ मथिपेसँ पहिने वदू माय वज्ज-
 “यूने नमाकुठपन तँ ऐ हुनयिँक पेठ यथैए, नप्पन जाँ हुनू गोने युपे नहव से नीक भेठा”
 ओना वदू मायकेँ नायेस्याम काका भोतनसँ ज्ञानि छैथ जे वदू माय अठकानकि ठोक छैथ तँए हटहा शेकैक ठूनी
 हमनासँ वेसी छैने, मुदा कहि छैथ तँ छैथ, छयि तँ संगीए। जाँ संगीक व्रियाने नइ वुहव नप्पन संगपना केतोकाठ यथा।
 ओना, वदू मायमे ईहे गुप्त छैथ जे कोनो वात वज्ज पछाइन सुनगहिनक मुँह वदिकै दैप्य वुहूँ जाइ छैथ जे नानसिक हमन
 व्रियानक नस नीक जाँ नहि पीव सकथा। मुदा केतो पीठेन आक नइ पीठेन, अइते तँ तीन ठामक ज्ञानी थनानोटीक
 ज्ञान अछा।
 नायेस्याम कक्काक मुँह तेहने सग वदिकै दैप्य वदू माय वज्ज-
 “नमसँ नमाकुठ भेठा आ यनसँ युग भेठा”
 वदू मायक मनक वात जेना नायेस्याम काका वुहूँ जेठा नहिना वज्ज-
 “अहूँक वुहूँवैठ वुहूँहिनोटा वुहूँ सकेँ छैथ। हमना सग ठोक-ठे ते जीत आ छन्द सुटा कइ कहव नप्पने वुहूँ सकेँ छी।”
 नायेस्याम कक्काक व्रियानकेँ, ज्ञानि हन्डी-मकनक भेठामे व्रियान-पुताक हाथसँ न्होनेमे सागठ अनवा याउनीक नोटी
 आ अठठ-कोवीक नानकानी ठइ कइ कौआ उड़ि जाइ आ व्रियान-पुता अपन अहान छनिन वेवहानपन गजैत नहि दै प्पेठैना
 जाँ यथिनेकिँ दैप्यवो आ हंसवो कनैत नहैए नहिना वदू माय नायेस्याम कक्काक मुँहक वोठ ठुहैए वज्ज-
 “जीत तँ संगीत छी जे ठयक संग यथैए। ठय असोमति अछा। मुदा छन्द मायावद्य होइए जे व्रियान-अंकनकेँ पकैड
 अपन सनिजान कनैए”
 ओना वदू मायकेँ जेना ज्ञानपन नहैए नहिना नानना कइ तेना वज्ज जे नायेस्याम काका थकमकाए ठाठा।
 थकमकाइक कानस भेठेन काका अपने छैथ तँ गदयकान मुदा साहित्यिक कान्यकनम हुआने गोटी-पंगना ठ्यातमक कवति।
 सेहो ठ्याति ठइ छैथ मुदा ने छन्द नटने छैथ आ ने मातानक ठेकाग ठीकसँ वुहूँ पवै छथि।
 नायेस्याम काकाकेँ ठकुआन मन दैप्य वदू माय वुहूँ जेठा जे ज्ञानि सोहमनयि नसना यथगहिन नायेस्याम छैथ
 नहिना सोहमनयि सेहो छथि। तँए जप-सपपकेँ आगू नहि ठेठ वदू माय पाशा पठै वज्ज-
 “नप्पन एकदम वैसठ छी नप्पन पहिने नमाकुठ प्पाउ। वुहूँ तँ छी जे जे नाना-कठेठा हए से हेवे कान। नइते
 अपनाकेँ अगोन-व्रियानेन वनैने नहव सेहो नीक नहि।”



ओना वपौक कृममे वदू गाय वागिगेठा मुदा ठाये यानू गाग गपौन पडिवए ठाठा पो तमाकुठ प्याएव कनिको
अथठा तँ ने ठाठैना गपौन पडिवतो वुहपिडैव पो केतो गोनेकँ इच्छा गऽ नहए छैना मुदा तप्यन अपन तमाकुठक उविवीपन
गपौन गेठैन तप्यन मन पडैव पो तमाकुठ तँ उविवीमे ऐछे नहि, अछा तँ मात्न युगेटा! पाछू मनकँ उमेठो गक प्युगैव पो
तप्यन दुनू संगीक वीय 'श्चिश्चि-श्चिश्चि'क सम्वन्ध अछा तप्यन पनवाहे की। ओना नायेस्याम कक्काक मन वदू गार्क
गनिगीपन छैव नहए छैव, तँ तमाकुठपन सँ गपौन हटिगेठ छैव। तैवीय अपन हसिंसा वढवैत वदू गाय वजठा-

“तमाकुठ अहाँक भेठ, युग आ युगौनाइ हमन भेठ, हौउ आव देनी नइ कनू।”

वदू गार्क मुहसँ तमाकुठ नकिँठो नायेस्याम काका पोविसँ तमाकुठक उविवी नकिँठो वदू गाय दसि वढवैत वजठा-

“नमिमन तमाकुठ अछा सुदय सयैसा, तँ गीक जाँ युग पआएव।”

नायेस्याम कक्काक मुहसँ तमाकुठक वडाइ सुनि वदू गायकँ पोना मनमे कयोठ भेठैना कयोठ ई भेठैव पो ननिदिनि तँ
सकनी कट तमाकुठ प्यावठा छी। तप्यन मुदा ब्रियानकँ मोड़ैत वजठा-

“नस्रोमे तमाकुठ सगिगेठ, केतौ कीमेक गडे ने ठाठा आव सोयै छी पो तप्यन पान यठत तप्यन ओहि जठिमे सँ एक
पुड़िया तमाकुठ ठऽ ठेवा।”

पोना-पोना वदू गाय एक हाथक तनहथीपन दोसन हाथक औठा गडैत नहैथ तेना-तेना मनमे गंग-गंगक ब्रियान
सेहे उअ ठाठैना टीपगन तमाकुठ नहने मुँहमे दशो दुनू गोनेक मनकँ नसवर ठाठैना। तहि वीय पानकि संग याहक कप
मंयपन पहुँच गेठा याहक कप देप वदू गाय मने-मन अपन मेड़िया दसि वढैक ब्रियान केठैना पो नायेस्याम काका वुहगिठा।
वुहगि वजठा-

“अप्यन याहे आएठ अछा, पान पछुआएठे अछा तप्यन एना कछ-मछ किए कनै छी।”

अपन आँट-पेट वुहैत वदू गाय गुमे नहवा। मुदा मनमे ई कछमछी नहवे कनैव पो सीमाबंधन गऽ जाएत।

घोषति समैयक हसिावसँ पननह मनिट वठिन गऽ नहए अछा, मुदा अप्यन तक ओतवे ठेक पहुँचै छैथ पोतो
सुनौगहिन छथनि। माने कनै छैथ। सुनौगहिन गौआँ-समात अप्यन एके-दुसरे आवयि नहवा अछा ओना मैकपन वेन-वेन
घोषमा होश छठ पो आव कात्यकृम सुनू गऽ नहए अछा, तँ समातसँ आगनह गऽ नहए अछा पो प्रथाशीघ्र सगा स्थठमे
पहुँच अपन आसन गुनहम कए छी। मुदा वहनिा कतेक वीय जाँ मंत्नक कोनो सुनवाइ होशो ने छठ। ओना कछि गौआँक
मनमे एहन ब्रियान नहवे कनैव पो वाहनक ब्रिद्वतपन आएठ छैथ तँ संग पूनव अगवित्ये नहि उयति छी। मुदा से कम ठेक
छठ। तनिकन एहन ब्रियान छैव। वेसी ओहन छैथ तनिकन सोयव छैन- जाकी नहे गावना पौसी, पुनू मुनन देपि तनि
तौसी; ओहन ठेक अपन-अपन तनिकीक छप अपना-अपना ढंगासँ पुनवैक पाछू वेहाठ छैथ। तसँ कनै आ कवतिासँ मेठ ने
प्याइ छैव।

आधा घन्टा वठिन होश-होश छोट सगा-जोकन दन्सक-शुनोना पहुँच गेठा। कात्यकृम सुनू मेठ। मंय सजए ठाठा
मानठ-जानठ साहतिप्रका तनिकीक मंय सजए ठाठा। ओना वदू गाय अपन नित्यानति स्थानपन पहुँच गेठ छठ। मुदा
नायेस्याम काका पछुआएठ नहैथ। संजोग मेठ नायेस्याम काका सेहे पहठिका जगह वढैठ मंयपन पहुँचठ। ओना अपनो मन
नहैव पो एहन प्यिडी मंयसँ अयागे-यटनी वनि अपन मत्प्रादा वना तप्यव नीका सए मेवो केठैना। पहठि प्यिडीक अन्तमि
छोनपन नायेस्याम काका वैसौठ गेठा। वसति मनमे पुसी हवैक उठैव पो गने नीक मेठ। तमाकुठक थुको श्चैमे असाग हएत।



आ वैसायक एकटा छोनपन वैसने आग साँप जाकाँ तँ गहि मुदा गगगुआनकि दोस नुँहथै न जाकाँ तँ मेवे कएल गाय, सग अपन व्रियायक माथकि छी, एकगम वैस व्रियाय कनू!

अपना जगहपन वैसथ वदू गाय नायेस्याम काकापन आँपि गिड़ीने नैथि जप्पन अपना दसि नकैथ तँ वुह पडैने जे समुयति जगहपन छी, मुदा नायेस्याम काका-ठे अनुयति जून मेथ छैना हम तँ गोकनियि ठेक छी, डूटीमे छी, अपन गुल्ल याहे जे हुअर मुदा अप्पन तँ हमना एकटा उगनायकानीक रूप गमिहैक अछि

यानू कोल घुमैवठा वदू गारक गौन, तँ समहौना कनैत मार्ग गिछैने जे जप्पन पयिडीए कान्यकनम छी जप्पन आङि-धूनक ठेकाने कोन!

जेना गामक पहिठि साहित्यिक आयोजन मेथ तेना जमठ वढियाँ वढियाँ जमैक आग कानम जे मेथ हुअर मुदा एकटा पुनमुप कानम ईहे मेथ जे काश्मीनसँ कन्याकुमारीक मेथी यानक कानक गक्ससँ ठऽ कऽ अगानठवा यनमि नहगहिना- माने ओइस गोकनी रूपमे काज केगहिनाक-समाज गाम वगारि जेथ अछि सगकँ कछि गवका व्रियाय नपैक इच्छा होइते छै तँ एक कवकि काव्यक पछाश पयासो गंगक साधनी आ दोहा, पयासो गायक मंथपन श्रोगा-वक्ता दसिसँ हउए ठाठा अढार घन्टा केना गुणैने जेथ से गे कवि-साहित्यिक नुहथैने आ गे श्रोगा अगमि पाठ दीनागाथ वावाक मेथैने थुठ-थुठ वुठ दीनागाथ वावा, तँ यानि गोगे मठिकऽ हुनका अनाम कुत्सीपन वैसौठकैना गोलुका गढियाँ जाकाँ सवहक गीग टुटठे छठ, व्रियाय गनहम कनैठे सग एकागन छेठहे, तँ सग एकदम शागन मेथ

शागन सगा दैप दीनागाथ वावा अपन पहिठि आशीनवयन जाकाँ वजठा-

“ई कवतिगि पयास वन्य पूनव नयने छेवौ”

“पयास वन्य पूनव” सुनि सगामे गुदगुदी सुनू मेथ मंथपन वैसथ दीनागाथ वावा अकानए ठाठा जे केहेन पुनकिनियि गऽ नहठ अछि मुदा समाजक तँ थाह नहयि अछि जे पयास वन्य पूनव सुनि कोन हँसो हँसो नहठ अछि पयास वन्य पूनवक समाजक एना आपुक समाजक ठेठ केते उपयुक्त अछि गुदगुदीक संग गगनगी सुनू मेथ-

“पयास वन्यक वीय कछि नयने गे केछैने जे हाठ वद्वैने समाजक हाठ-याठ सुनैवौथ!”

“पयास वन्य पूनव कवतिगि कनै छठ आ पछाश छोड़िद्वैने!”

हन्ध-वस्त्रिमयसँ सग गगनगाइते छठ कनिहि वीय मंथ संयाठक आदेश छोड़िद्वैने-

“आव अहाँ सव अपन-अपन गगनगी वग्न कऽ सुनै जाउ”

खेन मंथ संयाठक महोदय आदेश पुनसायि केछैने-

“वग्नगुल्ल! एकागन गऽ वावाक आशीनवयन सुनू”

ओगा, वावाक कवतिगि पाठक नाओ सुनि कछि गोगे साकांय जून मेथ, मुदा कछि गोगे वीय गुदगुदी यथे नहठ छठ गुदगुदीक कानम छठ पयास वन्य पूनवक कवतिगि पयास वन्य पूनवक कवतिगि वीय पयास वन्यक समैयक अगनाठ गऽ जेथ दोस नुँह जे जे वेकनी एकवेन-दूवेन सुनने हेना हुनका की मेथौना ओगा, कोनो कवतिगि नसासवादन एको वेने सुनने होइ आ दसो वेन सुनने गऽ होइ गाय, एकन कानम स्पष्ट अछि स्पष्ट ई अछि जे कयि जाँ नामायसकँ अपन आयनासक अगुठ वना पढै छैथ तँ हुनका आगक पाठक पगना होइ छैने, पैछठ तँ जनिगीक पैछठ पगना मेथ जे



शहिस बा भूत भेठ जूनानाँ वनमान आ भवसिक अछा मुदा जे सोहे-माणे वनि आयनाम ननिमौने-पाठ कने छैथ हुनका दस बेर कपो दसो जुगो पाठ केने नस नर भेटौने।

एक भागमे वैसठ नाथेसुयाम काका आ दोसरा भागमे वैसठ वदू भाय सभा दसि गऐन दौगा-दौगा देप-देप ऐ ननिमप्रपन आवाँ अँटेक जायि जे जपन पयिड़ीए कायप्रक्रम भेठ जपन तँ सभ कछि ने पयिड़ीए हएना प्याए, प्योन भँ नर हुअए, कए तँ ओ एकयथिया मागे एक गुल्ल-सोभावक वस्तुक समावेश छी, मुदा पयिड़ी तँ से छी नहि ओ तँ नोनगो होए आ मोठगो होए अछा भँ जाल-सोभाव भेने नोन अपन नाओ छपि पयिड़ीए कहए आ मोठ अपन नाओ प्योए गुड़ पयिड़ी कए ने कहए ओना, घोक पुनवेश नोन पयिड़ीए-मे प्योए, गुड़ पयिड़ीमे नहि, मुदा ओहो अपन नाओ अँटेक घी-पयिड़ी तँ कहैए।

आँपकिँ डेढ़िया कएन वदू भाय नाथेसुयाम काकाकँ इशानामे पुछकँ-

“नीक छौए की नहि?”

जहिना आँपकिँ इशानामे वदू भाय नाथेसुयाम काकाकँ पुछकँ नहिना नाथेसुयामो काका इशानामे जवाव देथपनि-

“जेहने अहाँ तेहने ने हमहँ”

ओना हुन गोजे दीनगाथ वावाक कवति सुनिभने-मन अपने-आपने नमए ठावा ओना हुनक नमैक अपन-अपन कानाम छेठेना जेठियो सुटेशनसँ पुनसागि कवति छेठे तँ वदू भाय भने-मन प्योहाइ नहैथ जे भूतक संग हमहँ भूतआ नहथ छी। मुदा नाथेसुयाम ककाक नमकीक कानाम नहैथ जे जपन नर समाजमे पुनवेश पेठै जपन ओइ समाजकँ केना साहित्य समाजमे पुनवेश कनाएव, तेहने ने कवतिक पाठ होइ।

इहकाक वीय मंय वसिनुज भेठ मंय वसिनुज होइ नाथेसुयामो काका सहैठ कऽ वदू भाय दसि वदू आ वदूओ भाय नाथेसुयाम काका दसि सहैठ आगू वदू आगू वदूति वदू भाय वज्ज-

“भाय सहैव, जीना जनिगी अहिना होइ छः”

ओना, वदू भाय नाथेसुयाम काकाकँ अयप्रपन कएन वाज छव। अयप्रपन ई जे शीष पाठ जेहने हेवा याहि से नर भेठ। मुदा एतेक प्युशी तँ मनमे उठे छेठे जे नर समाजक छेठ नर काय भेठ तँ नम्र भेवे कए नाथेसुयाम काका वज्ज-

“जाए दियो जेते जे भेठ से भेठ, नमाकुठ प्याउ आ अहँ वदि होउ”

जेवीसँ नमाकुठक पुड़िया नकिठि वदू भाय वज्ज-

“संयाधन समीति यनी नीक वनठ छव। अति, जीवनी प्येगिनीक कीनठ पुड़िया छी”

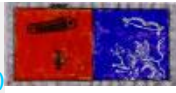
मुसुकी दैन नाथेसुयाम काका वज्ज-

“एक बेर अहाँक युग छठ आ हमन नमाकुठ, मुदा एवेन हमन युग नहए कए तँ अहाँक नमाकुठ योनुका छी”

वज्जना ओक वदू भाय, वज्ज-

“जेते नमाकुठक पुड़िया छठ नर हिसावे प्येगिनीक कम छेठ, तँ वनवानीक समाज छेठे जेते, नरसँ नीक ने जे ओकन उपयोग नऽ जेठ”

युनौटी नकिठि वदू भायक हाथमे दैन नाथेसुयाम काका वज्ज-



“नीक लागै कनि?”

‘नीक लागै’ सुनि वदू मायकें जेना वढिनी काटि गेने हेनि गहिना छटपटाइ वज्जि-

“पहिलि कलति का पाठ जे भेटि गयने मग ओकयि जेठ, से केनवो आसन मानी मुदा ओकयिएव कमे ने भेटि अग्न
नक वगैरे नहै।”

पहिलि पाठ गवतुनयि कलति नाकागतक भेटि छै। नाकागत वहुनाष्ट्रीय कम्पनीमे जीवकोपान्जन कनै छैथ। मुदा
कलति गामक उपनगर-उपनगर जीवकोपान्जन केनहिनाक जगिगीसँ सम्बन्धयति छै। शब्द वगिनास नीक नहैना। नायेस्यामक
काका नाकागतक जगिगीकें ओर डंगसँ गहि दियने, तँ मायक वगिनामे मावावेस भऽ जेठ छै। प्यास कऽ गामक उपनगर-
उपनगर जगिगीक यन्त्र सुनि ओना, ई वान जतून नायेस्याम कक्काक मगमे डहकै छैथेन जे अपनयिनि कलकि नयना जकाँ
कलति अछि, मुदा गवतुनयि नयनाकान नहने मगमे आशा नहने कनैने जे आगू नीक कलति कनना। वज्जि-

“कए सुनैने जे ओकयि जेठ?”

‘कए’ सुनि वदू माय यानूकान गजैत पडिथेन तँ वुह पडिथेन जे अपन नीक जकाँ कायकनम वगिनास नऽ भेटि
अछि, यानूकान सग छडिआए छैथ। वज्जि-

“माय साहैव, हम ते वगहैत जगिगीक जाठमे पडि छी, नयन मुँह केना पुज्जि नहै! आर एते नहै दियौ।”

जेठमे नमाकुठ छै नायेस्याम काका वज्जि-

“भेट-घाँट होश नहै।”

वदू माय वज्जि-

“मग नहिनी मगमनु वगछ छी। जँ जीवैत नहै ते भेट हवे कनै।”

○

शब्द संप्रदाय: रद्वर्द्ध, तिथि: १८ जुलाई २०१७

भूतभूत आकर्मसिद्धि

जेठ मास पाँच वजे वेनुका समझा मधुवनीसँ अवति नहि किगामक काठमे नेवुआवावि भौजी भेटि। वसिष्ठै हट जाइ
छै। सोम आ शुक्ल दिकें हट गौए आर शुक्ल छी। भेटो वज्जि-

“कनी साइकलि गढ कनै।”

ओना साइकलि नीक जकाँ गढ नऽ केवै मुदा नयने भौजी गजैत पडि नयनेसँ साइकलि यात्रा थोड़क असयनि
काइने देने छैथ। वज्जि-

“साइकलि गढ कनैथे कए कहौ?”

साइकलिपन यद्वै नहै मुदा एकटा पन नोपा गढ भै। गढ होशे भौजी वज्जि-



“घनवाघीकेँ गूण छगए अछि आ अपने सारकविपन यद्विनिहाना भेलाइ छी।”

ओना, गेवुआवाघी भौजीकेँ नर वृहद छेवैन जे मधुवनीसँ अवे छी। किएँ तँ जहनि गाम-घनमे योनी-कुत्ता पहिने आ काहपन तौनी नथै छी, जहनि हंदापुनो-मधुवनी जाइ छी तँ नहै, तँ नरसिक भौजी नहि बुझिपेछी जे मधुवनीसँ अवे छी। ओना एक तँ सारकथिक यातिसँ आ दोसरा समैयो कहिसावे देह-हाथ नर घमाए छथ आकायाइगपन सँ पसेनाक या नर वहै छथ सेहे वाग नहि, वहति छथ मुदा तौपन भौजीक गपेन ऐ दुआने नर जेवैन जे नौदक यातिस अपनो देह घमाए छेवैन।

गनिसुनका कोन्ट यथै, यातिस जे भोने उरि तौयान गऽ मधुवनी जे छेवै। आ कोन्ट उरन पछाइन अद्वार वगैरे ऐगठ गानीय छैन भुंशीजी सँ गप-सप कएन तौन वागजिठ छथ सवा तौन वगे मधुवनीसँ वदि भेठ छेवै। ओना, कोन्टक काग ढो-ढो यथै तँ नर भोने कोनो नरक तेहन वागो नहियँ छथ जे नर केमहनो घुसकैन-शुसकैन। असथिन छेवैह। ओना नर घुसकैन-शुसकैन कागस होइ जे कोन्टसँ केकनो यनो भेटै छै आ केकनो जीवनो जाइ छै, मुदा से नहि अपन पैनीस साठ पुनान अगठिगी (४३६) केस अछि जइ समैमे केस भेठ ओर सम एत-पथानक हंस्ट गाम-गाममे पसन छथ। ओना, एत-पथानक हंस्ट अपनो नर अछि सेहे नहियँ कहथ जा सकै। अपनो अछि, जँ से नहि अछि तँ जे छेह गनीव अछि-भोने जेकनो एको युन अपन गामे जमीन नर छै-ओकनो सनकनी घनो कहै छथ।

अने गाम जकाँ हमनो गाममे वहनैयाना जमीनदानक जमीनपन हंस्ट भेठ। दप्प-दहिनीक दौड़मे अगठिगी केस भेठ। जमीनमे टाट-शुनक गढ कए जमीनदानक उगा-गुआक द्वाजा आगठिगी जे छथ, जइ एवैमे हम-सग श्वंसौ जे छेवै। तीस आदमीक उपन केस भेठ छथ। नर वीय जमीनक सग दसा सेहे भेठ। मुदा केस कयहनोमे छठके अछि साठमे दू वेन गानीय छथ आ मधुवनी जाइ-अवे छी। ओना, मधुवनी जेठपन वृहद वाग नर पडै। नर पडै टोशन काग होठ, नर पडै कोन्टसँ जहथ आ जहथसँ कोन्ट अवे-जाइ काठ गाड़िमे सपिहिक पहन, नर पडै जह कोन्टसँ जहथ जाइ छेवै तेहि कोन्टसँ छुटि कऽ अवागि छेवै।

ओना, जइ सम केस भेठ छथ नर समैक स्थिति आ अपुनका स्थितिमे वृहद वदवाउ आवागिठ अछि भोने ई जे ओर समैमे अगठिगी केसक वृहद महन छथ। मास-मास, तौन-तौन मास केसक जमाना नर होइ छथ आ सेसन केसक नूपमे ओकन नरकीका सेहे होइ छथ मुदा आव से नहि नहथ ने अगठिगी केसे वेसी होइ आ ने ओर नूप ओकन नरकीका होइ। सम वदवगे आव अपनस आ नहजनीक घटन वदगिठ अछि आव एकन महन वदगिठ अछि।

पैनीस साठक वीय केस सेहे मधुवनी-हंदापुन तौन केठका तौन वेन कनैक कागस भेठ जे हंदापुनमे कोन्ट वदगे (सेसन कोन्ट) मधुवनी कोन्टसँ केस हंदापुन आवागिठ मुदा कछि दनिक पछाइन पुनः केस मधुवनी यजिठ। तेकन कागस भेठ साठ गनिसँ सेसन कोन्ट पाथी नहथ, जजक अनुपस्थिति नहथ ओना मधुवनी कोन्टक हाठ तेहे नहथ। अथिनी कोन्ट जजक अनुपस्थिति पाथी नहै जग आ अपनो अछि मुदा कछि अछि तौयो ने कोन्ट हनदा वागठ अछि आ ने अपने हनदा वगै अछि।

गेवुआवाघी भौजीक संग सम्वन्ध^[१] वृहद पुनान नहियँ अछि, हाठ-साठक भोने ओर-नर वन्यक अछि ओना सहिस्व नरक संग भौजीक सम्वन्ध वय्येसँ अछि, कनीव पयास-पयपन वन्यसँ मुदा जहयो गेवुआवाघी भौजी एथि (हुनागमनक पछाइन) जहयोसँ कनीव वीस-पथीस वन्य नर, दयिनी-भौजाइक जे सम्वन्ध अपन वगिठ अछि, से नहियँ छथ। ओना टोका-टोकी कोनो काठ नर होइ छथ सेहे वाग नहियँ नहथ अछि, मुदा ओ पनविनिक कागक अनुकूठ नहथ।



असभ दियन-मौजाइक वीय जे वेकना-वेकनी सगिह-सकिा सम्वन्ध हेवा याहि ओ आठ-गअ वन्यसँ अछा हुनको देहक समनथार गयियाँ मुहँ उठै गेथ छैन आ अपनो तँ सहजे आनछे अछा

ओना, आठ-गअ वन्यक सम्वन्धमे मौजायो हमना यीगर्ह मेने छैथ आ हमहूँ हुनका गीक जकँ यीगर्ह मेने छलिन। मुदा ओ अपना जगहपन यगिहानए अछा वपै-भुकैमे अनवा याउनक वसयिा माग जकँ गेवुआवाछी मौजी कनी वेसी श्रुह-छथि तँ मने वेसी हँट-वहिाङि गहिये उठ। मागे ई जे गेवुआवाछी मौजी जे वजिा घनवाछीकें भूग उगथ अछि आ अपने छडिहाना प्येवइ छी। तँ मने वेसी आगू-पाछू गर मेथ मुदा कनी-मनी हँट तँ मने उगवे कएथ। हँट ई उगथ जे उपकै-कए एना कएि गेवुआवाछी मौजी वजिा? जँ पनविानक वाग छी तँ ई ने कहक याहि छेथेन जे केते काठसँ घनसँ वहनाएथ छी। अनेने तँ सग वाग सोहहामे आवाजिा मुदा घनवाछीकें भूग उगथ अछि, एहेन वाग कएि वजिा? प्याए। मनेकें थानानि वाग वदथेन पुछथेन-

“एते नौदमे केनए जाइ छी?”

गेवुआवाछी मौजी वजिा-

“कनी हाटपन जाइ छी। तेहेन ने नौदियाह समए गऽ गेथ अछि जे तीमन-नानकानी दुआने काठिनामि अँयाने संगे नोटी प्येवै।”

ओना मौजीक वोथ तेथे दुमथ तीन सथिया आमक अँयान जकँ सोहगान अपनो वुहपिडै छथ, मुदा पनविानक वाग सुगमिन कनी प्यसिये नहथ छथ वजिा-

“की कनै, समैये जप्पन एहेन नौदियाह गऽ गेथ जप्पन दोसन उपाइये की अछि।”

कहि साइकठि आगू वढैवै। गेवुआवाछी मौजी सेहे उठान मुहँ हाट दिसि वढैवै।

ओना, मने कनी-कनी वनिवागी उठिये नहथ छथ, जे कनी पनविानकिक आनो आगू-पाछूक वाग पुछथितिहिन मुदा यीगहथ ठेक गेवुआवाछी छथि जे तथिकें तान आ हूँकें सत् वनवेमे हजान वेन कएि ने वोथिक वामी वदथेक जानान पडैत, ओ मुहे-मुहि वदथे उठै छैथ, तँ मने जेहेन मन्मक स्थिति वनक याहि, से गहिये वनथ।

उगी गनजिप्पन आगू वढैवै जप्पन मने उपकथ जे एकवेन पाछू उभैत मौजीकें आनो वाग पुछथिन, मुदा दोसन मने पहिथ मनेकें नोकथका नोकथक ई जे जप्पन गनजिगिक वहनाएथ छी तऽ वीयमे जँ कयिो कछि तेहेन वाग पन्गीकें कहि दिने हेतैन आ ओ वपैत-वपैत वनाहकि नूप वना नेने हेती, सएह नूप दैय जँ गेवुआवाछी मौजी वाजथ हेती जप्पन कछि अँशमे सहिये तँ मेवे कएथ। ओना वयिानक दौडमे से गहिये, कएि तँ तान्त्रदृशी यगिाक क्षमेमे छनपन यढि जाइ छैथ आ पथेमे पनाथ पहुँच जाइ छैथ। मने-मने वयिानति नहि आ साइकठि यथि नहथ।

यानि उगी आगू वढैत-वढैत मने पन्गीक गैह-दिसि वढि गेथ। गैह-दिसि वढति मने मेथ जे जँ पन्गी भूग उगी नहतिथ तँ गैहमेसँ उगी आएथ नहतिग। मुदा से कहाँ कहिये उगथेन? उगथे मेथ जे नौदमे याथिस कथि मीटन साइकठिसँ एवै हेन, गनसिक तऽसँ येहनाक नूप वदथे गेथ अछि तँ यकिा नीमे ने तँ गेवुआवाछी मौजी वजिा? ओना, यानू दिसि गपैत पडिवा जे कोनो दोसनो-तेसनो कानाम तँ गर ने अछा मुदा से कोनो जनेपन ने यदए।

गैहसँ पन्गीकें सासुन एथ कहुना-कहुना तँ तीस-पैतीस वन्य भाइये गेथ हेतैन, तैवीय जेते थिया-पुना हेवा याहि सेहे भाइये गेथेन। कहिये कछि ने दैयवै। जप्पन कएि गेवुआवाछी मौजी कहैवै! मने उगथ उभैत उठ-समानमे एहो ठेकक तँ



कमी नहियै अछि जे याहे पानि-पानीक वीय हुअए आकि नार-नारक वीय आकि दियिदगि-दियिदगिक वीय वा वाप-वेटाक वीय हूँ-सूस वाग गढा भामेद नर पैदा कएए। कनति अछि आ पूव कएए समाजो तँ समाज छी कनि, केकनो मुँह छै तँ नंगौन नहि, आ केकनो नंगौन छै तँ मुँह नहि, मुदा तैयो घनक यानाम नर केने अछि सेहो तँ नहियै कहए जा सकैए।

थोड़क आगू वढौ कयिक-दे मनमे उठए जेठ मास छी दशनाहा पनसुए मेघा नून-पुनए वास गाछी-वनिछीमे होइ छश अप्पन तँ दू माससँ सग गाछी-वनिछीमे आम-जामुनक ओगनवाह वैसए हए, अप्पन तँ नूनो-पुनए ने ओगनवाहक उने पड़ा जेठ हए। ओना, अप्पन आम-जामुन गाछमे छटकए नहिए आ ओगनवाह वीय गाछीमे मयान वना जगछी नहिए आ सुनछी नहिए अप्पन कहाँ केकनो नून छौ छश? अप्पन आम-जामुन गाछी-वनिछीमे नर नहए अप्पन पनपनङ्गी सगकें कहियौ काठ वंसवट्टीमे युडीन-तुडीन छगिति अछि, मुदा सेहो मास तँ नहियै छी!

केतवो मनकें असथनि कनो तैयो कछि-ने-कछि उपकयि जाए। अपना घनसँ कनी पाछूए नहि कमनमे छै। उठए- जाँ कहि नेवुआवाछी भौजी हुँ कहने हेतो, अप्पन? छै। जेठ मेघ जे नूनो तँ नून छी, कोनो कएकके नंगक आकि एक्केटा अछि। नंग-वनिगक अछि। मुदा कोन नंगक अछि ओ तँ देय्या-वुहवा पछानिये सुनिछिए, नर अनेने मनकें नयनिये छी। मन हठ्टक होशो छेकक मनकें मन देय्यए जगछी छेकक मनपन मन पड़ति मन थीन मेघा थीन होशो उठए- कू! समए ओतो आगू वढा जेठ जे छेक अंगनाक मडवासँ अपन उठि हवासे जहानमे वसिहो कएए, भोजो-भान कएए, मुदा जाम-घनमे अप्पनो नून-पुनए जगिति छश! एक्कैसमयि सदीमे जाँ अहनि नूनमे छेक नूनियिह नहए अप्पन ओहा-गुनी केतए-सँ औता मन छैक जेठ।

छैकतो मनमे उठए, पनसु जेठक दशनाहा छश। एक तँ तीन माससँ एको वून पानि नहि पड़ए, ओहनि वायुमाम उठ जन्म अछि, तैपन नौदो तेहन होश जे माटकि नस तेना युसस नेने अछि जे नसे-वेनस नर जेठ छश दगिक दसे वजसँ वाध-वोनमे छै यए छौ छश नर सकैए जे कोनो काणे पानी वाध दसि जेठ हेतो आ छू-तू पकैड नेने हेनि जससँ मन जगमा जेठ हेनि आ वगहिन जाँ आकि नूनजगू जाँ वोछिक वाग नर जेठ हेनि। कएक तँ मौसमक हिसावसँ सग कछि नहियौ तैयो वून कछि तँ वदछियौ जाइए ओना, मौसमो-मौसमोक अपन-अपन याव-पनक छश वनसाक पछान जे स्वाति नक्षत्र अप्पन आ ओकन जे वून छै ओ जाँ केनाक मुँहपन पड़त तँ कपून वन, सपिपीक मुँहपन पड़त तँ मोति वन आ साँपक मुँहपन पड़त तँ वोप्पे वन कनि। जेँ एक्के नक्षत्र आ एक्के वन्याक वून कए ने होउ नहनि ने जाडक पछानिक मौसमक वून आकि जगमीक पछानिक मौसमक वूनमे सेहो अगन हवे कन?

नंग-नंगक वियान मनमे उठिये नहए छश। घन जग पड़्य जेठ आ पानीकें दगनक आगूमे गढ देय्यछैना युप-याप गढ छेछी तँ ए वोछक वासक कोनो आनास नहियै जेठ। ओना, अप्पन घनक जगिगीमे दू नून पानीक वीयक जे सम्बन्ध नहए अछि ओने कहियौ कोनो प्यटास नहियै आए अछि जससँ कोनो छोटो-क्षीम अवसिवास जगै। ओना, वियानिक नूपमे कहियौ काठ वियान-मेद जगून होश मुदा ओकन समाधान तँ पनियानक यवै जगिगीक यानक कनियिक नूपमे नारसे जाइए हमना देय्यो पानी वगछी-

“एतो नौदमे कए यठौ। कनीकाठ मयवगियेमे वठिम जाइतौ से नहि?”

ओना मने नहि देहो-हाथ थकियेए छश तँ ए जेहन अगन पानीकें दगिक याही से नर दज पेठिए। मनमे छश जे कहिए- जाँ छेक जाडक उने आकि नौदक उने आकि हाँट-पानिक उने घनसँ नकिछे छोट दिये अप्पन ओकन जगिगीक



गाड़ी केना यधौ। ओना, ई दीगन अछि जे जप्पन समय असह्य गज जाइए जप्पन ओकन अगुकूठ ठेक अपन जनिगीकें चडयिबैत यधैए मुदा से नहि, हनए सपिहि जाकां अपनाकें समनपति कजैत कहथैए-

“आव कि कोट-कयहनीमे एको क्षम नहैक मन होइए, नहूमे मधुवनीमे। जोतेकाठ काज छठ तोतेकाठ काजमे हेनाए छैवौ। काज होइते पड़ैवौ।”

ओना आन स्त्रीगाम जाकां पत्नी जापकें वेसी नहि नमना वजधौ-

“कनी काठ छहैनेमे डढा छि, पछाइन कछि प्याइयो-पीव छेव याहे पहिने नहय्ये छेव।”

ओना मनमे नेवुआवाछी मौजीक जाप गयैत नहए मुदा अगुआ कज वाजवो तँ नीक नहयि होइत। पत्नीक प्रिया नहुके मुहँ कएि ने सुनव जे आन स्त्रीगामक मुँहक वातो जाँ हुनू पनीनीमे हगडे गज जाए, सेहे केहेन हएत। तँए मनकें थामाना किज नाप्पवे नीक बुहौ। ओना, मनमे ईहे हुअए जे नेवुआवाछी मौजी जे नून छाव कहने छथी आ जाँ छाव होतैत तँ वोछि वामिसँ ने बुहजिएव।

कुना-गंजी नकिछी नौदमे दैत पत्नीकें कहथैए-

“कनी पंप्पा नेने आउ।”

आंगनसँ पंप्पा आन पत्नी गढे-गढे यधवए छावौ। दसे होकैनेमे मन आन गज गोठ मन आन होइते वजधौ-

“नेहेनार तँ अछि मुदा पहिने पानी पीव, याह पीव आ पान प्याएव तेकन पछाइन बुहठ जोतस।”

‘वडवडयिँ’ कहि पत्नी आंगन दसि वडगिछी।

ओना, नेवुआवाछी मौजीक प्रिया नहुसँ नकिछे घातक गमहए जाकां घोधमे नाना कजैत छठ मुदा अपन थकावो आ याविक गनमयिँसँ जाप-सप कजैत श्रृष्टा मनमे नर होइत नहए ओना पत्नीक मुँहक युहयुहिसँ बुहजि पड़ै छठ जे कछि वात पेटमे एहेन छैन जे वजधै छुस-श्रृष्टा नहथी अछि मुदा हनए नौदाए बुहजि एहुआने ओकना पेटमे थामाना किज नाप्पवे छैथ। गज सकैए मनमे ई होइत होतैत जे नौदाएमे कहने गनमाएमे जाँ कही बुहजैनेमे नठ-प्रियठ गज जोतैत आन अपन वजधैने गज जाएत जप्पन तँ ओकन अथो अन्थ हएत। जसँ उताओ ओहने हएत। नीक उताओ तँ जप्पन भेटैए जप्पन ओकन यानू कोस समगम नहथी कएि तँ अही हुनयिँमे ने नह्योक अछि जाइ हुनयिँमे यानू कोसक ठेक अछि।

ओना वेसी उमेर जेठ पछाजि पत्नीक देहक पानि अपनो ओहने जधजधौ छैन जेहेन एहेन उमेरक हेवा याहि। मोटा-मोटी ग्रह बुहू जे देहमे आसकैत ओते नर छैन जेते आन वत-वनौन स्त्रीगाममे नहए।

युधपि याहक केनथी यढा आंयकें नीक जाकां छावौ छेठामे पानि नेने पत्नी पहुँचथी। ओना, अपन मन नहए जे डेहुनसँ नयिँयो आ ननी वाँह पहिने योइ छी जे थकैत मानक होइए, मुदा मन असकना जेठ पत्नीक हाथसँ छेठ छट्टू वेन कुना केवौ आ ननी छँक पानि पीवौ। तैवीय पत्नीयौ याह नेने पहुँचथी। एक गजिस याह पीव पत्नीकें यावस्सी दैत वजधौ-

“जेहने याह पीवैक श्रृष्टा छठ तेहने वनेवो केवौ।”

ओना, याह आने दनि जाकां छठ मुदा देहक थकावक नून वढने वस्तुक (पीवैक) सुआद सेहे वढय्ये देने छठ मुदा पत्नीकें वातक उन्टा अन्थ छागिछे। उन्टा अन्थ ई जे हम तँ याहक सुआद पेव वाजधौ नहि मुदा पत्नीकें जेठ जे वजधै स्वनूप वजधौ। मुदा छावै ईहे होतैत जे जप्पन सन दनि अही युधपि अही हाथे याह वनवैत आन नहथी छी जप्पन आन दनि



की इच्छा नर नरै छैथैण जे एना वज्जि? मुदा अपन जे व्रियाण पार्कि कहैक नहैण ओर आगू एकना (माने याहक गपकें) तुच्छ वुहैथैण तँए मने-मने दवैण वज्जि-

“हाथमे कपिपौयो ओगनी एके-नंग अछि, नहनि ने पाँय दनिमे पँयो नंगक याह तँ नारिये सकैए। अहाँकें केहेन याह पीवैक मने अछि आ हमना केहेन याह वनवैक व्रियाण अछि ओ गुम्मा-गुम्मासँ थोड़े काज यज्जि। तँ सए छै तँ कहि दशौ जे कनी वेसी ठिकने आकि कोनो आगे वसू वेसी कनी कऽ आकि म कनी कऽ देवश”

पत्नीक हटसँ वुह पड़ै जे जावे अपनो ओहने नर वनव तावे ठीक-ठीक काज यज्जैवछा नहि अछि याह पीव पान प्या नेने छैथै। वज्जि-

“गामक हाथ-याथ नीक अछि किनि?”

गामक हाथ-याथ सुनि पत्नीक मने जेना दुपहरियाक वाग नायि उठैथै। वज्जि-

“गँहकमे सौसे गामसँ हगडा नऽ जेथ।”

पत्नीक वाग सुनि मने उठै जे कोनो समाजकि वाग जून अछि तँ से नहि नहै तँ एक गोनेसँ ने हगडा होशैण। सौसे गामसँ कए नऽ जेथैना मुदा प्रश्नक जड़ि केतौ-ने-केतौ समाजक याना जून छीपछ अछि तँए समाजकि यानामे तँ नहि, मुदा मजकयिछ यानामे वज्जि-

“सौसे गामक ठेकसँ हगडा केथै आ होट ओहनि दैथै छै, नयन हगडे की जेथ?”

पसियि कऽ पत्नी वज्जि-

“से की?”

सोहवैण वज्जि-

“जावे सुनीगाम होटा-होटीवैथ नर केथक तावे ओकन हगडाक कोनो मानि नहि ओ कोनो प्येथक सन्डी जेथ।”

पत्नीक रूप वदछैथै। वज्जि-

“महुआनवाथी कुम्हैण आएथ छैथि, पनसू दसनाह नहै, ठेक अपन-अपन घोड़ा यदौथक। उयाने ठेक एक-एकटा घोड़ा कुम्हैण ऐगामसँ उऽ अगथक।”

वयियेमे वजा जेथ-

“मन, ई की जेथ! एहेन तँ सन साठ होशे अछि।”

समहाजैण पत्नी वज्जि-

“सन दगिसँ घोड़ाक दाम तँ छै, नर हसिावे आन साठ दऽ छैथयनि।”

वज्जि-

“ऐवे की जेथ?”

पत्नी वज्जि-



“महुआवाषी कुम्हैन अनी कऽ गढ़ गऽ गेथी जे आव सभ कहि महुआ गऽ गेथ, हमनो गंग-टीप कयैमे पनय वढ़ गेथ
अछि, तँए ओर हिसावे घोड़ाक दाम छेवा”

पत्नीक वाग सुनिमन हूमन। मगकँ हुमैनो व्रियाग गुम्हैन। वज्रौ-

“ई तँ उयति गेथ”

‘उयति’ सुनिपत्नी छड़ैप कऽ वज्रौ-

“हमहूँ तँ सएह कहएि मुदा एक दसि गढ़ीवाषी, गनौनवाषी आ तमोनियावाषी गऽ गेथी आ दोसर दसि गेवुआवाषी आ
घेपुआवाषी गऽ गेथी। हुनू दसिसँ कौआ जकाँ छहए गेली।”

वज्रौ-

“पछाश की गेथ?”

पत्नी वज्रौ-

“तामसमे कहा गेथ जे तौना सभकँ मूल प्पहिनगे छह, तँए गुन्याए छह”

पत्नीक वाग सुनिमनमे गेथ जे नसिक अहिक उपनाग गेवुआवाषी देगे छेथी।

○

शब्द संप्रदाय: २४७०, तिथि: २३ जून २०१७

मन्त्रालय

जोगानी नायकँ गामक सभ जगे छैन जे ओ ओहन ओक छैथ जे अपन जगिगी यथैक सभ जोगान अपने नयने छैथ।
जहनि कुसभ किसान अपना पुट्टापन वन-महिसक संग पेटिक सभ समया-माने हन-कोदानि, पुनपी-हंसुआसँ छऽ कऽ
टेगानी-कुम्हैन हेरन दमकठ-वोगि तक-अपना हाथमे नयनियमिति जगिगी वना, नयिमवद्य यथै छैथ जहनि जोगानी नाय
सेहे छथि। जयन हुनयिँक वीय मनुष्य वनीजीवन धानस केवौ जयन जँ अपन जगिगी समेट यथैक तँ दोसनोक सेवा गर
गेथ जयन गकूनीकी आ गजग की? आ जँ गकूनी-गजग कयैत जगिगी गर यथै जयन जगिगीयि की। जगिगीक छेथ जे
आवश्यकता अछि, आवश्यकता अछि जगिगीक अगुकूँ, माने ई जे केहेन जगिगी वना यथै यथै छी। जेहेन जगिगी नह
ओर अगुकूँ ओकन आवश्यकता सेहे अछि।

याथीस वन्य पून्य जोगानी नाय तीन कट्ठा वंसवानि ठगौछैन। पतिाक देथ जे वंसवानि छेछैन ओ ताम-कोन आ ताक-
हेनक हुआने उपैत जकाँ जेथ छेछैन। जसँ अपन आवश्यकता पून्या हेरक संभावना गर देयछैन। वाँसक प्यगतो तँ कम
गहियँ अछि। घन-घनहटसँ छऽ कऽ टाट-खनक, वाड़ी-हाड़ी-छे मयानक संग वनेव-वाड़ी-छे सेहे प्यगता हेरते अछि। तहूमे हम
सभ ओहन किसान पनविानमे जग्न गेगे छी, जस पनविानमे वाँस उपजवैक साधन-माने जमीन-सेहे अछि। वाँस-गाछी
गामक ओहन जमीनक पैदावान छी जे ऊँयनस हुआए वाढ़ि-वन्प्याक रका अपन छीहे जौडम गामक आवासँ वेसी जमीन या
तँ यौनी अछि। ओहन नीयनस जमीन अछि, जसमे वाँस गाछ गर गजगि सकेय। वाँस ओहन पेटक पैदावान छी जे



धनाडीक सट्श हुअए। जइ गाममे धन वनवैठे जमीन सभकेँ नर छै तइ गाममे वॉंस-गाछ ठावैक जोगान केतए-सँ श्री। जोगानी मायकेँ से नर छैथैन। पुनगा वंसवाना तीन-यात्रा साठ न्यात्रैवीय ओइसँ काज यवैथैन, ओना सभ काज ओइ पुनगा वंसवानासँ नर यवै छैथैन मुदा तैयो वकिनी-वट्टा नर मेने अपन काज तँ यवै छैथैन। ओना वंसवाना नयियँ मुहँ हँनयि नहए छए जइसँ आगू वाधा उपस्थिति हेवे कनैत। ग्रह सोय जोगानी माय नवका वंसवाना ठावैक वयान केथैन।

जुड़शीत पवैन, यैत-वैशाखक वीयक समान छीह। जहनि यैतक गाछी आ माघक वाछी नगिग होइए तहनि वॉंसो अछए। जेहेन वॉंस नोपए जाइए ओइमे नव वॉंसक कोपन सेहे नकिँठो अछा नोपए पछाइन जँ नयिभति ओकन पटौनी होइ तँ ओ अपन कोपनकेँ जोगा नव वॉंसक नूपमे गढ़ कनवे कनैए। छोट-वाठ्टीसँ ठेक गाछी-कठमने जठयान कनैति छैथ मुदा जुड़सी सभ छोट गाछ-ठे जँ एक कठस-माने एक डावा-पागकि प्यगाना पुनदिनि होइ छै तैगम नमहन गाछ-ठे तँ ओइसँ वेसी प्यगाना हेवे कनै। ओना, जुड़सीक छोट गाछ होइ छै, जइसँ ओकन मुसगो आ सगि सभ यनीक उपनके पनमे नहै। जमीनक उपनका हाठ^[२] जे याहे तँ नयियँ मुहँ ससैए जाइए वा सुययि जाइए जइसँ माटवेनस माइये जाइए वेनस मेने सुयैक संभावना सेहे माइये जाइ छइ मुदा नमहन गाछक मुसगो आ सगि तँ वेसी न^[३] तक जाइते अछा तँ ओइसँ वेसी (माने जुड़सीसँ वेसी) जीवैक संभावना नहति अछा तँ जँ एक छोट पाग ओकना^[४] जइमे जुड़शीत पवैन दनि पड़ै वा नहि पड़ै, ओइसँ ओकन कोनो हृष्य-वसिमय नहियँ होइ छै मुदा तैयो कसिन अपन पावककि वयान, नर पाग तँ पागक डन्टयोसँ पुनवैक वयानागूकूठ एक छोट जठयान कनैति अछा।

ओना आइ जुड़शीत पवैन छी, तँ कसिन पनविनमे आनो वेसी काज अछए। काजक हसिावे औहुका दनि^[५] छोट पड़ि जाइए। कए तँ मोने सुता उड़ि गाछी-कठम, वाड़ी-हाड़ीकेँ जुड़वैत-माने जठयान कनैत-माठ-जाठकेँ नहैनाइ-योगाइसँ उड कइ घनक केवाड़, वकसा-वुकसीकेँ योगाइक संग-संग आंगन-घनक नसुता-पेना जुड़ैनाइक संग पोष्यक घाट आ रगानकेँ सेहे उताहव नहति अछा तैसंग यैतक नगहए वैशाखमे प्या कइ पुनैनाइ सेहे अछए। तेनवे कए, समाजक संग महदेव-पान्थनीक गाय, 'जय शिव-जय शिव' कनैत सौसे गाम घुमनाइ सेहे अछए। एते तँ एक उषाहाक-माने दुपहरसँ पहिनुक-मेठ, दोसऱ उषाहाक तँ पछुआएथे अछा जेकना सँह यनी पुनवैक अछा^[६] तँ मेठ पहि पुनकास, दोसऱ पुनकास तँ तेने नमहन अछा जे सँह तक पुनएवो कइनि। ओ अछा कसिनि जनिगीक उपनवी जागनक शक्ति सभकेँ गामक वोन-हाड़सँ नेवाड़-नेवाड़ सीमा टपा-टपा गगाएवा तहूमे जँ सीमा टपवैकाठ दोसऱ गामक शक्तिनीक संग गड़िनी गइ जेठ नयन तँ आनो वेडकान काज गइ जेठ मुदा जे हुअए, जोगानी माय मनमे ओहि दनि नोपि छैथैन जे जहिया वॉंस नोपैक मुहून् वनत नहिया तीन कट्ठा वॉंस जून नोपवा ओना वॉंस नोपैक मुहून् जुड़शीत पवैन दनिटा नहि छी ओइसँ पहि ओते दनि अछा जेते ओकन पछातकि अछा हुनू काजक पठने दू पनस्थिति सेहे अछए। एक दसि जँ पागकि (पटौनीक) प्यगाना कम अछा तँ दोसऱ दसि पागकि प्यगाना ओते वेसी अछा। ग्रह सोय जोगानी माय तँ कइ छैथैन जे जुड़शीत पवैन दनि कसिनीक आन काज छोड़ि पवैन मनवैत तीन कट्ठा वॉंस नोपवा वॉंस नोपव आका वंसवाना ठावए? मुदा अपन तँ ओ वॉंसे नोपव हएत, ठाठा पछाइन ते ओ वंसवाना हएत। जहनि कोनो वैयानकि संस्थाकेँ पहि वयानमे आनए जाइए पछाइन नीव छेठ जाइए तहनि जोगानी माय जनिगीक मूठ प्यगानाकेँ पहि मनमे नोपि पुनकि वयान गनैथैन।



ओना, वोटेमे^[६] पुनाग-सँ-पुनाग पाक-हुनक संग पक-पक सुपुओ नहवे कएए मुदा वंश वृद्धिके छै तँ ओहने ने नोपठ जाएत जसमे कोपनक अंप्प होइ आ नोपठ पछाइन ओ कोपन दिसिए ओहने वंश तँ नहयै नोपठ जाएत ओकन अंप्पये तथा गेठ होइ पुनाग वंसवानसिं गवका-माणे मौन पनहक-वंश डकिपिओ जोगानी माय पहिनिह निप्पिगेने छै। याओसटा वंश नोपव छै, ओकन वोटेसँ उप्पाड़वोक छै। गमगन-यौङगन काज नहिओ जोगानी माइक मगसूवामे मसिपिओ नकिमी नहयै छै। एते वसिवास वनछे छै। एते एकटा-एकटाकें उप्पाड़ नोपठसँ वेसी समैक नोकसागी हएत तँ एक होकमे पहिनि याओसटा उप्पाड़ छै आ दोसन होकमे नोप, तेसन होकमे पटौनी कएत सवेन-सकाठ घनपन आविजाएव सए केछै।

अने पेती-वाड़ी जकँ जोगानी माइक वंसवानसिं सेहे नीक छै। पुनाग वोटेक वंश समाप्त होइ-होइ जोगानी माइक गवका वोटेक वंश शुरू गऽ गेछै। कसिगी जगिगीक तँ गगदी पेती वंश छै। तहूमे गाम-गाम वजान वनछे अछि। कछि कसिग उपजौनहिन छै मुदा जगाना तँ सौसे गाममे नहि अछि।

अपन एक जगिगीमे जोगानी मायकें वंश सहयोगी पूजिक रूपमे संग दशे आवि नहछे छै। मुदा दगि-दगि गमैया वजान टुटए छै। कछि ओक ईटाक घन वनछै तँ वंशक जगाना कम छै। मुदा तेनवे नहनि गेठ वंशक दोसन जगाना जे वनेव-वाड़ीमे होइ छै आ वनसागी नकानीक मयानमे सेहे होइ छै। उहे कम गेठ।

वंश ओजौक पंचे वन्यक पछाइन जोगानी मायकें नीक वंसवान विन गेछै। ओना वंशक वंसवान हुअ आका शिशोक शशिवेनी आका अने गाछक गाछे ओवैक दगिमे ओजौनहिनकें वसिष जगिमासा नहि अछि मुदा कछि ओजौनहिन ओहने होइ छै जे वनवठ वृद्धि ओकन वननिप्पे छै, वठक अथकिता ओहने ओजौनहिन होइ छै जे एक-होकाह होइ छै। होकाहो किकोने एके नगक अछि सग कथुमे, मागे सग काजमे सव नगक होकाह होइ छै। जेना दैपे छै जे कछि पढ़नहिन अपनकें पढ़ाई दसि तेना होकाह छै जे या तँ दुनपिं सँ हेना जाइ छै वा दुनपिं हेना जाइ छै। नहिना वन उपानजने सेहे कछि गोने अपनकें तेना होकाह छै जे या तँ नोगीए वन जाइ छै जससँ नीक-अथवाक वनियामे मगसँ हेना जाइ छै वा जोगिये वन जाइ छै जे जेनवे दगिमे जगाना दैपे छै ओतेवे दगिमे उपानजनी कए छै। जगाना जेनवे जे अछि मुदा जोगानी मायकें से नह छै। ओ वंशकें अपन उपयोगी वस्तु वृद्धि कसिगी जगिगीक गगदी पैदावान सेहे वृद्धि छै।

वंश नोपठक तीग साठक पछाइन, नहिना वावाक अमठानी अवैत-अवैत मृत्युक संभावना मनुष्यमे आवए ओए नहिना वंशक तँ अछि। मागे, पुनाग वंशकें वोटेसँ नकिाव अगिवाय माइ जस, नहि तँ मनुष्ये जकँ गऽ जाएत। मागे ई जे जँ पैछे पीढ़ी वावा-पनवावा आ तहूसँ अपनका वावा सग जँ पनवानमे जीवति नहना तँ ऐगठ पीढ़ीक वादमे वाया उपस्थिति माइ जस नहिना वंशक अछि तीग-याना पीढ़ीक पछाइन जँ वोटेसँ पैछे वंश नकिाव नहि जाएत तँ ऐगठ वंश पुनजाति होइ अछि मुदा जोगानी मायकें अछैते आमदनी नहि। आमदनीमे जग पसि गेछै। जग ई पैसछै जे अपन पनवानमे जेते उपयोगक जगाना छै ओकन अतिरिक्त जे विक्री-वट्टाक उत्पादति वस्तु छै, ओइमे कमी एछै। जससँ अछैते वनवठ नहिओ जोगानी माय वनहिन हुअ छै। वस्तुक हिसावसँ गाममे ठेवाठ कम छै। जससँ समुयति ठाममे कमी एछै। तेकन काम जे कछि ओककें गामसँ वहेनौ आ वनेव-वाड़ीक काज कमने वंशक जगाना कम छै। दोसन दसि गव-गव योपनाक अगाना सेहे आ कछि ओक अपनो कमा-पटा कऽ पनेवाक घन वनवठ छै। जससँ घन-घनहटमे सेहे वंशक काज कमने वंशक विक्रीमे मगदी एवे कए जससँ जोगानी माय सेहे पुनजाति भेवे केछै।



याहीस वन्यक पछाई जोगानी भाष दनवज्जापन वैस अपन कसिनी जगिगीक समीक्षा कऽ नहए अछि समीक्षा कए नहए अछि जे जगिगीक कोन ठाँ वँयठ अछि आ कोन हेन। जेठ। तऽमे सघन वँसवागिकी की स्थिति अछि। तहि वीय पत्नी आवाजपछि-

“मन-नग गडवड अछि जे मनुआएँ देपै छी?”

अपन वेथारें छपिबैत जोगानी भाष वज्जा-

“मनुआएँ नर छी मनुआएँ छी। याह पीठाक पछाई मन सुनहल गऽ जाएत।”

पत्नी याहक वाग सुनति सुठकुमानी वज्जा-

“याहे वना कऽ तँ हम देपए आएँ छैथौ जे दनवज्जापन छी की नहि।”

ओना जोगानी भाषक मनमे पत्नीक वाग सुनकिनी-मनी कुवाथ मेवे केँछै। कुवाथ ई मेवेन जे जप्पन हुनका मनमे संका मेवेन जे दनवज्जापन छैथ की नहि, जप्पन ओ अनेकानी याहे कए वनौथी। जँ हम दनवज्जापन नर नहि। तँ जप्पन ओ याह पानि वनौत कनि। मुदा ठाँमे मनमे उठैत, एक तँ हथियानक काटत घाव तैपन जँ नून छोटव तँ ओ बुडविकी छोड़ि आनो की हएत। एक तँ ओहनि घावक टोस अछि तैपन जँ नूनक मसि कऽ दए जप्पन तँ ओ आनो टहकन कनि। तऽसँ नीक जे पोछाई कऽ कए ने अपन मनक वेथ पत्नीकें सुना दएत। अन्ध्यांगिनी छैथ जँ अहो दनह हेन। छैथ तँ अहो ने वँयठ, अहो तँ कमवे कन। एह सोयि जोगानी भाष वज्जा-

“सुन काजमे जेते देनी कनव ओते ओ असुन मेठ, तँए पहिने याह पश्चात्।”

हठसठ-कठसठ पत्नी व्रिया सुन सुठकुमानी मुस्की दैत याह आनए आंगन जेथी।

दनवज्जापन सँ सुठकुमानीकें हटति जोगानी भाषक मन सुन ओहनि वदनीहण हुअए ठाँमे जेना सौन-गाँदेमे पुनवाक ठहकौपन मेघकें वादठ पावलिहए मनमे पुनः उठि छैत- अपन जगिगीक अमूर्त्य समए, शूनमशीठ समए ओहनि गष्ट गऽ जाएत।

अपन शूनमकें गष्ट होइते देपते जोगानी भाषक मनक व्रिया आगू वढैत। आगू वढति मनमे उठैत- की वँसक एते उपयोग अछि जे अपन कठिनी शूनम कएत पूजि गष्ट गऽ जाए? जोगानी भाषक मन ठमकैत। ठमकते मन आगू घुसकए ठाँमे जेते काज अपन तँ वँसक हम सन कनैत एवै अछि, ओ छेह कसिनी जगिगीक उपयोग केवै अछि। मुदा जप्पन जगिगी आगू वढत जप्पन मशीनक जूनन सेहो हेवे कन। दुनयिँक दृश्य आर ओहण गऽ जेठ अछि जे जेकन। जेते अगुआएँ मशीन छै ओ ओते शक्ति सम्पन्न देश वनठ अछि। वँसक तँ अनेको उपयोगी वस्तु-कागज, कपड़ा श्यादि- वनि अछि जेकन उपयोग आइये नहि, आगुओ होइते नहए। मुदा वँसक उत्पादन तँ मात्र ओतैत नहि हए जेते अगुओ वानावनास छर। माने वँस उपजैक समुयति दूमि आ समुयति मौसम जेते छर, कम-सँ-कम कपड़ा आ कागजक प्पगन। तँ सन जगह छरै। तहि वीय सुठकुमानी याह नेने दनवज्जापन आवाजिठपनि।

पत्नीक हाथमे याहक गठिस देपते जोगानी भाषक मनमे व्रियाक याह सेहो जगियुक्त छैत। ओना व्रियाक गंभीर वन-वनक सघन नूप-मे जोगानी भाषक मन तेना सघन हुअ ठाँ छैत जे पत्नीक हाथक याहपन गजैत ओर नूपे पड़वे ने केँछैत जेहण मन वनौने सुठकुमानी याह नेने आएँ छैथी। मुदा तेनो पत्नीक हाथसँ याह पैत जोगानी भाष आँप-पन-आँप जूनन छैत।



आंप्पि-पन-आंप्पि पड़ति सुठकुमानी वज्जि-

“वड़ीकाठक वगैठ याह छी, देख्यौं जे सुआदमे ने ते वाइसपन आएठ अछि”

पत्नीक वाग सुनि जोगानी भाइक मुहसँ वहेनेछै-

“वाइसपन आवह कतिरसपन, याह तँ याह छी”

ओना, जोगानी भाइक वरियान सुठकुमानी नीक जाँ गहि बुहरी मुदा अपन हाथक वगैठ याहक पुनसंसा तँ सुनवे केथिह। पुनसंसा सुनि सुठकुमानी आंगन दिसि मुड़ैत वज्जि-

“गावे अहँ याह पीव, ठाठे हम आंगनसँ अवै छी”

तैवीय हू घोट याह जोगानी भाइ पीव नेने छवा, मनमे संतुष्टिकि तुष्टि पनैप जेठे छेथेन तँ मुसकुनाइत वज्जि-

“आंगनसँ ओहनि कएि आएव, याह पीने आएवा”

ओना पति वरियानसँ सुठकुमानीकेँ मसियौ मन किवाथ गर भैठेन, कएि तँ जे वाग हँपन दऽ वाजठ छेथि ओ पति उधानि दैठकेन, तेनवे ने से तँ सज जगति अछि जे पति-पत्नीक वीय हुअ वा आन छोट-पैघक वीय, मुदा कछु वरियान तँ ओहने हेतु अछि जे ठेक हँपन-तोपन दऽ कऽ वज्जि।

याह पीव पाग प्यासो जोगानी भाइक मनमे चक्का जाँ ठाठेना चक्का ठाठि मन चडकए ठाठेन। चडकए ई ठाठेन जे आइये गहि, सज दनि मथिथियठक अनमोठ उपयोगी वस्तु वंँस नहए, जे अगकूठ वानावनस पव अदौसँ सुठान-सुठैत नहए अछि हजानो वीघाक कृषि पैदावान नहए अछि जे ग्नाभीस उपयोगिता कर्मति वीटक वीट वंँस सुप्पि-सुप्पि निषट गऽ नहए अछि हुनगाय तँ मथिथियठक नहवे कए जे वुयकि शीन्षपन वसैवठ। मथिथिवासी अपनो नीक-वेजा बुहैठे अपनो तैयान गहियै छैथ। आइ जँ गामक वस्तु सज जे अनुपयोगी भेट जा नहए अछि, ओकन जँ समुयति उपयोग हेतु तँ कजिएह मथिथि बुहै छी सहए नहैत?

एतए सतावन वज्जि जाइसँ सज गाम तँ गहि मुदा मथिथियठक वहुनो गामक सम्पत्क सूतन देशक आन-आन जागसँ वज्जि जाड़ी-सवानीक सुविया वढठ। पैघ-पैघ त्रेपानीक गजैत वंँसपन पड़ठ। ठेकोकेँ माने वंँस उपजौनहिनोकेँ जाड़ाक घेघ वंँस वनिये जेठ अछि पड़ाए योनक कटिग नखा, एहेन मनोभाव ठेकोकेँ उदय भेट। मजबूतीक मजपूत ठाठ उद्योगपतिकेँ उद्वेक अवसन भेटठ।

अपन जगिगीक संग जोगानी भाइ समाजो कजिगी देय नहए अछि याथिस वन्य पूर्वक नोपठ सघन वंसवानि-माने नीक ठाठक-देय जोगानी भाइक मन पाछू दिस जागि नहए छैन। साइरो वीघाक दुभैत समाजक सम्पैत देय जोगानी भाइक मनक वरियान हैन-हैन अठिसिए सुठ जाँ हड़ि-हड़ि पिसि नहए छैन। मुदा उपाइये की? तहि वीय उक्थनीगाथ एकटा त्रेपानीक संग पहुँचठ। अगजुआन वेकतीकेँ देय जोगानी भाइ उक्थनीगाथकेँ पुछठपनि-

“हनिक्का गर यगिहठैत?”

ओना त्रेपानी युपे नहए मुदा उक्थनीगाथ वाजठ-

“काका, ई वंँसक त्रेपानी छैथ। गाममे जेठे वंँस अछि, सजटा कीन ठेगा”



‘गामक पोरो वॉंस अछि, सगटा कीन छेना।’ सुनजोगानी भाइक मनमे पुशीक छैन उठैना मुदा छगछे मनमे उठि
गेछैन पो कनोड़क सम्पैत वॉंस गाममे अछि, अपन तक पो वॉंसक ब्रिकिनीक दन नहथ अछि, ओर दने कीनना
आक? मुदा अपन ब्रियानकें मनेमे दावा जोगानी भाइ वज्ज-

“ई तँ नीक वात भेट पो जे सम्पैत गष्ट नऽ नहथ अछि ओकन उपभोग हएना”

अपन वात नपैत ठकूभीगाथ वज्ज-

“काका, हनिकन कहव छैन पो सुप्याए आ पयिया वॉंस छोड़िहिन दन सग एक नेटमे कीन छेवा”

ठकूभीगाथक वात सुनजोगानी भाइक मनमे उठैना पो अनेको कस्मिक वॉंस गाममे अछि, पो साइजो आ गुममे
अनेक गंगक अछि, तपन एक दन केना हए? ब्रियानकें वहकवैत वज्ज-

“टके सन भाजी, टके सेन प्याजा”

मुस्कुराइन ठकूभीगाथ वज्ज-

“हँ, से सहए वुहूँ”

जोगानी भाइ ब्रेपानीकें पुछथपनि-

“अहँ केनए नहै छी?”

जहनि मैथिलिमे जोगानी भाइ पुछथपनि तहनि मैथिलिमे ब्रेपानी सेहे अत्तन देठकैन-

“हमन घन सकनी अछि असठ ब्रेपानी दठिठिक छैथ”

जोगानी भाइ-

“अहँकें पान्टनशपि अछि आक?”

ब्रेपानी वज्ज-

“नऽ, पान्टनशपि केना हएना ओ—माने उद्योगपति—वहुन पैघ कानोवानी छैथ हम एकटा अदना आदमी छी, तैवीय
पान्टनशपि केना हएना”

जोगानी भाइ पुछथपनि-

“तपन अहँ?”

ब्रेपानी वज्ज-

“टनकक हसिावसँ कमीशन भेटैए”

जोगानी भाइ-

“गामक सग वॉंस कीन छेव?”

ब्रेपानी-

“गामे कएि, इवाकाक सग कीन जाएना हमना सग-सग साइजो गोरो कमीशनपन काज कए नहथ अछि”

जोगानी भाइ-



“की नेटमे वाँस कीगै छी?”

बेपानी- “ओना, जे नोट साइड मागे एगएयक वगएमे अछि ओक १ ६१ अस्सी नूपैआ-एक वॉसक-अछि मुदा जे जेते हटिक अछि, ओक १ ६१ ओते कम होश जाइए”

अपन गामक हिसाव अगुआजिमे-मन जोगानी माय जोटैग तँ वुह पड़ैग जे जे वॉस हू साए नूपैये वीकैए ओ सार्तौ-पयहर्तौ नूपैये भेग, अढ़ाई-वड़ कम! मुदा दोसरा उपाय तँ नहियँ अछि साथे-साथ सुप्पा-सुप्पा गष्ट होश जाइए जोगानी माय वजए-

“भयिषियक संस्कार १६७ अछि जे जे ६१वर्षापर आवाजिथि हुनक १ मन दुप्पा कऽ ब्रिदि गर कएनिग। नहूमे अहं गे पड़ोसी छी मुदा असभ जे कानोवानी छैथ ओ तँ हजान कोस दूक छथियि केना कऽ मन दुप्पेवैग। जेते वॉस अछि ओरमे एकटा वीटक अपना-ठे नय्यैव, वाँकी सभ दऽ देवा”

बेपानीक संग उक्ष्मीनाथ सेहो उर्ग कऽ ब्रिदि भेग। जहनि अनावीकें कनजो नूपैआ हाथमे एगे क्षमक पुशी होशो छै नहनि जोगानी मायकें सेहो भेगैग।

नही वीय शुभकुमारी ६१वर्षापर पहुँचि। हड़ि युसैग कुर्ग। जहनि अपने मुँहक पूगक सुआदसँ मन नृपति कनैग निपति होइ, नहनि जोगानी मायकें भेगैग। पन्नीकें कहयनि-

“गाड़क उनी उनीग”

○

शब्द संप्रदाय: २५२३, तिथि: २८ जून २०१७

गामहिन

जेठ मासक पूजासि दनि। कछु दनि पहिने वैसासकि आगूक दसनाहा सेहो गऽ गेग। अपन-अपन मनकमना पून होइ छेग उहिवानक स्थानमे जेमन सजग घोड़ा यढ़ा गामक छेक नसियनिग सेहो भाइये गेग छग।

हथिया गक्ष्मक पछास एको वून वनप्याक पाग तँ वनीकें नसीव नहि भेग मुदा जाड़क शीतलहनी अपन नूपमे वेरमागी गर केग। तँ य-य ययकैग वनीक छाती पेटक दनानि जकँ छट-छट छहैछीग भाइये गेग अछि।

मौसमक नृपदिप्प जीवागन काका पाँय कट्ठा मे सजमैग प्येती सनस्वरी पूजासँ तीग दनि पहिने केगैग। ओना प्येती कनैक हिसाव जेते-कोन उगासँ सुनू गऽ जाइए मुदा मूत्रा: कसिग प्येतीक हिसावसँ अपन उग जेते-कोनक हिसावमे नयने छैथ आ प्येतेमे वीज जोपनसँ प्येतीक हिसाव सुनू कनै छैथ। अही हिसावे जीवागन काका सजमैगक वीआ पाँय कट्ठा प्येतेमे जोपा छैग। गाछो नीक जगमैग। वनप्या गर भेगे शीतो-पठक नूप वदैग जेग तँ ओते प्रभावति सजमैगक गाछ नहि भेग। मागे एकोटा गाछ कोकनियिएग नहि, सोहलगी कठसठ सुदकठ गाछ भेग। अपन प्येतीक पहिने सीढीक काज देप्प जीवागन



काका भगे-भग हसिब ठावैथ जे ढकऔथ जेन अछि, तैपन समुयति नसायनकि प्याद सेहे देथ अछि तोनवे गहि, नीमक गाछक बीआक संग नसायनकि कीटनासक दवाइ सेहे दइये देगे छलि तँ ने जड़िकें काटैक आ ने चड़-पातकें याटैक संभावना अछि।

जेना-जेना जड़क दनि कमैत जेथ तेना-तेना सजमैक गाछमे उग्न सकूनि अथैत जेथ जइसँ समझागुसाना ठाँगी सुंघयिआ-मुड़ियिआ आगू नमकवा महिना गर वीतथ मुदा झुठक कोढ़िसँ ठाँगी कोढ़िया जूनन जेथ सँह-भोन दैपैक संग जीवागन काका घन्टा-दू-घन्टा काजो जेनमे कनि छि।

पथीसम दनि वीत जेथ, जेनक संग ठाँयिकें पागकि नृषमा जगयि नहथ छथि तैवीय जीवागन कक्काक भगमे उडैत- वय्याकें जँ समुयति सुपोषति अहान गर भेटत तँ ओ नोगाह-टटाह हवे कनि।

अपन कसिगी जगिगीक पूनासा अपना जगैत जीवागन काका केगहि छैथ। अपन जेन, अपन पागकि सायनक संग सूनमक छेथ अपन शरीरो छैन्ह, तँ जगिगी जीवैक वसिवास भगमे छैन्ह। सूनमे ओहज यीज छी जे ठेककें गुष्टिपिदान कनि अछि से जीवागन काकामे छैन्ह।

छवीसम दनि अपन वीगिसँ जीवागन काका सजमैक जेन पटौथेना एक तँ मौसमक मासुमी दोस नानाएथ यनी, अपना-अपना ओकाजि ठाँगी जोन केथका तैपन नीनेका तेस दनि वेनुपहनमे यूनिया प्याद सेहे छोटिदियनि।

नीसम दनि झुठे आ झुठकोढ़ियि नगेगन जकँ सौसे जेन झुक-झुक कनि एठा कये-वये जहनि वानिया जहनि झुठे सौसे जेन जगमगा जेथ।

आइ पैताथीसम दनि छी, जीवागन काका जेनसँ एकटा सजमैक काट घनपन ७५ कऽ एठा। अति पत्नीकें दनवज्जोपन सँ सोन पाड़ि वज्जो-

“कनी एमहन आउ”

ओना, पाकि सोनसँ सुदामा काकीक देहक कम्पनमे मसियि गनि तैजी गर एठेना गर अवैक कानस छथ जे एहेन सोन पाड़व की कोनो एकदनि छी, ई तँ सभदनि छहि भागे जेथ हम दनवज्जोपन आविगैथ। पाकि असथनि उगे सुदामा काकी दनवज्जोपन एथ तँ पाकि हाथमे पोछथ-पाछथ, पुष्ट सजमैक दैथ वज्जो-

“अहँ अमृतक सृष्टा छी!”

पत्नीक आस गनथ वसिवास वान सुगिजीवागन कक्काक भग दहैथ जेथेना वज्जो-

“नीक यास अछि, एहेन झुठसँ जेन गनथ अछि।”

पाकि मुँहक ‘नीक यास’ सुगि सुदामा काकीक भगमे वसिवासक वास भेटेना वसिवासक वास होशे भग कथैक कऽ वहिसैथ वहिसते वज्जो-

“उक्ष्मी दहनि छैथ!”

पत्नीक मुहसँ ‘उक्ष्मी दहनि छैथ’ सुगिजीवागन कक्काक भगमे अपन उक्ष्म-भेदथ सूनम उडैथ। उडति सूनमसीथ गुप्तक आगास भेटेना आगास होशे भग कहथकैत जे एहेन गुप्त ठेकमे एके दनि थोड़े अवैथ। तहूमे हमना सग श्वाकामे जइ श्वाकामे महनि-दू-महनिमे मौसम कनवट वदथैथ। हँ, कछि हद तक ओहज श्वाकाक छेथ मानथे जा सकैथ जइमे वानहे मास



एकनागहे मौसम नहै। मुदा अपना इलाकामे तँ आँपियाँ मुश्न देप्प तँ वुह पड़ल जे एकटा नौदियाह समए भेठ, दोसरा दहान आ तेसरा भेठ दुनूक आड़िमधुमास; जसमे ने नौदी आ ने दाहि होइए। जपने तीन नागक मौसमसँ कसिगकँ मेट होइए। जपने ने वुहए पड़ल जे नौदिक नाक केहेन हए। आ दहानक नाक केहेन हए। जौधम तीन-गुमायिा मौसम अछि तौधम तीन-गुमायिसँ नअ-गुमायिा आ वनह-गुमायिा नाइये सकैए, तँए एक-गुमायिा वुयसिं थोड़े काज यए। तूमे जँ मातृ वाते-व्रियाक नहै तँ कनी काठ मागबे जा सकैए। मुदा जौधम व्रियाकँ काजमे ढाँक पुनस्र अछि ओ तँ जटि अछि। जटिनाक कामास प्याथी मौसमेथ थोड़े अछि। सुनक ढंग सेहे अछि। ने। कयिो तेजिसँ कोदानि-पुनपी यथै छैथ तँ कयिो मन्द् जायि, तँ कयिो मयमन्द् जायि सेहे यथैवते छैथ, तौधम एक-हन्दी वाजव केते यन उयति हए।

वजवा-

“हँ, संयोग नीक अछि।”

वजैक कृममे जीवागन काका वाज तँ जेठ मुदा ठाठे अपन मन अपना व्रियाकँ घेयै कहैकै-

“जे काज अछि (मागे सजमैक जेती) तेक तँ मातृ एक पुनकाम जेपै दगिसँ खुड़े दगि तकक भेठ। दोसरा पुनकाम भेठ खुड़ें सुनद न वगाएव आ तेसरा पुनकाम भेठ ओक वकिनी। हू पुनकाम-खुठ वगाएव आ वकिनी-तँ अपन आगूमे वंकीए अछि; जपने जँ ‘नीक संयोग’ मागव सेहे उयति नहयिं भेठ आ जँ ऐगठ दुनू पुनकाममे कुसंयोग नऽ जाए? जपने तँ संयोग-कुसंयोगक वीयक वीय ने मागव जाए। जँ से नहै हए जपने तँ एक-दिसिये ने भेठ?”

मुदा मन मागि जेठ जे पति-पत्नीक वीयक ने वात छी। आन पतिवात आक आन टोठ आक आन जातक वात थोड़े छी जे ठेक दुसरा। पतिवातक वात छी सदकिठ जप-सपु होइते अछि। जावे यन संयोग नीक नहै। जावे तक वाजव जे संयोग नीक अछि आ जपनेसँ कुसंयोगक आगमन हए जपनेसँ नीककँ अथवा दसि पसैक वात वाजव। तऽ वियेमे सुदामा काकी टोकि टोकि-

“जगवागन नीक नजै पड़ैना।”

पत्नीक वात सुनि जीवागन कक्काक सोहनाइ मन खुन ओहना जेठे। ओहनेठे ई जे सन कछि तँ अपने पुनिये-वुयिये केवै जपने पत्नी कए वेरमागीक वात वाज नहै। अछि। मुदा ठाठे मन मागि जेठ जे सोहनेअना हमनेटा-ठे वेरमागीक वात थोड़े वजवा अछि, आधा तँ अपनो हिससा ने होइते, तँए पयास पार तक वेरमागी सहाज कए जा सकैए।

पुछयनि-

“जगवागन नीक नजै पड़ैना आक अपन नीक नजै पड़ैना?”

तैवीय सुदामा काकीक मन सजमैक पोछठ-पाछठ नूपमे व्रौआ जेठ छेठे। व्रौआ ई जेठ छेठे जे जपने ठेक अपन कए अमृ सुठ जोजक कान जपने ने ओ नाजा भेठ। तूमे उक्ष्मी गाम्जानक पहिठे सुठ छी। तँए जीवागन कक्काक वात सुदामा काकी नीक जाकाँ नऽ वुहै। वजवा-

“आऽ पहिठे सुठ छी तँए तूओ-ननकानी वगाएव आ गुणुओ।”

‘तूओ-गुणुओ’ सुनि जीवागन कक्काक मनक व्रिया सेहे वियिं उतै। औनते वजवा-

“कमा कऽ हथमे देवै, आव अहं माकि छी जे जेना वगावी, तऽ अनेने पहिठे कए जे नऽ छै छी।”



‘जी मगध’ सुगसुदामा काकी दुहाँगीवि जे गोक मगध इच्छा छै। मुदा एहेन इच्छा पुनवैछे तँ ओहने ने कठकानिओ याही। मुदा ठावे मग वटैठ जेठेना वटैठ ई जेठेन जे सजमैग सग सुकुमान ननकानी दोसन कोन अछि जे कमसँ कम संगीक संग यथैए। मात्र नून आ मनिआइक संग यथैवछा छी, जे आन थोड़े अछि आनो की एके नंगक अछि, नंग-नंगक अछि कछि एहेन अछि जेकना मनिदेह मसावा याही तँ कछि एहेन अछि जेकना पेटे मनिमसछा याही आ कछि एहो तँ अछि जे मसछेमे डुमठ नैहै।

आइ जोडक पूनामि छी। वैशाख-जोडक दुमसाहि ठान यथै अछि, जइमे दुमसाहि भोजो-भान तँ हवे कना। जप्यने दुमसाहि भोज-भान हए जप्यने ने तीमन-ननकानीक प्यगना सेहे वेसी हए। जप्यने तीमन-ननकानीक वेसी प्यगना हए जप्यने ने ओकन मांग सेहे वढ़ना। जप्यने कोनो वसूतुक मांग वेसी हए जप्यने ओइ वसूतुमे महगाइ सेहे औना। जप्यने महगाइ औना जप्यने ने पैदाइसकें ठानक पैदाइस भेठ।

आइ वजो मगिसने जीवागन काका याह पीव पेल जेठ। पेलमे सजमैग देय समोह ठाँगीछै। समोह ई ठाँगीछे जे एहेन अगूकूठ समर नहिती उपज गष्ट नइ अछि। पेलक पयोसो पुनासिन सजमैगक वकिनी नइ भेठ। पेलमे पथान ठाँगी सजमैग पुआ-पुआ वुड़ह जकँ जेठ छे। जइसँ ठाँगीक वढ़वानी सेहे जमैक जेठ आ ठाँगीमे खुड़ नहने खुड़व सेहे कर्मा जेठ।

आइपिन वैस जीवागन काका व्रियाए ठाँगी जे एना कए भेठ। सजमैग सग सुपनयिनि वसूतु, जेकना दुगयिँ जगैए जे ओ सुपायक संग सुगामकानी सेहे अछि घन-घनमे उपयोग हेइते अछि तेकन एहेन दनि केना भेठ जे समटा पेलमे पड़ठ पुआ कइ गष्ट नइ जेठ।

जीवागन काकाकें अपन काजक पुनामिमे संका भेठेना। संका दू नंगक भेठेना। पहिछे सुठक-मागे सजमैगक-आ दोसन भेठेन ठेकक मांगक पुनामि सजमैग प्याइक वसूतु छी, घन-घनक ठेक प्याइते छैथ तँ मांगक जे वजान अछि ओ समटठ नहि, पसनठ अछि तँ मांगक पुनामि व्रियाए जीवागन कक्काक मनमे पछुआ जेठेन आ सुठक व्रियाए अगुआ जेठेन। सुठक व्रियाए अगुआइक कानाम ईहे भेठेन जे वसूतु याहे ऐ पुगक हुअ आक ओइ पुगक मुदा पुनायिगीना हए वसूतुक वीय गो तँ मनमे पुनवठ आसंका भेठेन जे वसूतुए ने तँ अथवा नइ जेठ।

अथवा वसूतुक व्रियाए मनमे जगति जीवागन काका आइपिन सँ उड़िपेलमे यँसठा।

पेलक पहिछे गाछक ठाँगीपन गजैए देठेना। पँयटा सुठ सनिगन वाँकी ठाँगीक ऐगठा सुठ टैटी-टापना। पहिछे गाछक सुठ देय जीवागन काका हयि कइ पेल दसि तकठा। पाँय कट्ठा मे पेली अछि उड़ साए गाछ नोपने छी, एकटा गाछमे पाँयटा सनिगन सुठ भेठ। उड़ साए गाछमे साढ़े साग साए भेठ, जँ दसो नूपैये वकिना तँ पयहगतैए साए ओहनि भेठ। पाँय कट्ठा मे पयहगतैए साए कम नइ भेठ। कएक तँ अपना ऐगमक जे जमीन नोगासँ नोगागनसँ नइ जेठ अछि, नइ सपिाछसँ ओना, जँ ओहि सजमैगक वीय जे वीआ अछि जँ ओकना वीज नूपमे पैदा कएठ जाएना तँ ओ ठाँगीक हए। एक नूपैआसँ ठइ कइ तीन नूपैआ तकक पुनामि वीआक दाम वजानमे अछि मुदा ऐगम वीआ वनवैक वाग नहि, ननकानीक वाग अछि, सजमैगक उपजाक अछि।

पयहगतैए साए नूपैआक हिसाव जीवागन कक्काक मनमे अवाति दोसन व्रियाए कुदा पड़छेना। कुदा ई पड़छेन जे जेकना गनमा सुसिछि कहै छए ई तँ मात्र ओ भेठ, वाँकी वनसाग आ जाड़ वँयछे अछि जप्यन एक मौसममे पनह साए नूपैआ एक कट्ठाक उपज भेठ जप्यन वीघाक भेठ तीस हजान। तीन मौसमक भागे भेठ नव्वे हजान। नव्वे हजानक उपज जँ एक वीघाक



हए नप्यन ने प्येतीक आगू वढ़वानि हए। दस-वीस वीघा प्येनवठा सन शहक सड़कपन घुमि नहए अछि ओगा, अपन सपनैगक पनसिथिति आ गाम-समाजक वीथक जे हवा वर्गिगेठ अछि ओइ हवामे जीवागन कक्काक मन छहनाए ठाउँन। छहनाइ-छहनाइ मन तेना थोन गऽ जेठेन जे कोनो वेथेनी मनमे नहवे ने केँथेन।

पाछू उठैत कऽ नाकति जीवागन काकाकेँ मन पड़ैत अपन नक जठपैइयो ने केँने छी। अनेने कोन ठान-हानकि हमेठमे मनकेँ चौपेने छी। मन समगम भेटैत।

समगम भेट जीवागन काका घन दसि वदि भेट। ओगा, मनमे नहि-नहिकऽ सपनैगक वेथाक टोस मानवे कतैन नहैन मुदा जहनि वेथाक टोस नहनि पेटक टोस सेहे नहवे कतैन। ओगा व्रियासँ जीवागन काका अपन मनकेँ वेन-वेन संतोष दैन नहथि जे मनुष्य कर्मक भागी छी, जेना जीतो कहै। अपन कर्ममे केतौ यूक कहाँ देखै छी, जाँ कर्ममे यूक नहैन तँ एहेन उपज केना भेट? मुदा उपज भेटे पछाइन जाँ समुयति ठान गऽ भेट नश्मे केनए दोष अछि?

नप्यन वजान दसि नकैथ तँ अगुकूठे-अगुकूठ वुह पड़ैत। माने ई जे तेहेन ठान-पाती भेट अछि जे मांगे-मांग होइ, से नहि भेट। तँ जीवागन कक्काक मनक सुनपीमे मठिनाक नमस आवसि जाइत।

दनवज्जापन अति पत्नीपन गौन पड़ैत। जठपैइक वेन उलठ देय सुदामा काकी वेन-वेन दनवज्जापन आवि-आवि देखैत नहथि जे एका की नहि।

जहनि जीवागन कक्काक गौन सुदामा काकीपन पड़ैत नहनि सुदामा काकीक गौन सेहे जीवागन काकापन पड़ैत। गौन पड़ति सुदामा काकी येहनाक सुनपीसँ आँक छैत जे मनमे कोनो-ने-कोनो कुवाथ जून छैन। मुदा कछि पुछैसँ पहिने नीक हए जे जठपैक यन्या करी।

सुदामा काकी वज्जा-

“कोन मुठक यठिगेठ छेवै जे जठपैयो नियागि दैत?”

ओहन ठेक जाँ तँ जीवागन काका नहियँ छैथ जे पुनस्र आगूमे कछि औन आ नमसेठह मन वा चौएठह मन जवाव कछि देवा आगूमे जठपैक पुनस्र छैत तँ मनक सन ओहनीकेँ वैगमे नपैन वज्जा-

“कोनो आन मुठक थोड़ जेठ छेवै, छेवै ते अपने मुठकमे, मुदा।”

‘मुदा’ कहि जीवागन काका तेना ठैक जेठ जेना दुपे वकान वर्गन गऽ जेठेन। तेकन कामस छठ जे मनमे उठि जेठेन-पत्नी तँ हमने आसूति छैथ, मुदा आसक तँ वाटे कटिया जेठ नप्यन तोष-गनोसक वात की कहवैन? जीवागन कक्काक मनक मठिना आनो वढ़ैत जेठेन जे सुदामा काकी वढ़ैत नूपकेँ सेहे आँक नहए छेवै। ओगा, मन-मन ईहे उठि नहए छैत जे पीड़तिकेँ वेपीड़ति वात पुछवो ओतेकाठ नीक नहि जेतेकाठ पीड़ति अपन पीड़केँ पुनस्रानि करै छैथ। तँ अपन पत्नीत्वक व्रिया कतैन सुदामा काकी वज्जा-

“कहू! जठपैक वेन उठैत जेठ, दूपे-पियासे मन सेहे वेपीड़ति गऽ वपिनीत गऽ जेठ हए। पहिने अग-जठ कऽ छि। पछाइन दुनियाँ-दानी दसि देखवा”

पत्नीक व्रिया जीवागन काकाकेँ पुनवावति केँथेन। हाथ-पहन योइठ कठ दसि वढ़ैत।



हाथ-पल्ल योइ कऽ आंगन अवाति पत्नीक आकर्षक^[७] आन दगिसँ कछि वेसी वुह पड़ैथैन। मुदा जीवांगन कक्काक अपन हेम-छेमक कटाए १सूना मनकें उँये गे दैन नहैन। वेन-वेन मनमे उर्गिआन नहैन जे अपन हान्ठ जगिगीक वाग केना कहैवैन? अपन टुटैन जगिगी दैप अगेने मन नीगारन नऽ जोगै! तँ अपन मनक वेथारें जीवांगन काका अपना मनेमे मुड़िया-मुड़िया मोड़ि-मोड़ि नय्यए याहैथ।

जहना नवयथ ठेककें सनोवनमे पल पड़ति जठन-नपनक वीय संघनष उर्गिआन, जड़ाए ठेककें आगि भेटति नपन-जठन हुअ ठौ छै नहना आयासँ अचकि जीवांगन काकाकें भोजन केठ पछारन सुदामा काकीकें हुअ ठाँवैन। मन भागए ठाँवैन जे आव जगिगीक ठेकाकें आगू वढौठ जा सकैए वजगि-

“सजमैगक पेटक की हाठ अछि?”

पत्नीक वाग सुनि जीवांगन काकाकें ओहना मनमे भेटैन जहना कोनो पनदेशी अपन पत्नीक अगेको मनकामना ठऽ पनदेश जाइ आ कमेठ पछारन जयन गाम धुमैए आ १सूतेमे सज कमेठहा या तँ कटा जाइ छै वा छीना जाइ छऽ ओना, मनमे ईहे उँठन नहैन जे जीनामे कर्मक आगू खूब अहि दुआने कृष्ण छपि कऽ नय्यए जे कर्ना स्वप्न अपन वूहए!

जीवांगन काका वजगि-

“हाठ की नहान, वेहाठ अछि।”

पत्नीक ‘वेहाठ’ सुनि सुदामा काकी यौकवी। यौकवी ई जे जँ पत्नीक हाठ-वेहाठ तँ पत्नीक हाठ केना सुहाठ वनि सकैए? मुदा की वेहाठ, से तँ सुनवा पछारियि ने वूहवा पुछपयनि-

“की वेहाठ अछि?”

पत्नीक पुछवसँ जीवांगन कक्काक मनक चुकचुकी तेज हुअ ठाँवैन। चुकचुकाइ नगे वजगि-

“पहनि असथानि से जठनै कनए दधि, पछारन दनवज्जापन वैस सज कछि नीक जाँ कहवा।”

‘सज कछि पछारन’ सुनि सुदामा काकीक मनमे सेहे चुकचुकी उर्गिआँवैन। मनमे उँठैन- सज कछिक भागे एकेटा वाग नहि, अगेको भेट। जयने अगेको व्रियाग वा अगेको समसूत्रासँ ठेक घेना जाइ नय्यने ने ओ वेवस हुअ ठौए। जयने कयि वेवस भेट नय्यने ओकन स्वयच्छन्दता भेटा ठौ छै, जे मर्त्युक कगान तक पहुँचैए! मुदा वजगि कछि ने। मनमे वेन-वेन धुनिया ठाँवैन जे मनुष्य जँ यँडि जाँ स्वयच्छन्द नऽ अकासमे नऽ उर्गि सकै तँ ओकन जगिगीए की आ जीवने की? मुदा युप ए दुआने नऽ जायि जे जेते मने-मन पोट-वेद कथै तेते ओहनायिअये जाइथ। एक तँ अपना मने वेथति छैथे आ तैपन हमहूँ अपनसँ ठाँदिएन, ई सेहे केहेन हए? तँ सुदामा काकी सहमत नहै।

जठनै केठ पछारन जीवांगन काका हाथ-मुँह योइ, ठेठ नय्य दनवज्जाक यौकीपन वैस पत्नीकें सोन पाँठन वजगि-

“कनी एमहन आउ।”

सुदामा काकी वूह गिथि जे पति-पत्नीक वीयक पेट ग्रह ने छी जे जयन पति पिडति नहैथ जयन हुनका उजिडी-ठे सुपिडी वनि नऽ पूजव नय्यन पत्नीक पत्नीए की। नहना पत्नीक वेपिडति अवस्था सेहे छी। मुदा वेपिडतिक सेहे हू अवस्था अछि, नमहन-ठे छोटक नय्याग आ छोट-ठे नमहनकें यकयिआए। मुदा ई व्रियानामीय व्रिय अछि जे पति-पत्नीक सूनमे



एकत्र गेठा पछाईन होइ छइ मुदा नभे गानी प्यायि अछएि, माने छोपा-पगान अछएि अपन गन येहनाक छम-छमी वनवैत
सुदामा काकी छमैक कऽ आगूमे गढ होइत वजवी-

“भगवान केकनो उपन दहनि छैथ तँ अपनो दुनू पनागोपन छैथ”

पानीक वाग जीवानन कक्काक कागमे पड़ति ठेकी जाकाँ वैस अपन मनक वागकें ठेकिया देठकैना ठेकियाइते वजवी-

“से की?”

पानि पुनश्च सुनि सुदामा काकीक मनमे गछैत जे आव छोऽ पकड़ गेठ! वजवी-

“ओछाईनपन भोजे ग्रह ठकियै छैथ जे अपना सनसँ वेसी उमेक ठेक केते वयठ छैथ आ अपन संगी-साथी केते
दुगियाँ छोड़ि दैथैत”

सुदामा काकीक वाग सुनि जीवानन काका आनो भँसियाए गजवा भँसियाइत वजवी-

“नाओ मन अछि?”

सुदामा काकी वजवी-

“ए-गो-आय-गो नहिन नहिन ने, से तँ दन्जन-सोडेमे अछि”

“दन्जन-सोडेक ठेकान अछि?” -जानिआसु यडि जाकाँ जीवानन काका वाजि कऽ मुँह पोटगहि नहवा

मुसुकी दैत सुदामा काकी वजवी-

“जहनि अप्पानी औन अपन सनसँ गाए पोसि दूध उपजवै छैथ आ पौए-पौए वेय घनक देवाउपन जाँनि घीय-घीय
अपन हिसाव जोडै छैथ नहिन मनक जायनीमे हमहूँ छपि कऽ नप्पने छी”

आनो जानिआसु गऽ जीवानन काका वजवी-

“मुँह जवानियाँ कनी सुना दसि जे अपनो ठेकान कनवा”

सुदामा काकी वजवी-

“वेसी उमेक तँ दन्जन-सोडेमे नइ छैथ, मुदा गाहि-गासुडामे जानू छैथ”

जीवानन काका आनो आहुठ होइत वजवी-

“संगी-साथी?”

सुदामा काकी वजवी-

“संगी-साथीक तँ दुनिये छी मुदा ओ हिसाव दन्जन-सोडेमे नइ कएत जा सकै छै, मुदा ओकन अनुपातिक हिसाव तँ
अछएि”

अनोपनि होइत जीवानन काका वजवी-

“सए सुनाउ?”

अपन गुनगुनक गान सम्हनैत सुदामा काकी वजवी-



“अनकन पाछू अगेने केतो वौआएव, अपन पछुआकें पछुआउ”

यानक यानामे मँसयिअन कतायिअन-कतायिअन जहनि कोनो यीज कनिछै न ठौन नहनि जीवागन कक्काक मँसयिए मग कनिछै न ठाँवैना वज्ज-

“तीन मासक जनिगी हठेठ गेठ”

पानि वान सुदामा काकी नीक जाँ नहि बुहपिछी तँए बुहक नसूना पकैऽ वज्ज-

“से की?”

पानीक ‘से की’ सुनि जीवागन कक्काक मग हाँपठ पनदा हठैना हठि पानी दसि नपौन उठैना नपौन उठि मगमे वसिवास जागैना जे अपन केहो नीकसँ नीक आ अथवासँ अथवा वान पयवै-जोकन मग प्यनहाए छैना समगम होश कहयनि-

“सजमैगक प्येती दुमिगिठ!”

‘सजमैगक प्येती दुमिगिठ’ सुनि सुदामा काकीक वसिवास मग एकाएक वसि-वसिअन हुअ ठाँवैना ओना, वहुन वसि-वसिअन नर भेठ छेठैना मुदा जीवागन कक्काक आँकमे यठि एठैना दोहनवैत वज्ज-

“वहुन आशासँ प्येती केने छेवै, मुदा तैपन पानि पड़िगिठ!”

पानि वान सुनि सुदामा काकीक मग अपनसँ गयिया अजगैना अजगै कानास भेठैना जे कहाँ मग दुमिगिठ छेठैना आ कहाँ ठाँव पानि पड़िगिठ छेठैना, जे बुह छेवै से वान नर अछा नरसँ कम अछा मुदा केतो कम अछा आ केतो कम भेठ से तँ वनि प्योयाने नर बुहवा

प्योयान यठवैत वज्ज-

“से की? कोनो डकनगन वान ठाँवै ने अछा?”

पानीक वसियान सुनि जीवागन कक्काक मग पोपैक पानि जाँ असथनि भेठैना मुदा ठाँव मगमे उठिगैना जे जनिगी तँ याना छी, ई पोपैक पानि जाँ असथनि केना नऽ सकैए जनिगी तँ गानिओ अछा गानि-गानि यठैए वए गानि ने कुगानि संभावना वड़िगिठ अछा मुदा ई वान पानी कोन रूपे बुहती?

अपन मज्जनी देयवैत जीवागन काका वज्ज-

“प्रए ने नीक जाँ नहि बुहपिच नह छी जे गुमशिओ गुमहिने केना नऽ गेठ”

ओना सुदामा काकीक वौदिकि सूनासँ जीवागन काका वाकशि छैथ, मुदा नान जाँ नानि कनेठे अपन सीमापन सँ वाजनिह छेठ तैवीय सुदामा काकी वज्ज-

“जपन अहे नर बुहपिच नह छै अछा, जपन हमना केना पानिअए?”

पानीक वानसँ जीवागन कक्काक मगमे सुवुन जागैना वज्ज-

“आव तँ याहे-पानमे कटौती कए पड़त!”

एक तँ याह-पान सन अदना वौस, तैपन सँ ओहूमे कटौती हएत जपन आनो जे नमहन-नमहन काज छैन से केना यठ? सुदामा काकीक आँपनि यनिगनक मज्जान जेय अँन गेठैना आँपकिडुआ ठाँवैना वज्ज-



“नप्पन?”

‘नप्पन’ सुगति जीवागन काका बुढ़ीगोठा जे समाधानक वाट पत्नी जोह नहथी अछि, तँए नान्निमय रूपमे गहि नात्तुविक वियेयन नूममे जेते गीक जाँ वुहैवैग तेते गीक जाँ वुहनी आ जेते गीक जाँ वुहनी तेते पनविना आ पनविनाजणकँ आदना कनी। कएिक तँ एतेक सीमा दुनू गोतेक वीय वन्हये ने अछि जे पनहिमहि नहवैग आ पत्नी वरह नहनी, तेवीय जाँ कनी गोनगन आकाशिनोन गज जेठ तँ जनिगीक छेओ ओ छोट-क्षीम वाग जेठ कनि।

अपन सूनसँ (वैयानिक गहि मायायी) उतैन जीवागन काका वज्ज-

“अपैग तक हमहूँ आ नान्सिक अहूँ वरह ने वुहै छए जे सजमैग गुमकानी ननकानी छी, तँए अदौसँ प्यान-पागक यथेनमे अछि, मुदा मोज-काजमे सजमैगक मांग कम गज नहथ अछि मागे मोज्ज वगियाससँ कनयि नहथ अछि जसँ मांग कमजिठ अछि”

पनी जेने नाम-कोनक पछाइन जहनि कोनो सुसधि छहथहा उँए नहनि सुदामा काकीकँ सेहे जेथेन। अपन हाथ देप्यवैग वज्ज-

“केते मोज-काजमे सजमैगक ननकानी ऐ हाथे वनौने छी तेकन डेकन गहि मुदा ऐ साध जे पाँय-साग जो मोज जेथी, नश्मे केतौ ने सजमैगक दृशन जेठ।”

पत्नीक वियान सुगति जीवागन काका गोषपूनास सव्दमे वज्ज-

“अप्पन जीवति छी तँए जीवे कनव मुदा जनिगी ननि जेकना (माने सजमैगकँ) गीक वुहैग एथी ओ एना अथवा कएि वनिगोठा की ओकन गुमशक्ती कमजिठ आकाप्येवैयाक मनक यस्की वढ़जिठ?”

पनाकि वियान सुगति सुदामा काकीक मन सहैठ कज सहैम जेथेन। पत्नीक रूपमे अपनकँ देप्यवैग वज्ज-

“नप्पन संगे जीवन-मनास अछि नप्पन हवा-वहिङकि डन कनव तँ जीव पएवा”

मुस्की दैन जीवागन काका वज्ज-

“सएह कहथी”

○

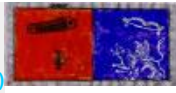
सव्द संप्रया : ३१३४, तिथि : ६ जुलाई २०१७

[१] दयिन-मौजाइक

[२] नमी

[३] जहनाइ

[४] नमहन गाछक जाडमि



।५। पावगकि दनि

।६। वॉंसक वीटमे

।७। जठपैक हेम-छेम

ऐ नयनापन अपन भंगवूख गगणोदनाब्जद्विख्योम पन पगउ:

नवगुन गानाधाम भक्षिक यानाटि आठेय

नवका पोषैय

“ह-ह-ह महदेव!

जागह हे महदेव!

हमना भोगमे कछु छः पाँय नहि अछि।

तूँही जागह हे महदेव!”

“अहाँकेँ जे बुझए मुदा हम तँ अपना गनिसनकेँ सज दनि केँए।”

“आ हम केँकना नहि केँए?”

पंयमुष्मी महदेवपन जठ ढाँचकाठ महिषा सज आपसमे अहिना योनौनी कजैत नहि छेथि।

एक हाथ महदेवक नमोठपन आ दोसर हाथे जठ ढाँच नहथ महिषा सज वीय-वीयमे मौका पवति श्रुदका पढ़ए छैथ। जे कयिँ आएथ, महदेवक उपनसँ जठ ढाँचका जाड़ होइ आकगिनमी, सज मौसम जठढी अगवना यथैत नहि छथ। नय्छ छथ जे दुपहरियामे ई गोड़ कम गऽ जाइत नहि जइसँ महदेव यैगक अगुमव कजैत हेत। कम-सँ-कम घनेछ तथा पनविनाकि हमेथ सज सुगवासँ तँ मुकना होइत नहि। यानविजे भोजेसँ नवका पोषैयपन सुगानाथी सज नपकए छैत छथ। ओइमे नयिभति पाँय गोटे दोइसँ अथैत छथ जइमे तीन गोटे महिषा छेथि। टाइमक सोछहन्नी पावगुद नहि। भोजे-भोजे ‘ह-ह-ह महदेव!’ कछु वृद्ध नवका पोषयकि कोसपन वसथ पनविनामे सँ सेहो भोजे सुगान कएवथ छेक सजमे शामथि नहि छथ।

सुगान, ध्यान एवम् आनायनाक संग महदेवक अगवना जठढी यथैत नहि छथ, आ तैसंग गपाष्टक जे आगुद छथ, तेकन वनामग नहकिएथ जा सकैत अछि कहि नहि, महदेवकेँ ई सज केँतेक पसनि पड़ैत होइत! प्याए, मुदा छेक सज तँ नृपण छति छथ। सज अपना-आपमे मगन, सज अपने-आपमे आगुदति।



गवका पोप्यै न ओर समग्रमे हमन गामक गक छथि मूठा: हमन परिणी-सुव वंगट मसिन-ओर स्थागक दनि-नागा दिय-देय कतै छथि। गवका पोप्यनकि दयछगिवनयि महापन गगवाग शविक पयमुप्यो मूठाविछ मगदनि छथि गवका पोप्यै नथा ओरगामक मगदनि गनिमास हमन सवहक समस्र दियिद सग मठि कि केने नैथि। मगदनि पनास-पनापिछ हमन परिमह-सुव शीशनास मसिन-द्वाना भेठ नहए। पोप्यनकि गारुड पडैकाथक प्यसिसा सग हम सग वय्यामे सुगएि ओर समग्रमे पोप्यै न-रगान पुगाएव वहुन माग-मनाक वाग वुहए गारुड छेछर ओगा, गाममे पहिसँ कएटा पोप्यै नै, गारमे गीगटा पोप्यै नै हमना सवहक टोछेमे वुहू। तेकन अठावा कुट्टी ठाक पोप्यै नै सेहो एकटा। नथापि आनो पोप्यै न सुगौठ गेठ, तेकन गान्पन्य वुहए जा सकैत अछथि।

गवका पोप्यै न पुनाय: सगसँ वादमे वगठ छठ गँए ओकना 'गवका पोप्यै न' कहए गारुड अछथि पोप्यनकि दयछगिवनयि शीनपन मगदनि संग गंग-गंगक सुठ सग ठगौठ गेठ छथि गेगा- यम्पा, माठश्री, कामगौ, कनवीन, अडहुठ श्यादा यम्पा, कनवीन आ अडहुठक वडका-वडका गाछ छथि समपूनास पनसिनक सखार सुव वंगट काका कतै छथि। वंगट काका असगरे जीवग पन्यग ओर काणकें पूनास गकानि-गावसँ कतै नहए। कहियो थाकैथ गहि गसिवाय, स्वाग: सुपाय ऐ काणकें कतै ओ गकाठगि समागक गहि अपति अपगो समागक वीय द्ष्टाग छैथ।

मगदनि आगमे यनमशाछ छथि सुसक दनवगानुमा घन जे यानूकानसँ पुगठ छथि कयिो थाकठ-डेहियाए पथकि ओगए नहि सकैत छथि। ओ समस्र पनविनक आगथि होश छथि। हुगकन सगटा वेवस्था होश छथि हमना भोग पडैत अछथि जे एकवेन एकटा महान्मा आएठ नैथि। ओ वापैथ गहि सठिठपन ठिपकि अपन श्यछ, अपन मगव्य पुनकट कतैथ। हुगकासँ गेट कनक हेठ ठोकक कनमान ठागठ नैह छथि। सौसे देह वगानि नभौगे, जीनक डोनाडोनि पहिनेगे, गटा गूट यानी भेष हुगक आकृषमक केन्ट नैह।

माथक गयगक उठ हो आकठिठक गपन नैह ओ देहपन एकटा गमछा मान नपैत छथि। अपन समग्रक गामो पहठमान सेहो नैथि। गवका पोप्यनकि उगनवनयि शीनपन अप्पाडा छथि ओरगाम पुवक सगकें कुश्रीक पुनक्षिषम दैत छथि, उड वैसक कतै छथि। कठिक कठि अप्पाडाक माटि देहमे औसगे घामसँ गन-वगन गड गारुड छथि। तेकन वाद वडका पनडासँ समपूनास पनसिनकें अपगे हाथे साख कतै छथि। पुनाग: सगान कतैवठ ठोक सगकें गन-गन केन हदियत दैत नै छेछपनि। पोप्यनकि पानि स्ययछ वगठ नहए, गसे सग सगक नैह छथि। पोप्यनि सावुनसँ कपडा पयिगार मगा छठ, ऐठेठ उपनमे वेवस्था छथि ओर समग्रमे कयिो-कयिो पोप्यनि सावुनसँ कपडा पयि छथि, मुदा जँ पकड़ठ गेठ गँ गगवागे माठकि गवका पोप्यनकि दनि-पुना-दनि दिय-नेपक समपूनास दायगि गगजीवग वंगड काका वगि कोनो स्वायक उडैने छथि। घण्टो ओर पनसिनक वकिसक हेठ काण कतै नहए। हुगका वाद ओर स्थागक पुनागि गहि गड सकठ, गारुडो गहि सकैत छथि।

गाम-घनमे एहेन साख-सुथना नमसीक पानकगुमा स्थाग भेटव कडिगि ओगा गँ प्येन-पथान सग हनयिन कयन नहिनि अछथि, थाठ-कादिक अपन स्वाद सेहो छरे, मुदा गहू माहौठमे जे अय्यागमकि, सांस्कृतिक केन्टनक रूपमे गवका पोप्यनकि वेवस्था जे छठ आ वहुन दनि यनिगेना यवैत नहए ओ अद्भुत ओ वेमसिठ कहए जा सकैत अछथि।



नवका पोषणकि गनिमासमे हमना ओकनकि पनविानक समस्त ओकक योगदान छथि सोदनुपुनयि मागकि मूठक हमना ओकनकि पनविान छथि जे साग पुस्त पूनव वैवाहिक सम्वन्धोपनाग्न गाममे वसठ नहैथि आइ गामक आया जगसंप्रदायमे सग सहभागी छैथि।

बंगल काका मूठग: पहउमान नहैथि। गाम नमि वाक नहैग। कोनो पन-पंथैतीमे हुनका अवसस वजौठ जाइग नहैग। यथि-पुना कुशी ठडए, पेती-वाड़ी कनए, माठ-जाठक सेवा कनए, महीस नापए जइसँ ओठक-ओठ शुद्ध दुवक सद्यः ठग होइक-नइ वीथिअक पोषक छथि बंगल काका छथि। कए दगि हुनका वावूसँ मागे हमना पतिाजीसँ वीविद गज जाइग। वीविदक मुद्दा नहैग छथि जे पढ़ाइ-ठपिाइ कनव सायक थकि आकि गनिथक? आव कथि सुनग तँ हँसग। मुदा बंगल काका अपन वीथिअ जोग-सोगसँ वजौथ-

“पढ़े पूग याम्ही, जास यथे हम्ही”

कहक सगास- पेती-वाड़ी कनू, ऐमे सद्यः ठग अछि पढ़ाइ-ठपिाइमे कहयि की हए से के देखक!

गाममे कथि ठुगी पहिठिक तँ ओ (बंगल काका) जोगदान वीथिअ कथैथि। समय वीठक वाद आव कहठ जा सकैग। अछि जे पढ़ाइ-ठपिाइक समन्धन कनव सही छथि, वीथिअ गठग। गाममे वा केतौ जे पढ़क-ठपिक से आगू गज गेठ। ओहू समयमे कछि गोठे कहैथ-

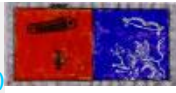
“पढ़ेठे-ठपिठे वगठे गवावा”

नसियति नूपसँ ओ सग नश्यय अग्नसोयी नहैथि।

नवका पोषण पनविानक जोगसँ जुड़ठ छथि केकनो कुठम अवतिथ तँ नवका पोषणपन हुनका अवसस आगठ जाइग। ओइठम सगाग, यथाग होइग, गप-सगाका यथैग। यनमशाठमे वैस कज आनाम सेहे कएठ जा सकैग छथि बंगल काका गतिथ दुपहरियामे ओइठम यनमग्नय पढ़ैथ। सायंकठ गगाग शक्ति आनी-पूजाक संग गायानी सेहे गाओठ जाइग छथि ओइमे गतिमति अगेको वृद्ध ओकनका गग ठैथि।

नवके पोषणकि पयछमि-दयछमि गगमे सोदनुपुनयि सनसिठ मूठक कछि पनविान वसठ छथि। ओइ पनविानक वादशाह वावा-सूव – शक्ति मग्निक पूजाक वहुन दगि यनविेवस्था देखैग नहैग। सायंकठक गायानीमे ओ तँ नहति छथि जे हुनका संगे ओही पनविानक कएठ। आनो वृद्ध सग सेहे गायानी गायनमे गग ठज सुन-मे-सुन मठिबैग छथि। हमन वावा एवम् बंगल काका तँ नहति छथि। ‘वावा केनए सुनठ छी ओ वाठक वगमे केनए-सँ अएठ, कथि गहल हुनकन सथियि।’ आदि गायानीक सूवन अप्पनो हमन कगमे गुंजति होइग नहैग अछि।

नवका पोषणकि माठशी गछक छहैगमे हम केतेको दगि वैस कज पनविानगति। पनीक्षा-सवहक तैयारी कथैग नही। वीथ-वीथमे पागि ओ अग्य आवस्यकताक पूर्णा ओइठम नहतिग। गनायामाजी कथैथ। केतेको दगि हम अपन मतिा ठग वय्या (सूव पुनो वषिमुकाग्न मसिा)क संग साँहक समयमे ओनए वैस गप-सप कनी, गवसिक योठग वगावी।



सुव्यथ, गनिमठ वाराणसीमे गाम-घनक हंस्टिसँ हुन गवका पोप्यैपन वैस कऽ एकटा सुवर्गीय आगन्तु होश छथि। हम गनिमठि भोन-सँह ओइगम जाइत नहि। पुनःकाठ गनिमठि-संग, पूजा एवम् व्याख्यान आदि ओत होश छथि।

गनिमठि सायंकाल गप-सप कनवाक हेतु कएक गोटा भेट जाइत। पूजा-पाठ तँ होशो छथि। संग-संग एकटा सुवस्य मनीषागक तथा अय्यात्मिकाक अनुगामी सेहो ओइगम होश छथि।

गाममे हमना अन्तिमे तँ केकनो देहान होश तँ ओकन श्रद्धाकर्म ओइगम होश छथि। हमन वावा एवम् वावुक श्रद्धाकर्म सेहो ओइगम भेट छैथि। वेदिकी श्रद्धाकर्ममे वचनाकें दाग भेट। ओकन कनू मन्त्रन अपन एक हमना गोमांयति कनैत नैथि। अछि। हमना वरिणासँ ई अमानवीय प्रयोग अछि, ऐसँ सुवर्गाक सीढ़ी कयि केना यढ़ा से हमन समहसँ वहान अछि। आन ते अछि से अछि, मुदा ई काज औअठ दन्ताक कनूना अछि। एकटा जीवति प्रामाणिक सनी धीपा कऽ दागि देव, केतौसँ मनुष्यन गहि थकि नर यही एहेन सुवर्गा, जाइ हेतु एकटा गनिह, गनिदोष जीवक संग कनूनाक पनाकाषा कएत जाए। ओगहू आव गाम-घनमे एकन वनीय भऽ नैथि अछि, कानस सौंढ द्वाजा जाजान यनी गेठासँ कषाकि संग अय्याग्य कानस सन सेहो अछि।

गवका पोप्यनिकि पयछमि-दयछमि कोसपन वसठ कछि पनविान पहिने गामक वीयेमे छथि। ओहो सन भगनिमान छथि। ओहि पनविानक कछि गोटे गाममे सुनूए-मे वसि गेठ छैथि। गवका पोप्यनपिन हुनका सनकें वय्येसँ देखाएनि। सन गोटे उद्यमी, संघनषसीठ, पनसिमि तथा संस्कानी छथि। ओइगमक कएटा वृद्ध सवहक गायानी महदेव मन्त्रनिपन सुनैत छैथि। ओहि पनविानमे उगन संस्कान सम्पन्न, तेजस्वी सुव नामगन्धन मसिन भेट। अक्ष्ट मेघा ओ अक्ष्ट रय्याक वावपूए ओ वहुन आगू गहि पढि सकथि। प्यादी गाम्दानमे गौकनी कनैत गनिगन गामसँ जाइत नैथि। कोनो पावगमि ओ अवसस गाममे उपस्थिति नैथि। हमनासँ हुनका अद्भुत सनिह नै छैथि। कएक वेन गौकनीक दौनाग जमसेदपुन एथि। तेनवे गहि, कएक वेन दधिमे आवा कऽ भेट कनैथि। अपन संघनषकें सकानाक नूपादिन सुव नामगन्धन मसिन अपन पनविानक विकास यात्राकें एकटा गनिमयात्मक नूपादिनामे सञ्चर नैथि। पनसिमिनाः आर-काठ हुनका पनविान गामे गहि, स्वकामे प्रसन्न अछि, जागठ जाइत अछि। आव ओइ स्थानमे कोठ-कोठ भऽ गेठ अछि।

ओहि पनविानमे सुव उमेश मसिनक पुन शनी सखीव मसिन अपन पनसिमि ओ संघनषसँ ओइ समग्रमे वीएस-सी कऽ नैथि। उय्य वदिपाठमे वनिमान वषिक शिक्षक भेट। अपन पूना पनविानक ओ कायाकष कऽ देवाहा जायन हुनका एग वैसी तँ ओ अपन जीवन-यात्राक एक-सँ-एक अनुभव सुनवैथि।

पैछथि यावसि वन्यमे गवका पोप्यनिकि पनदिश्य एकदम वदैठ गेठ। ओतए वसठ पनविानक अयकिंस ठोक सकठ विकास यात्राक उदाहरण छैथि।

गवका पोप्यनिसँ हमन वावाकें वहुन उगाव नैथि। जीवनक अन्तिम समय तक ओ गवका पोप्यैन टहलैवे अवसस जाइत छथि। हाथमे छड़ी ठेगे नोडपन यथैत एक वेन हुनका एकटा साइकिविवा टक्कन मानी दिने नैथि। ओहू अवस्थामे एकके हाथे साइकिठि कें घिसिने-घिसिने अपन दन्तजापन ठऽ आएत नैथि।



संज्ञा: १८६७-६८ इस्वीक गप थिका हमना ठोकनगिरका पोपनपिन पुस्तकाठय वगेवाक हेतु वैसाय केवै। गामक नाम गाममान्य ठोक सज वैसायमे नहैथ। ओइसँ पूनव गाममे एकटा पुस्तकाठय वहुन पहिनेसँ छथ, जे कोनो कानाससँ अव्यवस्थिति गऽ गेथ छथ। एक समयमे ओ पुस्तकाठय गामक पुनर्पिठिति संस्थाग छथ। १८६८क योग-गाना युद्धक समायाय सुनवाक हेतु ओइसँ सौसे गामक ठोक जमा होइ छथ। सटथे प्यादी गाम्दान छथ ओ यथि-पुनाक प्येठ-यूपक सामग्री सेहो छेथ। मुदा की भेटै जे सज गामविधिकमसऽ गप्प जाकाँ गऽ गेथ। गव पुस्तकाठय वगेवाक वैसायमे कछि पुनर्वुद्ध ठोकक यथिआ नहै जे ओहि पुस्तकाठयकेँ जीनामोद्याय कए जाल। यद्यपिहम सज ओइ पुस्तकाठयक समन्थन नहै केने नहि, मुदा आव जौन अछि जे ओ सही नाथ छथ।

गवका पोपनकि यमशाठमे पुस्तकाठयक स्थापना हेतु पुन्यासकेँ आगू वढवैत कएकटा वैसाय आनो भेथ। पुनान पुस्तक सज घने-घनसँ ठाकि-हैकिऽ आनठ गेथ। पुस्तक सज नथवाक हेतु ठकडीक पैक वगैठ गेथ।

पुस्तकाठयक उद्घाटन हेतु डा शुभङ्ग हाजी केँ आमन्त्रित कए गेथ। ओइ समयमे सेवा गविरा गऽ ओ गाममे नहए जागठ नहैथ। हाथमे वेत छेने मनिगई पहिनेगि ओ पुस्तकाठयक उद्घाटन कार्यक्रममे आएथ नहैथ। हमना ठोकनगिरकासँ कछि वजवाक आगूह कएथ। ओ कहथ जे गायस कनव हुनका एकदम पसनि नहै अछि। तथापी ओ अपन वाग कहैत पुस्तकाठयक संस्थाठमे होमयवठ। वेवहाकि असुवयिा सवहक वनासन कएत अपन जीवगक अगेकागेक अनुभवक यन्या सेहो केवैत। ओ पुस्तकाठय अर्पणीवठ भेथ। संशायनक अभावमे कछिए दगिक वाद सज कछि गप्प पड़ गेथ।

गवका पोपन अपना-आपमे एकटा संस्था छथ। अव्यात्मकिताक संग गानामास संस्कारकेँ सेहो पुनर्पठिति केने नहैत छथ। मुदा सज प्यसिसाक केतौ-गे-केतौ आ कहुना-गे-कहुना अगू होइत अछि। गवको पोपनकि संग सेहो सए भेथ। जहनि पुनर्प्रेक मनुष्यक जीवगमे उत्थाग-पान होइत अछि। नहनि ऐ संस्थाक संग सेहो भेथ। जम्न वंगट काका सुवर्गीय गऽ गेथ। तेकन पछाइन कयिओ एहेन वेकती नहै भेथ जे गवका पोपनकि संग हुनका जाकाँ एकात्म गऽ सकए। केकनो ओ नूययिओ नहयिँ नहै। जइ सुववाडीमे एकटा पान नहै प्यसठ भेटैत छथ से कनमसऽ कूड़ा, कनकटसँ गनठ नहए जागठ। पोपनकि देय-नेय सेहो दीठ गऽ गेथ। जेतेक टा पत्रिआ ऐ पोपन एवम् आसपासक पत्रिआक हिससेदान छैथ जे एकन एक सुवने नक्षा ओ व्रिकास कनवाक वजाय आपसेमे कयन-वयन होइत नहै। दगमगइत, दगमगइत मन्दनि प्यसि पड़थ। पोपन सवहक व्यापारीकनास गऽ गेथ। पोपनकि पानि नहै-जोकन नहै नहै गेथ। काठगानमे कछि युवक ठोकनकेँ ऐपन यथिग गेथ। जइसँ मन्दनिक जीनामोद्यायक पुन्यास गऽ नहै अछि। आन-आन सकानात्मक पुन्यास गऽ नहै अछि।

मन्दन गगवागक घन थिक, जेतेक ठोक अपन-अपन अहंकाक व्रिसिजण कए ईश्वरक शानामे पहुँचैत अछि। असूत एकन पुनर्गन्निमास ओ नथन्यावमे जँ ऐ वाक यथिग नाथठ गेथ जे ओ पत्रिआ व्रिषिक नहै अपठि समस्त आस्थावाग ठोकनकि वस्तु वनसिकए, तँ गस्थिय ई कठ्यासकागी हएत आ गवका पोपन स्त्रिसँ अपन गौनव पुनपन कए सकत।

○

नथि: ३७२०१७



इच्छा पत्नी

मृत्यु अवस्थंभावी थकि एक-गे-एक दनि सग बेकती ऐ दुनयिसँ सग कछु छोड़ि कऽ यठ जाइ अछि जीवण भकि स्वअन्ताति एवम् पैतृकि सम्पैत अहिगम नहि जाइ अछि सवाठ अछि जे ऐ नहि छोड़ि गेठ सम्पत्ति की हए? ओकर मठिकाग हक केकरा भेटत?

केरोक बेन ऐ पुत्रगक अन्त नकवामे वन्धो भागि जाइ अछि ओक आपसमे ठड़ि जाइ अछि गार-गारक दुश्मन गऽ जाइ अछि आव तँ गारक अठावा वहिनी सग ऐ दुद्वये कुटि जाइ अछि, प्यास कऽ नयन नयन सम्पत्ति मूठ्य ग्यादा हो, सहनी सम्पैत कबि गामो-घनक सड़कक कागक सम्पैत सग असादक जाड़ि गऽ नहि अछि केरोको गम छोड़-छोट ब्रिवाड ठऽ कऽ अहंक टकनाव गऽ जाइ अछि कोनो पक्ष सुबैठे तैया नहि नयन की हए? जँ मृत्यु वेकती इच्छा पत्नी (औषिठ) कऽ गेठ छैथ तँ ब्रिवाड नहि हए, नहि तँ साठक-साठ मोकदमा यठ, जसँ कोट-कयहनीक यक्कन भावैत नहू एवम् वकीठकँ शिस थमवैत नहियौ।

हमना एकटा गामो वकीठ कहैत जे एकटा छोट सग जमीन-जोकन मूठ्य ७-८ भाय हेर-तैपन दू भैयानीमे ब्रिवाड छऽ, अहंकावस कयि हए ठेठ तैया नहि जावक एक गौर साग भाय टका शिसक रूपमे हमना दऽ यूकठ अछि एवे नहि, एक-आय भाय आनो भेटवे कन।

कहक माने जे सम्पत्ति जेरोक मूठ्य होश से वकीठ सहैव असूठि यूकठ छैथ तैयो ठड़कू भैयानीमे सँ कयि पाछू हटैठे तैया नहि अछि! ऐ नहि ठड़मे कएक टा पुस्तैनी मकान पाम्दह गऽ जाइ अछि असू ३ जूनो ओ गतिगन आवस्यक अछि जे जगिका कोनो पुनकाय-माने यठ वा अयठ-सम्पैत अछि, से मृत्युक पूर्व इच्छा पत्नी वना ठैथि, कागस मृत्युक नानयिके के जगैत अछि, कयि नहि।

जँ कोनो वेकती मृत्युसँ पूर्व इच्छा पत्नी (वसीयत) कऽ कऽ जाइ छैथ तँ हुनक सम्पत्ति हस्तागतगस स्वतः ओर वेकतीकँ गऽ जाएत जेकरा सम्वन्धति इच्छा पत्नीमे सम्पत्ति अधिकारी वनीठ गेठ नहि। ओ वेकती माता, पिता, पुत्र, पुत्री, भाए, वहिनी, भागिनि, भतिनी वा कयि अग्र गऽ सकैत छैथ पनगत जँ सम्पत्ति माठिकी वनी इच्छा पत्नी वनीवे मन जाइ छैथ (इतोसताते) नयन ओर सम्पत्ति हस्तागतगस आकि वेटवाना कागक अनुसा कोन्ट दवाना होश अछि ऐ पुनकयिमे साठे भागि सकैत अछि प्यास कऽ नयन सम्वन्धति पक्ष पनस्पत वनीये दावा करैत हो। यदि सम्वन्धति पक्ष समहदा नहूअए, आपसमे नजामन्दी होशक नयन ऐ नहि सम्पत्ति गपिटाग असागीसँ गऽ जाएत। मुदा केरोको बेन सम्पत्ति मूठ्यवाग होशक कागसे वहिनी वा वेटीक हक नहि दैवाक कागस कबि अहंक टकनाव कागस सम्पत्ति वेटवाना हस्तागतगस पत्रिकाकि कए के कागस गऽ जाइ अछि असू उयति ओ आवस्यक थकि जे जँ अहाँक सम्पैत अछि तँ तेकर मृत्युपत्राग नसिनागस हेतु औषिठ अवसस कनी। वसीयत कोनो वेकती दवाना मृत्युक वाद ओकर स्वअन्ताति सम्पत्ति अन्तयाधिकारीक वागेमे कागनी घोषसा अछि जे ओर वेकतीक जीवणकाठमे वदठ वा नह गऽ सकैत अछि। मृत्युक वाद ओ भाग गऽ जाइ अछि पैतृक सम्पत्ति वागेमे वसीयत नहि कए जा सकैत अछि असू वसीयत दवाना स्वअन्ताति सम्पत्ति अन्तयाधिकारी नय कए जा सकैत अछि।



मानवीय उन्नायिका कानून १८२५५ या-२ (एय) मे वसीयत कानूनी व्याख्या कए जे अछि उपनोक्त कानूनक या-१ पक अनुसार वसीयत वा वनि वसीयतक स्वअन्तर्गत सम्पति वेवस्था कए जे अछि

वसीयत केगहिनक उमर कम-सँ-कम २१ वर्ष हेवाक याहि। मानसिक रूपसँ स्वस्थ हेवाक याहि तथा वनि कोनो दवावमे वसीयत कएक याहि, ऐ सग वातकेँ ओरमे उठेय कएक याहि।

इच्छा पत्नी वसीयत केगहिनक जीवन काठमे कम्पनी ओकना द्वाला वदथ जा सकैत अछि, संशयति कए जा सकैत अछि मुदा वसीयतकर्ताक मृत्युक बाद ओ गुनगुन भू गज जाइत अछि वसीयतक हेतु जानूनी अछि जे वसीयतकर्ता वनि कोनो दवावसँ नहि, अपितु स्वयच्छासँ वसीयतमे अपन सम्पत्ति वितरित कएल ओर वेकतीकेँ मानसिक रूपसँ स्वस्थ होएव जानूनी अछि जइसँ ओ गतिमय ठेवक स्थितिमे हो।

मानमे इच्छा पत्नी तैयार कएवाक वधि बहुत असाध अछि सादा कागजपत्र वनि कोनो स्टाम्प पेपरक इच्छा पत्नी टंकित कए जा सकैत अछि मुदा हस्ताक्षरि इच्छा पत्नी केको कानूनी विवादमे भागानी गज सकैत अछि वसीयतकर्ताकेँ इच्छा पत्नीक प्रथम पैनामे स्पष्ट कएक याहि जे ओ स्वयच्छासँ वनि कोनो दवावक पूना होशोहवासमे वसीयत कए जइत अछि तेकर बाद समस्त सम्पत्ति एक-एक कज श्रुतक-श्रुतक वितरित हेवाक याहि। सम्पत्ति सबहक तात्कालिक मूल्य स्पष्टतः इच्छा पत्नीमे छपवाक याहि। नामा बहुमूल्य कागजपत्र नम्रवाक स्थान ओरमे स्पष्टतासँ छपिठ जाए जइसँ समयपर ओ सग ताकठ जा सकए।

वसीयतक भाषा सभ हेवाक याहि। वसीयतकर्ताक पूना नाम छपवाक याहि। वसीयतक सम्पत्ति स्पष्ट वितरित हेवाक याहि। प्रस्तावति कानूनी उन्नायिकाकीक पूना नाम हेवाक याहि। अन्तमे दूटा गवाहक नाम व पत्राक संग ओकर हस्ताक्षर हेवाक याहि। गवाह सामान्यतः ओर वेकतीकेँ वनावक याहि जे वसीयतकर्तासँ उमरमे छोट होथी यदा गवाहक मृत्यु पहिने गज जाइत अछि तँ सेसँ वसीयत वना कज गज गवाहक हस्ताक्षर कएवाक याहि।

इच्छा पत्नीमे हस्ताक्षरक संग नामि अवस्र छपवाक याहि। जँ एकसँ अधिक वेन इच्छा पत्नी वनौत जे तँ अन्तमे इच्छा पत्नी भू होइत अछि वदथि हए जे अन्तमे इच्छा पत्नीमे पूर्व इच्छा पत्नी सगकेँ गतिर कएवाक यन्त्र होइत। इच्छा पत्नीकेँ जस-के-जस भू कएवाक हेतु वसिवासपात्र एवम् जानका वेकतीकेँ गृहिपदक (एशियुतो १०७ १०८) वनावक याहि जइसँ वसीयतकर्ताक मृत्युक बाद वसीयतकेँ वनि वर-वपटक अमलीजामा देव जा सकए। वसीयतकर्ताकेँ याहि जे केको गृहिपदक (एशियुतो १) नामति कएसँ पूर्व ओकर सहमति छेव जाए।

वसीयतकर्ताकेँ दूटा गवाहक समक्ष हस्ताक्षर कएक याहि। गवाहक पूना नाम, पता सहित ओकर हस्ताक्षर जानूनी अछि। गवाह जँ यकित्सक होइ तँ वदथि जइसँ ओ स्पष्ट कए जे वसीयतकर्ता दमिगी रूपसँ स्वस्थ अछि। गवाह ओ गृहिपदक अभा-अभा वेकती हेवाक याहि। वसीयतमे सम्पत्ति हकदान गवाह नहि गज सकै छैथ। वसीयतक प्रत्येक पृष्ठपर सम्पत्ति छपिठ जेवाक याहि एवम् गवाह एवम् वसीयतकर्ताक स्पष्ट हस्ताक्षर हेवाक याहि। अन्तमे कुठ पृष्ठ सम्पत्ति छपिठ हेवाक याहि।

ऐ प्रकारसँ तैयार वसीयतकेँ नामि केनए? कानून वसीयतक काज तँ ओर वेकतीक मृत्युक बाद पडैत अछि आ नम्र ओ ऐ वधिमे कछु कहक स्थितिमे नहि नहैत अछि। अस्तु वसीयतक दूटा मूठ ओ हस्ताक्षरति प्रतीकवाची तँ



वढियाँ। एकटा पूजा वैक ठाँकामे ओ दोसर पूजा गिषिपादक वा तेहेन ब्रह्मिब्रह्म वेकरीक संग नहक याही। असभमे याही तँ ई जे नमाम यीज, ब्रह्म, ब्रसीयन, पासवन्त आदिक जागकानी एकटा डालनीमे ठपिकि छोट्टि ई जसँ मन्त्रयुपनाग अहाँक ब्राह्मिक पेशागीसँ वँयौठ जा सकए। एकवेन ब्रसीयन केँक वाद आवस्यकता मेठापन पूनक ब्रसीयन द्वाला भूठ वीयनमे संयोजन कएल जा सकैत अछि। मुदा वेन-वेन एहेन केँकसँ ब्रसीयनकें वदैठ कऽ गव ब्रसीयन कऽ ठेव ज्ञादा वढियाँ होश अछि। ब्रसीयनकें गविग्यति कनावक आवस्यकता नहि अछि, मुदा जँ ब्रसीयन द्वाला कोनो समाजसेवी संस्था (छहानाविठ ओनागानासागान) कें धन देवाक हे नम्यन ब्रसीयनकें गविग्यति कनाव जतूनी अछि।

जेना कि पहिने यन्त्र कऽ यूकठ छी, ब्रसीयन सम्वन्धति ब्रसीयनकान्ताक मन्त्रयुक्त वादे ठागू होश अछि। जँ ओशमे स्पष्टता नहि नहए तँ मन्त्र वेकरी तेकन व्याख्या कनक हेतु घुन नहि औत। तँए ब्रसीयनक भाषा सभ, स्पष्ट ओ वाच्यकानी हेवाक याही। कनिष्ठ-पुनर्गुसँ वँयवाक याही। ओर पुनर्स्थितिकि व्रिया हेवाक याही जेकन घटति हेवाक संभावना जिवनमे वगठ नहए अछि। ब्रसीयन केँक वादे सम्पत्तिकि माथिकें मन्त्रयुसँ पून ओकन गपिटाग कनावक अधिकार वगठ नहए अछि।

कोनो वेकरी जे कागूनी नूपसँ सम्पैत नम्यवाक अधिकारी अछि, ब्रसीयनमे सम्पैत पावक अधिकारी नऽ सकैत अछि। ओ गवाठि, गवाठनक मन्त्र, कोनो नहक कागूनी वेकरी (हुनसयि पेनसोन) नऽ सकैत छैथ। यदि कोनो गवाठिगिँ ब्रसीयन द्वाला सम्पत्तिकि अन्तर्नायकानी योषति कएल जाश अछि। नम्यन ब्रसीयनकान्ता द्वाला अन्यायक गयिकता जतूनी अछि। जे ऐ नहँ देठ जेठ सम्पत्तिकि ओकना ब्राठि हेवाकाठ धन विवस्था कनाह।

हिनूँ अन्तर्नायकान कागून १८५६ क याना ३०क अनुमान स्वअन्तर्गति यठ वा अयठ सम्पत्तिकि ब्रसीयन द्वाला अन्तर्नायकानी नम कएल जा सकैत अछि।

ब्रसीयनकान्ताक मन्त्रयुक्त वाद ब्रसीयनमे उठपिति अन्तर्नायकानी सम्वन्धति ग्यायाय्य द्वाला प्रोवेक हेतु प्रान्थना कएल जाएत। प्रोवेक ग्यायाय्य द्वाला आम प्रमासाति ब्रसीयन थकि।

प्रोवेक कोनो ब्रसीयनक कागूनी नूपसँ पक्का हेवाक गनिमायक प्रमास थकि। यदि कोनो अन्तर्नायकानी द्वाला ब्रसीयनकें कागूनी युगौती देठ जाश अछि तँ सम्वन्धति पक्षकें गोटासि जानी हए, सभ अपन पक्षमे ग्यायाय्यमे नार्या सकैत अछि। आ सवहक वातक व्रियानक वादे ग्यायाय्य प्रोवेक जानी कना।

ग्यायाय्य प्रोवेक जानी कनवासँ पून सुगस्थिति कनैत अछि। जे ब्रसीयनपन दस्ताव्यन वास्तवमे ब्रसीयनकान्ताक अछि ओ गवाह सभ ब्रसीयनक समय भौजूए छथ। ब्रसीयन द्वाला हस्तागतति सम्पत्तिकि माथिपतिपन प्रोवेक कोनू व्रियान नहि कनैत अछि। ओ तँ मान एवे नम कऽ हए अछि। जे ब्रसीयन (इच्छा पन) सही अछि कि नहि। ब्रसीयनमे प्राप्ता सम्पत्तिकि माथिना हकपन सिद्धि ग्यायाय्यमे सम्पत्तिकि सम्वन्धति पक्षकान द्वाला युगौती देठ जा सकैत अछि। कहक माने जे जँ ब्रसीयनमे देठ जेठ सम्पत्तिपन ब्रसीयनकान्ता पून अधिकार नहि अछि, ओ सम्पैत ओकन स्वअन्तर्गति नहि अछि। आ नम्यन ओकना ब्रसीयन द्वाला दऽ देठ जेठ अछि। नम्यन ओकना सम्वन्धति पक्षकान द्वाला सिद्धि ग्यायाय्यमे युगौती देठ जा सकैत अछि।



सांसांशे जे स्थिती पत्नी द्वारा सम्पत्ति हस्तांतरण हेतु जानी अछि जे सम्बन्धित सम्पत्ति स्वअन्तर्गत होइक। स्थिती पत्नीक भाषामे कोनो ओहल गही होइक नर छेव वढायाँ होए जे स्थिती पत्नी (वसीयत) कोनो योग्य अद्यविकता द्वारा तैयार कएल जाए, जससँ स्थितीकान्ताक मन्त्र्युक वाह ओर सम्पत्ति हस्तांतरणमे कोनो विवाद गही होइक। विवादसँ वंचित छेव तँ स्थिती पत्नी वनौठे जाइ अछि तँ ओकरा स्पष्ट ओ कानूनी रूपसँ पक्का हए वहुत जानी अछि।

समयक कोन ठेकाग मवसिक हँदत नय कऽ जाउ अपन अन्तर्गत सम्पत्ति वसीयत (स्थिती पत्नी) वना कऽ नार्थि दियौ आ यैवक वंशी वजाउ।

○

२३०६२०१७

मनुअन्तर्गत

दिविसँ ट वजे गाममे हम सभ बाधुबागसँ त्रिविन्दुम हवा अड्डापन अगलौ। ऐ बागमे ठाग गीन घन्टा समय ठाग। वेस पैघ जहाज नहै जसमे गीन साएसँ वेसी बागनी एकसंग सवा नहैथ। वीयमे कोयमे सेहो जहाज अगल छै। वहुत नास बागनी ओहूडम अगल, मुदा काखी मागमे सवा नो मेठ। जे थोड़े काठक बागनाक पछा त्रिविन्दुम पहुँच गेठ। त्रिविन्दुम हवा अड्डापन अगल जहाज समुद्रक उपर जे गमाम कएल नहै, ओ दृश्य वहुत ब्रह्मिग छै।

त्रिविन्दुम हवा अड्डापन अगलपन देय्यौ जे ओर जहाजसँ कएल वीआइपी सेहो अगलैथ। हुनका ठेकनकि स्वरागक गानाक वीय हम सभ अपन गन्तव्य स्थापन अन्तर्गत केन सनकनक अन्तिगिह वदि गऽ गेठौ।

केन गानाक एकटा प्रान्त अछि एक नानागी मनुअन्तर्गत अन्तर्गत त्रिविन्दुम अछि मध्याह्न एक न मुष्य भाषा थकि हगिह, मुसठमानक अवा इसाइ सेहो काखी मागमे एए नहै छैथ। अपन सांस्कृतिक ओ भाषा वैश्विष्टिक काम हकमिक यानि जाग्यमे एक श्रुति पहिचान अछि।

पौनामिक कथाक अनुसा पशुनाम अपन श्रुति समुद्रमे छेकदिठ, जससँ ओहि अकनक श्रुति समुद्रसँ वाह नकिठ गेठ ओ केनक प्रादुर्भाव मेठ। कहल जाइ अछि जे ‘येत स्थितः कीयड ओ अठम प्रदेश’ शब्दक योगसँ ‘येनठम’ शब्द वनठ जे वाहमे ‘केनठ’ वनठ गेठ। वहुत दगि नक ई श्रुति-भाषा येना जाणक अघि छै, ओहू कामसँ एकना येनठम आ वाहमे केनठम नाम पडै।

केनठ प्राकृतिक सौन्दर्य अद्भुत अछि तँ एकना ईश्वरक अपन घन सेहो कहल जाइ अछि। समशीतोष्ण मौसम प्रयून वन, प्राकृतिक सौन्दर्य, सघन वन, समुद्र घट ओ याविससँ अघि गदी, सभ मछि एकना सयमुय पृथ्वीपन स्वर्गक रूप देगे अछि।

केनठ गानाक दक्षिमी छोनपन अन्तर्गत साग ओ पयछमि घाटीक ५००-२७०० मीटर उँचाइपन अवस्थिति अछि। केनठक गीन भागमे ब्रिजानि कएल गेठ अछि। नदीय गियठ श्रुति, उपजाउ मडिठसुड आ हाइवेसुड केनठ गियठ भागमे अन्तर्गत वैकवाटन ओ यौआवसिठ गदी अछि। मडिठसुडस काग, गानियठ, अकोका



अप्यनोट, केना, याउना, अदनाक, कानी मन्थि, कुसुआनाक संग-संग आना-आना वहुना नास वनस्पताकि हेतु पुनसिद्धि अछी जंगली हाथैम्हउस याय, कान्छी, नवना, मसाठा सवहक वगान ओ वन्यजीव सवहक छे पुनसिद्धि अछी

केनएक आगना समुहना नट, नागा पुनकाक वन्यजीव, आकान्धक वैकवाटना, एवम् आगनदनायक वैकवाटना सग जगना पुनसिद्धि अछी सडक मार्गासँ यात्रा केनापन केनएक मनोम पुनकाकि छटाक वेहना आगनद छे जग सकेना अछी

दक्षिणी केनए अवेपुपीक वैकवाटनासँ नमठिगाडूसँ सटठ दक्षिणी सीमाक नटीय क्षेत्र सामि अछी केनएक नाजयानी नविवेगनाम, कोवठम ओ वनकठा समुहना नट एवम् पुनविधि वैकवाटना ऐ क्षेत्रमे पडैत अछी

१८८० ईस्वीसँ पूर्व केनएमे वहुना कम पन्यटक अवैत छथि ओकना वाद स्थानीय सनकाक ठोकक बागीदानीसँ जवनादसना पुनया-पुनसान केनएक जसँ पन्यटक ठोकक आवागमन वढैत वहुना नास पन्यटक स्थथ सवहक वेवस्था छोट-मोट कानोवानी सवहक हाथमे देठ गेठ जेना कि केनएक पुनसिद्धि वैकवाटना सगमे ८० पुनविधि बागीदानी छोट-मोट कानोवानी सवहक अछी पहाडसँ ७५ कज समुहना नट एक पन्यटकक आनाम ओ सुवधिक गनिना येषटा कएठ गेठ पनासिमागः केनएमे पन्यटकक आकान्धक वढैत गेठ

केनएक नाजयानी नविवेगनाम हम कएक वेन गेठ छी नविवेगनाममे कम पन्यमे सुन्यापुनाम ओ स्वादष्टि भोजन उपव्य अछी नाजय पन्यटन गनिमक अगिगिहमे भोजन, जठपै आ याह-पाक सुवधि नँ अछि, आस-पासक केकोको गम इडि, वाना, कान्छी ओ याह उपव्य नहैत अछी बाषाक समस्या ओतेक जठि नहैत केकोको नामठिगाडूमे ठोक हनिदी वुहैत अछी

हमना नहवाक वेवस्था केनए सनकाक अगिगिहमे छठ जेकना जेतेक पुनसंसा कएठ जाए से कम होला सग सुवधिसँ पनापुनाम अगिगिहक सुठक सेहो कमे अछी कएकटा पैघ नाजगेना सग ओइगम अवैत-जाइत नहैत छैथ, नाँए कएक वेन ओना स्थथ भेटव आसाग नहैत अछी

यात्राक कानमे हम ओइ गमक पुनसिद्धि पदमनाम मगदनि पहुँचै। पदमनाम मगदनि दुनयोँक केनो यन्मक केनो मगदनिसँ धनकि अछी वेसुमान सोना, यानी, जवाहना ओइगम सैकडे साठसँ नापठ अछी कहठ जाइत अछी ओइ सम्पैने अथकिंओ ओइगमक नाजा सवहक योगदान छैत जे अपनकाँ पदमनाम गगवाक दास वुहैत छथ। दोसना वान जे सुनवामे आएठ ओ ई जे स्थानीय नाजा आकान्धमे छुट-पाटसँ वयेवाक हेतु अपन समसना मूठप्राण वसु मगदनि नहयानामे नयवा देठपनि जे जेना भेठ होइ मुदा ओइ मगदनिमे अकूट सम्पैत नयठ अछी, जे नापठ-नापठ व्यन्य भेठ अछी ठेककँ नँ नयन वुहवामे एठे नयन उयनम ग्यायाठक आदेशपना पाँयटा नहयाना ज्येठ गेठ ओ ओइमे नापठ गेठ अमूठ वसु सवहक गामना होमए ठाठा जेतेक वसु हिसाव-कानाव भेठ तेकने मूठ्य ठायो कडानमे नज जेवाक अनुमान अछी छठम नहयाना यान्मकि कनिवन्तीक कानास नहैत ज्येठ गेठ कहवी छै जे ओकना जे ज्येठ से जिवति नहैत अछी आदि-आदि



हम जम्पन ओर मन्दिनिमे गेठ नही तँ उपनोक्त समायान सभ आवागैठ नहैक मुदा केतौ कछि वाहनसँ सुनवामे नही आएथ, आ नहीकेँ कछि देयाएथ।

हमनाम मन्दिनिमे पहुँचैवाक वाद सभसँ पहिने सन्ट-पैन्ट नकिाई किऽ थोती पहिने पड़ैथ थोती ओहीठाम मन्दिनि पुनवर्धक द्वारा उपव्य कनौठ जाश अछि तोकन वाद पक्काविद्य भऽ दृशक होश अछि यँकि हमना जोगान छैथ, असुनु गीआरपी दृशक कनवाक मौका भेटैथ छैथ सभसँ आगू एकदम गन्त गऽहमे जा कऽ पद्मनाम भगवानक दृशक सौभाग्य हमना भेटैथ।

संयोगसँ गानन सनकानक सेवा नकिाई सयवि सेहो दृशक कनए गेठ छैथ। हम हुनका संगे काज केने नही। यँकि ओ पाछाँ नहैथ, तँ हम हुनका नही देख सकैथैन। ओहो केनए सनकानक अर्थि गऽहमे रहैथ नहैथ। ओहीठाम स्वागत कक्षमे हुनकासँ भेट भैथ ओ कहैथ जे पद्मनाम मन्दिनिमे हमना देखबे छैथ। त्राविन्दनम धातुनक सन्दर्भमे गप-सप्पक वाद हम सभ अपन-अपन कक्षमे यहाँ गेलौ।

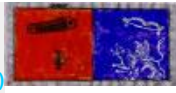
पद्मनाम मन्दिनिमे व्रिषिभू भगवान अगद सयनम मुद्दामे आदिसिष नागपन पड़ैथ ओ ओहीठामक नागवंशक कुंठ देवना मानैठ जाश छैथ।

३ जगवनी १७५०क त्रावसकोनक महानाजा महानाज श्नी अनीहुम थनीनाथ त्रावसकोन नाज्यकेँ भगवान पद्मनाम स्वामीकेँ समन्पति कए स्वयंकेँ हुनकन दासक रूपमे घोषति कए देवा तोकन वादे ओ स्वयं ओ हुनकन उतावाचिकानी श्नी पद्मनाम दासक उपाधि गृहभू कए छैथ। ऐ पुनकोन त्रावसकोन समूहनाम नाज्य भगवान पद्मनाम स्वामीक समन्पति भऽ गेठ। श्नी पद्मनाम दासक उपाधि पूनापन कनक हेतु नाजकुष्ठक गवजान शसिकेँ पुनथम जगम दिसिपन श्नी पद्मनाम मन्दिनिक मोटकाठमसुदपमपन नायिकेँ जगभषिक कएठ जाश अछि तोकन वादे ओ श्नी पद्मनाम दासक उपाधि नयवाक पातन माठ जाश छैथ।

त्रावसकोनक अन्तमि महानाजा मानासुदवगाक जगम रर मान्य १८२२ केँ भैथैथ। हुनकन पतिाक गाओ नवा वन्मा ओ माना संथु पानवथी वथी (कनषिड महानागी) छैथैथ। ८१ वन्षक उमेरमे १६ दसिम्बन २०१३ केँ हुनकन मृत्यु भऽ गेठ। हुनकन मृत्युक वाद ओर नागवंशक पुनीकात्क उपस्थिति सिमापन भऽ गेठ। सन् १८७१क संवधिग संशोधक वाद नाजमहानाजा सवहक उपाधि सिमापन भऽ गेठ। तँ त्रावसकोनक कागूनी शासक तँ केनए सनकान भऽ गेठ आ महानाजाकेँ मन्दिनिक देख-भाठक कागूनी अधिकानपन पुनश्चयनिह ठागी गेठ। केनए उय्य ग्याथाय ऐ व्रिवादेमे अही तनहक वेवस्था देठका।

महानाजा मानासुद वन्मा सन् १८४७ मे स्वतन्त्रताक समयमे त्रावसकोनक गानामे व्रिषिक अन्तमि गवाह छैथ। कहैठ जाश अछि जे त्रावसकोनक नाज पुनविान ओकना स्वतन्त्र नाष्टन नयवाक पुनजोन पुन्यास केठक, जे अन्तोगात्रा सञ्चर नही भैठ आ त्रावसकोन गानक हसिसा वर्गी गेठ।

स्वतन्त्रताक वाद वदठठ महैठमे नाज पुनविानक अनेको सदस्य नाज्यसँ वाहन जाए सामान्य गानाकि जाकाँ जीवग-धापन कनए ठाठाह। महानाजा मानासुद वन्मा सेहो सपनविान वंगठेन यहाँ गेठ। सन् १८८१मे महानाजा यथिनि ठुनठक मृत्युक समय जगनामे जवनदसुन सहगुभूति देखैठ गेठ। तोकन वादे मानासुद वन्माकेँ ठेक महानाजा कहए ठाठा।



पद्मनाभ मन्दनिक सामने वगैर नाग महक योटीपन घड़ी मेघाग भासकि गामसँ जागै जाइ अछि ई कनीव साए साठ पुनाग अछि ई पुनायोग समयक अग्रिमिनाकि यमकाक गमूना अछि घड़ीक आकृषम ओरमे नाक्षसक मुपैटाक संगे-संग दुनू काग वदियमाण वकना अछि जहाँ घन्टा पुनैत अछि, नाक्षस अपन मुँह प्योछैत अछि आ दुनू वकना ओकना गावपन याटी माँतैत अछि जससँ घम्टाक जोनदान स्वप्न गकिछैत अछि आ नाक्षस अपन मुँह वग्न कऽ छैत अछि जोरोक वाजैत नैत अछि जोरोक वेन ओ पुनाकिनासि दोहनाइत अछि कहक मागे जाँ यानि विजतौ तँ यानि यिमेत ओरमे नाक्षसकँ दुनू वकना मानौ आ यानि वेन घम्टाक अवाज सुनैत ओना अछिने यमकाकनी प्रगत्त? मुदा आव ओ घड़ी केरोको साठसँ प्यनाप पड़ैत अछि

पद्मनाभ स्वामी मन्दनिक सामने कुथीनमठिका पैठेस म्युण्डिम अछि ऐ महक गनिमाणा गावसकोनक महानाणा स्वाथी थिनुगैत वगैर वगैर वगैर ओ महक कवरी, समाज सुधानक, गावक एवम् नागनेना छैत ऐ संग्रहालयमे गाना पुनकाक अमूर्त पेटगि सग नापैत अछि ऐ संग्रहालयकँ सोम दनि छोड़ि कि कोनो दनि पुनाग: साढ़े आठ वजेसँ एक वजे आ तीन वजेसँ साढ़े पाँच वजेक वीचमे देपैत जा सकैत अछि पुनागि वृष ४ सँ १३ जगवरीक वीचमे ओइगम महानाणा स्वाथी थिनुगैत स्मृति संगीत उत्सव मगैत जाइत अछि

महकसँ मन्दनिक जएवाक गुप्त मान्ग अछि जस वोटे महानाणा गति पद्मनाभ मन्दनिके पूजा अन्यथा कजैत छैत ओ अपनो मोनक एक घन्टा समय गगनागक पूजाक हेतु महानाणाक हेतु आनक्षसि अछि महानाणा पूजा कऽ छै छैत नपने आम जगताकँ मन्दनिके पुनवेशक अनुमति गेटैत अछि

नागमहमे ११६-११६ केन वसुत सग (जो महानाणाकँ गैटमे देत जाइत छैत) नापैत अछि महक अघिकांश हिससा वगैर पड़ैत अछि कहैत जाइत अछि जे ऐ महक गनिमासक थोड़वे दनिक बाद महानाणाक मृत्यु भऽ गेबै तँ एकना अशुभ वृद्धिमहकँ छोड़ि नाग पनविन आगम ११६ जागैत

सायं काठ हमना ठेकगि विविधमक कोवठम समुद्र १८५१ गेबै। दून-दून एक देपारन स्वयंछ जग, दीर्घ समुद्र १८ ओ दूनामी क्षणिणिक अद्भुत दृश्य उपग्न कजैत अछि समुद्र १८५१ पुनकास समुद्र दूजेसँ देपैत जा सकैत अछि

सूत्रासक छटा ओ अकासक मगमोहक नंग समुद्र १८ पुनोकेँ सवहक आगन्दकँ पनाकाष (छठमिश) पन पहुँचा दैत अछि केरोको वेकरी समुद्र १८ पन सास्कि यथेवाक आगन्द छैत देपवामे एग।

पुनाग भेगे हमना ठेकगि वृक्ष समुद्र १८५१ गेबै। ओइगमसँ अन्व सागनक अद्भुत दृश्य देपवै। ओहि कृममे विविधमक दृष्टिगनसि गगामे अवस्थति पुनान गामक गाम सेहो देपवै गेबै। ओइगम वैकवाट ओ टापूक संगम स्थल हेवाक कास पन्यटककँ अद्भुत आगन्दक अवसन पुनान कजैत अछि

विविधमसँ कथाकुमारी गोडसँ जेवाक नसामे पद्मनाभ पैठेस पनसनीय थकि ई वसुत: आपुनक नामविगाडूमे पड़ैत अछि, मुदा ऐ महक वेवस्था एवम् शासन केनैत सनकाक अधीन अछि



पद्मनाभपुत्रम पैठेस १६ मी शताब्दीक शान्दान एकडीक महि थकि १५५० सँ ई १७५० तक महि त्वावसकोनक गाजा ठेकनकि ई महि छथि ई वस्तु कथाक केनक सुवदेसी शैलीक उत्कृष्ट गमूना अछि। प्राचीन आंगनकि अद्भुत नोह्वेड गङ्गाशी ओ मुनकिठा सजावटसँ गनैत अछि। महिमे १७म ओ १८म शदीक गतिविधि सामि अछि। महिमे संगीत धनुष, गीत अन्तरक संग प्यङ्की, योगी गङ्गाशीक संग शाही कुत्सी, अद्भुत आकर्षक उत्पन्न कएत अछि। गाजागाक महिमे टंठ अछि-अछि। पुनकानक पुष्प डिजाइनक संग ठेकी ओ सौभाग्यक गङ्गाशीदान छन आकर्षक केन्द्री अछि।

पुनकानक पद्मनाभ पैठेस देस कऽ आनन्द तँ होखे छैत जे त्वावसकोनक गाजा घनागाक वैभवक पनाकाषक सद्यः पुनमास सेहो देसवामे अछैत अछि।

महिक वनिनि गीतमे धुमैत-धुमैत हम सग थाकि गेलौ। वाहन आवाकऽ थोड़काठ बन छहैतमे सुस्रोतौ आ तेकन पछाइन कन्याकुमारी दसि वदि गेलौ।

○

१५ जुलाई २०१७

कागुनी आनकवाड

(गानगीय दम्पद संहिता याना- ४ट्ट 'ए', २२४ ४ट्ट 'अ')

पुनपनागा नूपसँ पुनविनि जीवने सुनी अपन पानिकेन सहायकक नूपमे काज कएत छथि। समस्या नप्यन वढा गेल नप्यन पानिपानीक आपसी सम्वन्धक कटुता पुनविनि यौकेसँ आगू वढैत सहेत-सहेत महिक जीवने वृत्त्य ओ दुष्कन हुअ गेल, आ ओर पुनस्थितिमे मुक्तिक एकमात्र उपाय आत्म हत्या वुह पडैत गेल। केनेको महिमे द्वाजा ऐ नहै आत्म हत्या केनाक वाद समाजक आत्मा आरपीसी- याना- ४ट्ट 'ए' सग हसिक कागुनक जन्म देत।

ऐ कागुनकें आगू गेनाक वाद गेल वा सहे महिमे द्वाजा आनोपक एखआरआन थागामे दन गेल। पछाइन पानि एवम् ओकन पुनविनि-अन्था वयोवृद्ध माता, पति एवम् छोट-छोट वय्या सग सेहो-पुनसिक कृपापन गनिन नहै हद तक गऽ जाइ छथि जे नप्यन हुनका पुनसि याहन तँ जेमे वन्द कऽ दैत।

सन् १८८३ मे औपनि गीतमे संशोधन कऽ गानगीय दम्पद संहिता (आरपीसी)मे अनुच्छेद ४ट्ट 'ए' जोड़ैत गेल जन्मे मूठः गनिनपिनि प्रावधान छै-

१. नप्यन कपनी पानि ओकन सम्वन्धी महिक संग कुड़ना कन तँ अपनायोकेँ गीत साठ तक कैद हएत, संगे पुनमास सेहो गऽ सकैत अछि।

ऐ अनुच्छेद हेतु कुड़नाक अन्थ अछि-



(क) जागिकऽ कएओ गेओ एहेन वेवहान, जइसँ सम्वन्धति महिओ आत्म हप्ता कनवाक स्थितिमि पहुँच जाए कविओ महिओकँ शान्तिाकि वा मानसकि स्वास्थ्यकँ गंभीर क्षणो पहुँचैका

(प) सम्वन्धति महिओ वा ओकन गकिट सम्वन्धतिसँ सम्पैत वा कोनो मूख्यवाग वस्तुक गैत कागूनी मांग कनव आ एहेन मांग गहि पूना भेओपन वा नर हेतु प्रानामा कनव।

मानवीय दम्भऽ संहीति क थाना ४८८ 'ए' संज्ञेय, गैत जमानगी औन गैत-संगठति अपनाय थकि। अपनाय संज्ञेय एवम् असंज्ञेयमे व्रिजिजति कएओ गेओ अछि कागूनी गौनपन संज्ञेय अपनायक ज्ञंय कनव एवम् शिक्थिण दृष्ट कनव पुठिसि कनवप्र थकि ४८८ 'ए' एकटा संज्ञेय अपनाय थकि। अपनाय जमानगी वा गैत जमानगी गऽ सकैत अछि ४८८ 'ए' गैत जमानगी अछि एकन माने भेओ जे ग्यायकि दम्भऽयकिनी (मजसिन्टेट) कँ जमानग देवाक कविओ आनोपति वेकरीकँ ग्यायकि वा पुठिसि हिसासनमे पठा देवाक अथकिन छऽ। यूँकि ४८८ 'ए' गैत संगठति अपनायक श्रोमीमे अवैत अछि, असुतु यायकि कनवना एकना आपस गहि ठऽ सकै छैथ। (मुदा जँ सम्वन्धति पक्ष मामओकँ आपसमे सोह्नावैठे ग्यायओयसँ आवेदन कनै छैथ, नयन ग्यायओय मामओकँ आपस देवाक अनुमानि प्रदान कऽ सकैत अछि।)

कागूगक उपनोक्त प्रानधानमे कूटनाक प्रयोग गनिगठिपति प्रानस्थितिमि कएओ गेओ अछि-

- १ एहेन वेवहान जइसँ महिओ आत्म हप्ता हेतु प्रेति हो।
- २ एहेन वेवहान जइसँ महिओक जीवण, शनीन वा स्वास्थ्यपन गंभीर समस्या उपग्न गऽ जाइका।
- ३ महिओ वा ओकन सम्वन्धीक सम्पैत देवाक उद्देश्यसँ कएओ गेओ प्रानामा।
- ४ महिओ वा ओकन सम्वन्धी द्वाना आन पैसा वा सम्पत्तिक हिससाक मांग गहि मानवाक कानाम प्रानामा।

प्रत्यर्पा ऐ कागूगकँ ठागू कनवाक उद्देश्य व्रिजिहति महिओकँ दहेन-भेओ पति एवम् ओकन पतिव्रान द्वाना प्रानामासँ नृषा कनव छऽ, मुदा वेवहानमे एकन गेओक दुनुपयोग भेओ जे उययन ग्यायओय सुशीठ कुमान सन्मा वगाम गानन सनकानक मामओमे आरपीसी- थाना ४८८ 'ए' कँ कागूनी आंकवाएक रूपमे गनिदा केओका।

उपनोक्त कागूगसँ पुठिसि द्वाना ओकक वैकिक अथकिनक उठ्ठवगक संभावना वढऽ। ऐसँ गनिदोष ओक कागूनी वगयककन शक्ति भेओ एवम् मजबूत गऽ कऽ वृषो-वृष कोट-कयहीक दनवज्जा पटपटवए ठाओ गेते गहि, उपनसँ पुठिसि वगवठ, गानगीनकि हसकषेप, कविओ समाजमे प्रभावशाली वृगक विपिना सेहो नर रूपे काज कनए ठाओ जे ओर पति एवम् ओर पतिव्रानक वृह गवागने माओकि!

केओको मामओमे ऐ कागूगक दुनुपयोग व्रिजिहति महिओ द्वाना वन पक्षसँ अथकि-सँ-अथकि पैसा ओसठव, कविओ एहेन पनस्थिति गनिमा कनव नहैत अछि जइसँ जाग छोड़वाक ठेओ वन पक्षक ओक महिओ पक्षक अनुयति मांग मानैठे वेवस गऽ जाइ छैथ।



दहेण नषिध अयनिधिम १८६१क याग २ के१ अगुसाग दहेण ७५ कऽ भागे वशिहसँ पून, वशिहक समय वा वशिहक वाद कहियौ दे७ गे७ सम्पैग या मूठप्रवाग यनोहसँ अछि-

(१) जे वशिहक एक पक्ष द्वाग दिसनकेँ दे७ जाइत अछि

(२) माग-पति वा कोनो आग वेकती द्वाग दे७ गे७

मुदा मुसुमि वशिह कागुगक अयोग दे७ गे७ मेह१ वा (दौ१) ऐमे सामठि गहिअछि वशिहक समय कोनो पक्ष द्वाग दे७ गे७ गगदी, गहगा, कपडा वा अग्न कोनो वस्तु दहेण गहिभाग वस्तु ई वस्तु सग वशिहक सगक अयनि गहिदे७ जाइत हो।

ऐमे मूठप्रवाग यनोहक अन्थ गान्तीय दम्पड संहिता (आइपीसी)क याग ३०क अगुगुठ अछि

आइपीसी- याग ४८८ 'ए' माग पत्नी, पुगोह वा ओक१ सम्बन्धी द्वाग ठागू कए ज सकैत अछि। उयगमउय्य ग्याप्राप्य वानम्वान ई सूत्रिकान के७क अछि जे कागुगक उपनोक्त यागक अयोग ज्ञादाग१ मामठा हूँ नहैत अछि। अयकिंस मामठामे एक१ दुरुपयोग वैवाहिक जीवनमे वशिहक स्थितिमि पत्नी वा ओक१ गकिट सम्बन्धी द्वाग पति वा ओक१ गकिट सम्बन्धीकेँ वृक्कमे७ क१वाक हेतु कए जाइत अछि। एहेन प१स्थितिमि शिकायतक१ग१ प१यु१ मागामे पैसाक उगाहिक प१यास क१ै छैथ।

एहेन अगगिगिगि उदाह१म सामगे आए७ अछि ज१मे वनि जाँय-पडा७ के७ पुठिसि वुगुग१ माग-पति, अवशिहति वहनि, ग१गव१ गौजी एवम् छोट-छोट वय्याकेँ गनिश्चान कऽ ठे७क। ऐ१हक मामठामे गनिदोष ठे७क भागसकि प्रागगा एवम् उ१पीडनक शिका१ गऽ जाइ छैथ। सामाग्यागः एहेन भोक्दमा ५-६ सा७ यथै१ अछि आ माग २० प१गशि१ ठे७केँ सजा होइत अछि। एहेनो भे७ जे जे७सँ छुटकि पति वा आनोपति माग-पति आ१मह१ कऽ ठे७क।

यगु१गान वगाम गान्प्रक मामठामे दठि७ उय्य ग्याप्राप्य कह७क जे ऐमे कोनो संदेह गहिअछि जे अयकिंस एहेन शिकायत छोट-छोट वागप१ आपसी अहं एवम् टक१वाक का१म गमसमे कए जाइत अछि जे७क१ सगसँ गंभी१ प्याग्याग१ प१वा१क छोट-छोट वय्या सग भोगै१ अछि। अस्तु ग्याप्राप्य पुठिसिकेँ गनिगठिपिगि आदेश दे७क।

(१) ए१आइआ१ नूटनिमे पंजीकृ१ गहि कए जाइ

(२) पुठिसिक प१यास हेवाक याहि जे मामठकेँ गंभी१ जाँय-पडा७क वादे ए१आइआ१ द१ग क१।

(३) आइपीसी- याग ४८८ 'ए' ४०६ क अग१ग१ कोनो मामठा वनि डीसीपी (उपायुक्त पुठिसि) एवम् अगनिक्ति डीसीपीक आदेशक द१ग गहिहए।

(४) ए१आइआ१ (पंजीकृ१ क१वासँ पून आपसी समहौगाक ह१ संग१ प१यास कए जाइ आ जौ समहौगाक कोनो आश गहि नहि जाइक गँ सगसँ पहिने स्त्रीयग आ दहेणक वस्तुकेँ सम्बन्धति महिठकेँ आपस क१ौ७ जाइ।



(५) मुप्य अशुक्रक गनिश्वानी एसोपी (सहायक आयुक्त) अथवा डीसीपी (उपायुक्त)क स्वीकृति
मामाके पूना जाय-पड़नाक वादे कए जाए

(६) संपादक अशुक्रक (जेना सासु-ससु)क मामामे मसिठि (७३७)मे डीसीपीक स्वीकृति जतनी अछा

ए मामामे ग्यायालय ईहे आदेश देक जे महविाक उत्थाग हेतु कानूनन स्वयंसेवी संगठन एवम् अग्य कानूनी
संस्था सभ ए वातक पूना पुन्यास कए जे सम्वन्धति पक्ष सभकेँ आपसी सहभाविताक माताकेँ ग्यायालय
पहुँचक वादे ए वातक छे ग्यायालय पुन्यास कए। याही तँ ई जे विना वाहनी हस्तक्षेपक सम्वन्धति पक्ष मामाकेँ
आपसमे सोहना छिअ। टीआन मैयाक मामामे मन्नास उय्य ग्यायालय सँ ए तहक निर्देश दैत स्पष्ट केक जे एहेन
मामामे पुठिसिआ कानूनवार पचाप सावधानी एवम् एहेन छान-वीनक वादे कए जाए।

छति कुमारी वनाम गान्धक मामामे उय्यतम ग्यायालय ए वातक व्रिया कए तह अछा जे एहेन मामा
उपस्थिति मेठपन पुठिसि द्वाता एश्वरआन दन कनव अगविान् अछा किआ तसँ पहिने पुन्याथमकि पूछाछ जतनी
अछा यँक ई मामा व्रियानाथन अछा अस्तु व्रिनिगन उय्य ग्यायालय द्वाता देठ जेठ आदेशनिम्नक सगदामे पुठिसि
कानूनवार कएत अछा उय्यतम ग्यायालय द्वाता ए मामाक निम्नक वादे एहेन मामामे एश्वरआन कनवाक दशा ओ
दसि अगनि नूपाछि।

ए कानूनसँ मयक वातावरण तँ वगठ मुदा एक दुनुपयोग जादा होमए जाछा कनेको निर्दोष ठेककेँ ठेग, किआ
पुन्याथिक आवेशमे छँसा देठ जेठ कएक वेन तँ पति एवम् ओकन पतिव्रिनकेँ ए छे छँसा देठ जेठ जे सम्वन्धति व्रिनिहति
महविा ओर वैवाहिक जीवनसँ हटि कऽ प्रेमीक संग व्रिवाह कए याहै छे।

केक वेन एहेन जेठ जे पति-पत्नी वादमे मविा याहै छे, अपन-अपन गठनीक अहसास कएत छे, मुदा तायै
अपनायिक मोकदमाक जावृतामि छँसि यूक छे, मुदा ओसँ नकिछ केना? कानून ई कानून सोन छेमपुनदावठे अछा
मागे शक्रियताकानून स्वयं याहियँ कऽ एका आपस गहिठि सकैत अछा। ए सभ पस्थितिमि मामा केको वेन उय्य
ग्यायालय एवम् उय्यतम ग्यायालय पहुँचत जेठ व्रियानाथीय पुनश्न छे जे आपनि ए तहक मामा यवैत तहवाक की
औयति अछा प्यास कऽ जायन कि पति-पत्नी आपसमे वातकेँ सठैत कऽ आपसी सहभाविता सुपी पतिव्रिनकि जीवन
जीव याहै होथी? आपनि एहेन मोकदमा जँ यतिनी तह तँ एमे सँ कछि नकिछ गहि, कानून शक्रियताकानून अपन
वातसँ मुकैत जाए। मामा कमजोर पड़ि जाए, याहे निसून निसून गऽ जाए। मुदा एक दोसरो पक्ष छे जे केको
वेन समहीताक आडम्वन कऽ जीव एवम् कमजोर महविाकेँ अपन शक्रियता आपस ठेवाक हेतु अनुयति दवाव वगैठ जा
सकैत अछा। मामा आपस छैतो पुनश्न प्रेमीकाक व्रिनिगीकानून गऽ सकैत अछा।

ए सभ पुनश्नपन व्रिनिगन ग्यायालयमे वातवा व्रिया मेठ व्रिवाह सम्वन्ध व्रियेछेक पुन्याथिमे ठम्वति मामामे
हुनू पक्षकेँ मौका पवैत आपसी सहभाविताक अवसर ग्यायालय पुन्यास कएत अछा।

तहिना आरपीसी ४८८ 'ए'सँ सम्वन्धति अपनायिक मामामे यदहुनू पक्ष आपसमे वातकेँ सोहनावए याहै
अछा, सठैत छि याहै अछा तँ उय्य ग्यायालय सीआपीसीक याता ४८८क अथीन अपन व्रिनिधायिकताक पुन्यास कएत
मामाकेँ तह कऽ देवाक आदेश दऽ सकैत अछा।



उपनोक्त वषियसँ सम्वन्धति माम्भा उय्याम ग्याप्राप्यक समक्ष जीतेगद्द १ घुवंशी एवम् अग्य वगाम ववीना १ घुवंशी एवम् अग्य आए। (जस्मे पुन्रमे उय्याम ग्याप्राप्य द्वाना वीआन जोसी वगाम हनियाम्मा सनकाक गनिमयकेँ वहाए नाप्पए गे।) जस्मे कहए गे छए जे सीआनपीसीक या ४८२ क अधीन अधीन उय्य ग्याप्राप्य ग्याप्यक हनिमे अपनायक पुन्रक्या वा एखआरआन १६६ कऽ सकै। अछि आ सीआनपीसीक या ३२० एमे वायक गहि हिए।

पुनोर्गुपना वगाम हानियाम्मा सनकाक माम्भा उय्याम ग्याप्राप्य आरपीसी- या ४८८ 'ए' के १ अधीन कएए गे शिकायतक दुनुपयोग एवम् वडै। नमोकेँ यियागमे नपै। केगद्द १ सनकाकेँ उपनोक्त कागूक समीक्षा कनवाक हे। कहएक।

नहुसाम गान सनकाक आगहनप वधि आयोग ए वषियमे गंभीरतासँ विया कए। अपन २४३५ पुनविदगमे संसुताकेँ एक जे ए अपनायकेँ ग्याप्राप्यक आन्यासँ (छोमपुगदावरे) वगा देवाक याही मुदा आयोग ए अपनायकेँ गै। नमो गी वगी नपै। याहएक नाक सिमाजक दूनामी कएयामकेँ यियाग नपै। ए कागूक या मोथ गहि होइक।

आयोगक कहव जे गनिश्चानी सम्वन्धी ठा कागूनी नदिश एवम् माम्भाक गहन छागवीन केँसँ एवम् हिसा सग गंभीर पनस्थितिमे गनिश्चानी केँसँ ए कागूक दुनुपयोगसँ वयए जा सकै। अछि।

जुआ २०१४ मे ग्याप्यमुना सीके पुनसाद एवम् पीसी घोषक उय्याम ग्याप्राप्यक वैय द्वाना देए गे गनिमयमे स्पष्ट कएए गे या ४८८ 'ए' के १ अधीन वगि मजिस्ट्रेटक आदेशक गनिश्चानी गहि हिए। उय्याम ग्याप्राप्यक कहव छए जे अयिकास एहेन माम्भा मे महि। ए कागूक दुनुपयोग कए। प। सासु, ससु आदिसँ वदए ७३ छै। ए ११६क पुनकाममे वहुन कम ठेके सगा योषति हेवाक उदय कए। मागनीय ग्याप्राप्य नाप्य सनका सगकेँ आदेश देएक जे पुठिसि कनीमनिठ पुनोसीड्यो कोड (सीपीसी) क या ४१ मे वन्याति मागकक अगुसाम कए एवम् अपवादिक माम्भा मे अन्धावशक मेगे आनोपति वेकतीक गनिश्चानी कए।

सम्वन्धति मजिस्ट्रेट सीपीसीक या ४१ क अधीन पुठिसि द्वाना पुनपति पुनविदगक ववियना कए। वेकतीगान नूपसँ संपुष्ट ठेकाक वाद एवम् तेक १ औयतिपक वपति आया वगवै। गनिश्चानीक स्वीकृति पुनदान कए।

उपनोक्त माम्भा मे छैस। दै। मागनीय ग्याप्राप्यसगाम कहैथ जे स २०१२ मे दू ठाप्य वेकती ए कागूक अगुना गनिश्चान मे। जे स २०११क संप्यासँ दंड पुनसिा ज्यादा अछि। जस्मे ठाग १६ यौथा ४७८५१) महि। छै। ऐसँ स्पष्ट होइ। अछि। जे आनोपति प। मा, वहिकेँ सेहे काखी नादमे गनिश्चान कऽ छे। जे उपनोक्त कागूक नहा आनोप प। क द १ दंड पुनसिा अछि। जप्य क। मा १५ पुनसिा ठेकेँ अगुना दाम्मति कए जा सक। वनिगि ट्नाप्य कोट मे ३७२७०६ माम्भा वम्वति अछि। जस्मे सँ ठाग ३१७००० माम्भा मे आनोपतिकेँ छुटि। जे वाक संभावना अछि।

मागनीय उय्याम ग्याप्राप्य कहव छए जे गनिश्चानी वेकतीगान स्वतन्त्रताक हनन न कनि। अछि, संगे ३ अपभाग-जगक सेहे अछि। स्वतन्त्रताक छह दशक बाद पुठिसि अप्य वन। उ। पि। ड, उ। पि। डक साधक नूप मे जान। जाइ। अछि, जगनाक मति न गहि।

आएव उय्याम ग्याप्राप्य गनिश्चानी मे सावधानीसँ गनिमय ठेवाक हे। मजिस्ट्रेट ठेकेकेँ अगाह केक।



इन्दुनाथ मठिक एवम् अग्र वनाम सुनीमती सुमति। मठिकेमे दिति उय्य ग्याप्राप्य वेवस्था केठक जे आरपीसी-
याना ४८८ 'ए' दहेण गविलास कागूगक याना ४ सँ एकदम अठा अछि, कागूग दहेण कागूगमे मातृ दहेणक मांगसँ अपनाय
गऽ जाइ अछि। जप्पन क' आरपीसी- याना ४८८ 'ए' मे पतिनिथा पति पतिनिथा द्वाला दहेणक मांग संगे-संग कूनुडाक
वेवहाय जातूनी अछि।

आधुनिकीकरण, शिक्षा, वित्तीय सुनक्षा एवम् वेकतीगत स्वतंत्रतामे वृद्धिक संग कट्टरपंथी महिषा सग
आरपीसी- याना ४८८ 'ए'कँ एकटा हथियारक रूपमे दुनुपयोग कऽ नहै छैथ। कागूग वगैरक केतोको साठक वादो ऐ कागूगक
उयति समीक्षा नहि भेट जाइ कागूगसँ एकटा दुनुपयोगक मामलामे ठागान वृद्धिक भेट आ गतिदोष एवम् व्यर्थमे झँसौ
गेठ पतिनिथा ओकन सम्वन्धी त्नाहमिम कए नहै छैथ। वृत्तिग्न ग्याप्राप्य, जेन सनकानी संगठन सग ऐ वृत्तिपन
ठागान मंगल्य दऽ नहै छैथ, कागूगमे संशोधनक हेतु सेहो यन्या होइ नहै अछि। मुदा ऐगम ईहो महत्वपूर्ण अछि जे एक
पक्षीय संशोधनसँ कागूग वगावक मूठ उद्देश्ये ने गष्ट गऽ जाए। ऐमे कोनो दू मग नहि जे केतोको मामलामे वृत्तिहति महिषाकँ
जीवन ओ सम्वन्धन संकट ओकन सासुनमे उत्पन्न गऽ जाइ अछि आ ओ मजबुतीमे सग कछि सहै अछि सहै-सहै
केतोको महिषा गंग गऽ आतम हत्या भेट सेहो वृत्ति गऽ जाइ छैथ। असल, ऐ कागूगक दुनुपयोगसँ उत्पन्न समस्याक
समाधान हेतु वीरक नसल। गतिदोषक याही जसँ गतिदोष ओकँ झँसौ नहि जाइ अछि आ दोषाकँ उयति दम्भो होइ अछि
समाजमे सम्वन्धन संग महिषा जीवैथ।

अपन समाजमे कहवो छेउ जे जेन कनियॉं ओषि अवे ओहसँ अन्थो उडइ मुदा आव युग वदैठ गेठ अछि।
गतिदोषक समस्य जमिमा मातृ महिषाक नहि गऽ सकै अछि। ओक पतिनिथा पतिस्थिति सँ जँ गठमेठ नहि वेसोठक तँ
जीवन मनमे केनए जा कऽ थम्हा तेकन कोनो ठेका नहि। शिक्षा वन-कनियॉं सग जोजगान हेतु वृत्ति मनमे पसै
गेठ छैथ। गाम-घनक वाग गामेमे सठटा ठि से आव तथ्यपनक नहि नहि गेठ। अपनो समाजमे वृत्ति वृत्तिदक यवन वढा
गेठ अछि। कागूगक नसल। अन्धविश्वास केन केतोको पतिनिथा गष्ट गऽ नहै अछि।

पुन ओ सगिहपन आधुनिक सम्वन्धकँ कागूगक कुनहैसँ योद दैठ जाएत तँ पतिनिथा की हल? पतिनिथाक
मन्यादाक नक्षाक हेतु सगानक गवसि वयवैक भेट एवम् जीवनमे सुख-शांतिक स्थापना हेतु आवस्यक अछि जे हम सग
मानवीय संस्कृतकँ कटकटा कऽ पकड़ै छी आ पकड़ै नहि। त्येन त्येकतेन गुंजीथा। त्यागक गति जप्पन जीवनमे
उत्पति हल, सग अपनो ठीक गऽ जाएत।

○

ऐ नयनापन अपन मंगल्य गजालेन द्वाला दहेणक मांग संगे-संग कूनुडाक वेवहाय जातूनी अछि।

पुनसव ह।

"यक्षशाँस (मैथिली पत्रिका) "



दीपक वीसीए क के पूजा के एकटा कंपनी में डाटा प्रोसेसिंग के पद पर काम करत छथि। वीसीए कथिनाक क वाद ३ गौकडी हुनका कोनो अनेहे भेट गेथ होय एहन बात नै छथ, मुदा हुनका भगन, प्रतापिता आ माय वधे हुनका ३ गौकडी भेट गेथ छथ अन्धधुआ हुनका के टा संगी सभ एम्हने- आम्हने कय रहथ छथ। ओना जौ ठाण्डिया दोस सब के बात करी न ओ सब हिनका स वढिये पोषासिग पर पहुँच गेथ छथ। नूपेश स्टेक्टोनिक इंजिनियरिंग क के इन्फोसिस में छथ न गंदन मैकेनिकल इंजिनियरिंग क के गिगिंग में। आधीस सेहो सनकानी वैक में कृष्ण न गेथ छथ। जयन ३ छथ जे दीपको गिक-गिक पोषासिग पकैड गेथे छथ। एही बीच में देश क युवा वर्ग सब में राष्ट्रभक्तिके गद्या हनवनिनो उर्ग गेथ छथ। स्टेक्टोनिक मीडिया से थ के सोशल मीडिया तक में विविध प्रकार के ऑनलाइन फोटो, वीडियो आ ठिक साहा करत जाय गेथ छथ। काठमांडू क कैटीग से थ क आफिस क कैटीग तक वस एते रहस। सेना की कय रहथ अर्था पाकिस्तान की कय रहथ अर्था, अमुक गुट के छात्र सब देशद्वेषी थिकह, अमुक क्षेत्र के ठीक सब देशद्वेषी थिकह, वस यैह सभ यथ्या। दीपक सभ गावुक ठीक के कम्पनी काठ ३ आशियोकटाईय मोन आनिग नस जाय छथ न कम्पनी के ओ गावुक नस अपने आपे के कोस गेथे छथ। इन्टर पास करत के बाद दीपक एगडीए के परीक्षा में बैसथ छथ। पहिल प्रयास में न नै भेटै, मुदा दोसर प्रयास में ओ छपिति परीक्षा पास कस गेथ छथ। मुदा जयन एसएसवी के छेठ मोपाठ गेथ छथ न ओत घोर गतिशा हथ गेथ। गाँव आ दलितग में पढे पढ़ा, नै अंग्रेजी बाजय में फर्नाटेडन आ नै हिनदी बाजय में ओ दलित आ आत्मवसिवास। छपिति परीक्षा आ गिगिंग नाउंड तक न गेके रहैथ मुदा जयन स्टोनी नाईटिंग आ गुट डिसिक्लस नाउंड आयथ न हिनक हथ-पै न फुल गेथ। अस्तु, ओ अगिला नाउंड में नै पहुँच सकथ छथ।

अहिला एक बेग वहीन में प्राथमिक-माध्यमिक शिक्षक के बनती गकिथ। हिनको के टा संगी आ जौआ सब फोर्म बनथ। ओ सब हिनको उकसैथ जे तोहूँ नै छै हौ मोता, न गेथ न वुजह जे आनामस क गौकडी न जेन अपन पुनदेश में। वावू सेहो सैह ना अछपै छथयनिह। वावू बाजथ छथयनिह जे जेठक पाई ओत दै छै ठागन जेठक पाई न एतौ भेटए जेतौ। दीपक उत्तम में वजने छथ जे वावू से न गेक अछि मुदा एत हन। आगा तेजी स उन्नति भेटत ओत से बात नै नै नै यौ। ऐ पर वावू वजथ जे देयह ओत जेतक प्यय छ गाम-घन में ओकर अपेक्षा प्यय कतोक कम हेत सेहो नै सोयह। तै एकवेन टनाई करस में कोनो हन नै। एही प्रकारस क घमन्थन के बीच दीपक के मोन में एकवैगे एकटा सोय जेत। ओ सोय गेथ जे जौ हन मास्टरी में न जाय न हन छे ३ एकटा अवसन हौ अपन गाम-घन दिस के वय्या के पढावय-छपियव के। यदहिम अपन प्राप्ता ग्याग आ अनुभव के उपयोग क के मेहनत से कछि यथ्या-पुता के पढावय के प्रयास करत न गतिथि प्राथमिक-माध्यमिक सान पर कछि वय्या में ओ ग्याग आ आत्मवसिवास नै सकै छै जैसे ओ आगा हुन्या में सपन्या क सकै। फेर वावूओ गेके कहै छथि जे न सकै अछि जे वापस गामस क नसना येने हन करियन ओ मोकाम हासिठि नै क सकै जे पूजा में नहिक अगिला १०-१५ साल में हन प्राप्ता क सकै छि मुदा गाम-घन में ओर अनुसा प्ययो कम हौ आ अपन क्षेत्र में नहय के आगन्त सेहो न भेटै। यैह सब सोय कि दीपक अप्पाई क देथ। गजबती के रक्षा एहन भेटै जे दीपक ओर परीक्षा में स्टेक्ट नस गेथ आ हुनका टनेगि के छेठ सनकानी पर प्राप्ता भेटै।



आव ऐ व्रषिय पन उगोटिया सव मे ह्वाट्सएप ग्रुप मे घनन्थन शुरू भेल । गंदन वज्राह जे वड्ड गकि मिला जाउ जवि
 छिय अपन जगिगी...क छिय मजा । ऐ पन नूपेश वाज्राह छथ जे एहेन कोन वडका गौकडी उगाछ छैन, से हमना छेपेन ऐ
 मे ज्वाइन केने कैपिन ग्रोथ पन वनेक उगाओतैन । दीपक संग दैन वज्राह जे हमनो प्रेह यगिता अछि । अतान मे गंदन
 फेन वज्राह जे "ग्रौ माई ई कपिक गै वुहै छिजे कतवो अछि । अछि ई सनकानि गौकडी को गे । ऐ मे सेठनी से वेसी
 उपनी कमाई देय्य जई अछि । आव देय्यग्री ने आशीष माई के छैन न कूटके के गौकडी गे ग्रौ मुदा हुनका हमना- अहां से
 वेसी गठिक भेटथेन अछि से कछु देय्य के भेटथेन अछि किने! औ दीपक भीना अहैक पैम क गठिक भेटन, ज्वाई कू
 मासुटी । "

"हमना गठिक- दहेन के कोनो ठेग गै अछि मुदा आशीष एहेन कोन कमाई कनै छथि वैक मे ! " – दीपक वज्राह ।

ऐ पन आशीष दान्शनिक के मुद्दा मे वज्राह जे वैक ठेक सन के वकनी कोनय से ठ के वकनी फाग्न प्योथ नक के आ
 इंजिनियरिंग मे गां छियवय से ठ के इंजिनियरिंग कावेन प्योथ नक के छेठ ठेग दैन अछि । आ ऐ सन पुनकास क ठेग मे
 वैक अथकानी- कनमयानी सन के 'कट' फकिस् नहै अछि । अहना अहै के टपि दस दैन छी जे सूकूठ मे मडि डे मोळ से ठ
 के गवन के नय- नयाव आ साईकठि ब्रतिनास से ठ के सूकूठशपि ब्रतिनास नक मे 'कट' के जोगान नहै अछि आ वेसी हाथ-
 पन मानी न बोटन कानू से ठ के नाशन कानू आ सुवय्य गानन से ठ के इंजिना आवास नक मे 'कट' भेटय के गुंजाइस नहै
 अछि । आ मासुटी संग न अहां साईड वणिगेसो क सकै छी । एउआईसी एउठ वनिजाउ, या ठेग एउठ या कोनो आन धंघा
 क छिय । वीय- वीय मे सूकूठ जाय हाजनी वना छिय आ हावा- पार्श्व छय आवु ।

इ सव सुनकि दीपक व्रथति गान स वज्राह जे हम ऐ पुनफेशन मे इ सव जोनय- धंघा कनय छेठ गै जाय याहै छी । हमन
 उद्देश्य अछि अपन कृषेन क वय्या सव के गौक शिक्षा भेटै नय मे हमन प्रोगदान हो । तै हम वस अपन आन्थिक गवर्षि
 आ कनपिन ग्रोथ ठ क आशंकति छी ।

"नयन अहां वूडछि" एहिवेन गंदन टोकथक । ग्रौ गाय ठेक एकटा काज छोडि क दोसन धनै अछि अपन पुगानिके छेठ
 दू टा पार्श्व वेसी कामावी नाहै छेठ आ क अनेनेहें

वीय मे वाग कटैन दीपक दूनिदिना से वज्राह जे गंदन गाय, अहां जे व्हट्सएप से छय के फेसबुक नक पन गनिदिनि
 नाष्टनकानिके नाग अठपैत नहै छी से प्यो अगका ज्वाग छेठ छेठ आ क कछि अपनो अमठ मे ठावय छेठ आ क विस
 अपन कुंठ मटिय के छेठ!

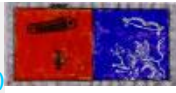


गंदन के समन्वय कर्ता नूपेश वज्राह जो दीपक माय अहं अनेने मायुक न रहै छी। वास्तव में ई देशभक्ति, राष्ट्रवाद, ईमानदारी आदि शब्द गेना सभ के गतिविध छै, कि समन्वय छै आ कि अपन कुंठा भेटाव छै, हवावाणी छै, दोस्ती के पनपान छै प्रयुक्त होई अछि, मुदा वास्तविकता के धनात पन अहं कोना क के अर्थ (यन) कमावी पैह सवसं पैघ सोय होय अछि। अहंके समाज में स्थापना ऐ के गै भेटाव जो अहं कोक शुद्ध आ समाजवादी आयनाम नपै छी वरुण ऐ से भेटाव जो अहं यन संयम कनय में कोक कावठि छी (यह ओकना छै जो नीका अपनावी)। आ देप्पु अहो जो दुव्रिया में छी ओकना काम कनयि गनोथे न अछि।

ऐ धमन्वय के वीय दीपक के मोन के दुव्रिया भेटाव जो छै ओ उताव दैव वज्राह " न सकै अछि जो ओक हमना वगैह के वुहै छै मुदा आव हम न गौकडी प्रार्थन कनय आ ओह उददेश्य छै कनय जो हमन मोन में अछि। रहै वा न अर्थोपापन के न कछि आ न नीका सेहो अपनायव जेना व्रद्धिपत्र के वाद के समय में ट्यूसन, छोट-मोट सोफ्टवेयर प्रवेवसाईट प्रोजेक्ट डाटा-एन्ट्री वनक आदि के कार्य कनय के प्रयत्न सेहो रहै। जौ गणना किड आसनिवाह वगैह रहै न जगिगी डिके-डाक कटा जौतै। "

दीपक के पोस्टिंग अपने जगि के एकटा आन प्रयत्न के एकटा माध्यम कि व्रद्धिपत्र में न जो छै। दीपक ओतवे उताह आ आशा के संग व्रद्धिपत्र प्रार्थन केवाह जेना उताह आ आशा से कोनो सासु अपन गवकी कनयि के दुनागमन काठ में पनपिना कनै अछि। मुदा कछि ए दनि में दीपक के व्रद्धिपत्र में पसल अव्यवस्था के जान न जो। व्रद्धिपत्र में अनुपस्थिति के माभिति में मास्टन आ व्रद्धिपत्र में जेना कोनो अधोपति स्तन वागै होय! माने पयास पनपिना सं वेसी गै मास्टन के उपस्थिति नहै आ गै व्रद्धिपत्र के। व्रद्धिपत्र गवक के हाथ सेहो गेहने सन भेट छै जेना कोनो स्तनी के, जगिकन वन वृहण दनि से वाहन कमाय छै जो होस्थ आ सासुन में केयौ मानड वगैह होस्थ। शौचाप के नाम पन र टा शौचाप टूट-फाट गनहाइत जेना नाक गै देठ जा सकै अछि आ टू टा मास्टन सव छै कनै डिके-डाक अवस्था में जे में नावा मानै नहै छै। कयिक आवा मास्टन सदपिन अनुपस्थिति नहै छै तै कछि कवास या न प्याए नहै छै अथवा टू टा गीन टा कवास के एक के संगे वैसा देठ जाय छै। ई अव्यवस्था देप्प दीपक के मोन पसिया जेठै। ओ एकना व्रिष में वरिओ साहव के वसिना प्रयत्न छपिवाह आ हुनका से ऐ व्रिष में उयति कायवाही कन के गव्रिदन केथनिह। कछि दनि वाद वरिओ साहव एवाह आ व्रद्धिपत्र के नकिषम केथनिह। पूना काठ हेडमास्टन, कनिगी आ ठुआ-गुआ मास्टन सव हुनका घेने रहै छै आ व्रद्धिपत्र के अव्यवस्था के हांप के पूना प्रयास केवाह।

आव दीपक उम्मीद कनै छै जे प्रयत्न से कछि कायवाही होतै। मुदा एह न कछि गै भेट पनय एक दनि मुपयि आ सनपय पृथ्वी सहू पन। पृथ्वी देनी दीपक के पुछा न भेटै। दीपक आव कि हुनका सव के प्रामाण-पाती केथनिह। मुदा प्रामाण के उताव देने वनि हुनका पन प्रश्न दागै जो यौ दीपक वावू! अहं एय गौकडी कनय छै एहु अछि



कनिनीतिकरै छै? मं निनीतिकरै के अछि नि पुठि वापू आ गै न एम्ह- आम्ह के वाग सव गै कैथ कू ।
युपयाप वदियाथ मे आउ, समग्र वगिवा आ आनाम से दनाहा छै कू वस ।

"आ जो दनाहा कम बुहना जाय न टोछि वना के सनका के आगा यना- पुदसन कू" कनिनी वावू वीय मे वाग छैकै
ब्रह्मात्मक छैना मे वगिवा ।

दीपक उगन मे कुछु गहि वगिवा । हुनका मोन वड्ड कुंठि आ वृथति न गे छै ।

दीपक के मछि मुह देय के एक दिन मंडा सन पुछथनि जे हौ दीपक, एना कयिक मोन मछि केने छहक? सगिह क छह
मेठगे दीपक के मोन दनति न गे छै । ओ वगिवा जे सन, हम अपन कयिनि आ महानगन क जीवनी छेडि क
नौकडी पकडि छेडि सोयि जे अपन गाम-घन के ययि पुना सव के गकि शिक्षा देव मे अपन योगदान कनवा
मुदा ए ओकना छै जे माहैठ मेठ के याह से न अछि गै, उठे यमकी मेठे अछि

ए पन मंडा सन वगिवा "हौ ककिनवह, इ समाजो एहो अछि ई हेडमासुटन, कनिनी, मुपयि, यपनासी, इ सन एहि समाज
के छैथ कनि हो, कोनो छेद से न आय छै छैथ । नोना कछि छः जे इ जोक गोप-यंघा होय अछि से कमुपयि-सनपंथ
के बुह छै नहै छै, ए सव मे ओकन सव के हिससा नाप छै नहै छै"

मुदा सन ए वदियाथ मे वय्या न गुनामीसे के गे पडै अछि, नपन छेक सव एह यो नमुपयि-सनपंथ के कयिक युगै छथि
"हौ ई एकटा जटिल सिस्टम यक्न अछि जे मे सवहक जागिनी के तीछि देयवह" मंडा सन पुनउगन मे वगिवा "देय,
ए वदियाथ मे समाज के कछि एहो सक्रम वृग के वुनू सव के नामाकन मेठ अछि जिकन वुनू सव वासना मे कोनो
पवकि सूक मे पडि नह छथि मुदा सनानी योगना के ठाठ छे हेतु ओ सव नामाकन एह कनौ छथि वदियाथ
पुनसास से हुनका ई ठाठ मेठ छै जे वगि वदियाथ एह हुनका सव के हाजनी वगिवा अछि आ सनानी योगना सव
के ठाठ मेठ जाय अछि नाहि एव मे ओ सन एह यो नमुपयि-सनपंथ के युगै छथि "

"मुदा एना कनै के वजाय यद ओ सक्रम छेक सव एह गकि पडाई के छै जे दवाव वनेथि न कदायति एह गकि पडाई
मेठ सकै छै जे से ओ सन पवकि सूक के महान कोस के यक्न से सेहो वांछि सकै छैथ ।" दीपक वगिवा



मंडल सन एकटा गहने सांस छोड़ैत वगैरह "हं मुदा ऐ मे हुनका सव के एकटा बांगट ई बुझना जाय छैन जे कंडजक कमी सँ सनकारी ब्रिटिशियन मे ओ इन्फ्रास्ट्रक्चर आ सुविधा नै अछि जेकरा दनकरा अछि आ दोसर जे कदायति २ मनोवैयानयाना सेहो काज कनै अछि जे जपन न हुनकर वय्या संगे आनो (आर्थिक अक्षम) लोक सव के वय्या सव सेहो आगु बढा जायत जे कदायति २ वर्ग के पसंद नै छैन।"

मुदा एहो लोक सव के न समाज मे कमी नै जागका सव के सनकारी ब्रिटिशियन मे नकि शिक्षा भेटय से ठाह होउ से सव कयि नै एहन मुय्या-सपय सव के वीरिय कनै छैथ? – दीपक पुष्पाह

"गाना पुनकर के दवाव, जागलकता के कमी, नोटी-पानि ओहनायत नै के कामसे आ ग्रामक पुन्यागत एक काम अछि" – मंडल सन वगैरह।

ऐ पुनकारे कछि मास मे दीपक के ओय कुयकुयुह के जागकारी न जेठैत जे मे शिक्षा वृद्धिस्था (सिस्टम) ओहनायत छै। मुदा ऐ यकुयुह के गोडी कोना से कोनो मानुग नै भेटय छै। कोनो आन सक्षम लोक के सहायता के उम्मीद ओना न मानुग नोकय छै के एक टा जयद्वय गढ भेट छै। छुट्टी मे जपन ओ गाम गेबाह न अपन भोजक वय्या वावा के सुनेपनिह। वावा कहपनिह जे वीआ जपन उपैत मे मुह दैये देह न मुस सँ कयि घवनाय छै। तो न वस अपन कर्तव्य कनै, वांकि वीआ पन छोड़ि देहक भोग उगाक यिया-पुता के पढावह छपिायह एहन न नै अछि जे तो कछि अजगुन दैप नह छै। हमना पीढा सँ के तोना पीढाक लोक सीमति साधन मे न पढेक अछिहौ।

दीपक के वावा के वात जयि गे। वस केन की ओ एम्ह-आम्ह के कुवृद्धिस्था के दैपनाय छोड़ि वय्या सव के पढवै पन यथाग दैवत उगाह। एकस्टा क्वास सेहो वेवत उगाह। जेहए ओ छात्र सव आ कछि गाजपनि के वीय लोकपुनिय न गेबाह। एम्ह ओ १५ अगास के अवसत पन छात्र सव के वीय छोट-मोट पुनयिगति के आयोजन के योजना बना नह छै। ओ ओम्ह कनभेठ स्टार सव मे पुसुन-कुसुन यातु न गे छै। केन एकदनि दीपक जपन अपन योजना के हेडमास्टर उा पहुँचाह न हेडमास्टर वात कटेन वगैरह जे पहिने २ कहु जे कअं ब्रिटिशियन के वाद टूटन कनै छै? जौ हं - दीपक अतन मे वगैरह। न की अंकि गयिमावरी नै बुझै अछि? - हेडमास्टर वगैरह।

जौ बुझै अछि मुदा हम ई ब्रिटिशियन समय के वाद कनै छै आ ऐ से ब्रिटिशियन मे हमन शिक्षा पन कोनो पुनवाव नै पडै। अछि, ब्रिटिशियन मे सवसेवसी क्वास हम छै छै ई ब्रिटिशियन के वय्या-वया जगै अछि आ आन आन शिक्षक सन न



गै जागि फोक ननहक वृषवसाय कनै छैथ आ ओहो वृद्धियाय के समय में, आया टाईम गैवे नहै छैथ - दीपक आवेश में एककै सुन में वाजि गैथैथ।

"अहाँ वेसी कावठि वगै छकी? ओक की कनै अछि से देखनाह न अहाँ के? अप्पन काज कनू, हमना की कनय के याही से जुगि वनाउ वेसी उडव न ठपिनि में गुप्तापन पकडा देठ जायन अहाँ के।" - हेडमास्ट न साहबि हठि की दैव वज्रहि।

दीपक उप्पन भोग सं ओगय से घुनवाह। हुनका हेडमास्टन के गोतपयंथा वृद्ध छठ ओक न वन डेके दान अछि, आ वृद्धियाय के अर्थिंश काय अप्पन के डेका ओकने गैठे अछि मुप्पिया-गेना सव से सेहो संवंध आ जो ओक समाजक छेठ कछि काज कनय याहै अछि गैकना ज्ञान देवय यथहि अछि।

अगि दनि कनिगी हनिका हाथ में एकटा आनन थम्हा देठेन जोक न अगुसान हनिका पुनपंड के कोनो प्रोगना के कायान्वयन के छेठ सन्वेक्षमा के काय में उगा देठ गेठ छठ माठव जो हनिका वृद्धियाय में छात के पढावै के काय से हटाव के गया षड्यन्त नय देठ गेठ छठ दीपक हाथ में आनन गेने ई नव-संघन के वषि में सोयन उगावाह।

आव न र समये वना सकै अछि जो दीपक वृषवस्था (सिस्टम) के ऐ यक्नकॉस स वयकि गकैठ पावै छैथ की गै?

ऐ नयनापन अपन मंगल्य गजागेनहनावृद्धियोग पन पडाउ।

मथिठि कुमान सगिह

"माया" (वीहना कथा)

"हेह, सुनै छयि?"

"-----"

"सुनू गै!"

"की कहै छी?"

"याय नहि गेटौ की?"



"थम्हू अप्पन कनयिं के इस्कुठ जाय मे वठिव न' १हउ छैन्ह हुनक नगसा वग १हउ छी कनेक क□प्सा के सम्हायिं
 नै, कनयिं के नंग केने छै ! " कयिन संईसगन जाव मेठछैन्ह
 "पप्पू केम्हण छै जे क□प्सा के हम सम्हाय ?" ओ वण्ठाह
 "ओ मोटन सार्कठि साशु क' १हउ छै, कनयिं के इस्कुठ पहुँचैते नै ! "
 "वेस, कन' जेवौ यौ क□प्सा वावूससस ?
 यउ पोप्पनि मे माछ देप्पवै छै ! " याह' क मोह न्याग उठि क□प्सा केन ठावाह पोछाव' !
 कनयिं, पप्पू संग इस्कुठ छेउ ब्रदि न' जेवौह
 "हे आवो न' याय पीया दयि ! "
 "थम्हू अप्पन, पप्पू छेउ नगसा वगौवाक अहि, ओकनो ने आशुसि जैवाक वेन न' जेवै ? " हुनक पत्नी वण्ठाह
 पप्पूओ ब्रदि न' जेवै अप्पन आशुसि !
 याय' क आस मे ओ वेकठ छवाह, "आवो याय मेठौ की ? "
 "हं, छानिहउ छी, ठाविहउ छी" पत्नी' क मयून आवाण मेठछैन्ह
 "अश्रि"
 "एसगने प्पावि हमही ? "
 "ई याह' क वेन छै ? "
 "भाव एकटा कप, एकने मे वांछिछै छी कनी हमनो ठा वैसू नै ! प्पावि काम, काम"
 "देप्पहि, एहिउमै नै" वजौन-वजौन हेंपजैह
 "आहि कहु न' हमन अहां जीवन संगी छियै, हमनो दीस कप्पनो ययिन दयि ! " ओ कनेक नोमांठकि न' जेवाह आ हुनक
 हाथ अपन हाथ मे छै वण्ठाह, "हमन न' एकदोसने मे नै संसाय एहि, एक्को वणि हम अयूने छी, वांकि सन माया थीक
 सान्य छै न' हमन एकदोसने केन पुनिसमनपस पुनेम ! "
 "की न' जेवै यै ई वूढ़वा के ? " पत्नी हंसै वण्ठाह, " देप्पियौ न' एहिउमै नै मे वहेक जेवयनि यै ! "
 "गहि पप्पू मां, हम वहेक गहि नहउहुँ यै हम एकदोसने सं जायने व्रमिप्य न' जायव नयने वेटा-पूओहु सन' क गजानि मे
 टुअन न' जाएव, केओ नै नैयू देन
 नै वेटा, नै वेटी, नै पूओहु, नै आन केओ ! "
 "की पगठा जाकां वाग क' १हउ छी, की न' जेवै ? "
 "हमन एकदोसने केन पुनिसमनपस कानो हेन जेवै, अहां पन सं हमन अधिकान छीना जेवै एकटा याह' क छेउ माजनी
 कन' पजै की कहु पप्पू मां ककना कहु, हमन ने मां छथनि नै वावू, अंही सं ने कहवै, हमन सुनवो वासो कछि टेम गकिछ
 पप्पू मां" कहै-कहै ओ सुखैक-सुखैक काग' ठावाह
 पत्नी अवाक, क□प्सा अवाक ! !

ए नयनापन अपन मंगल गजालेनान्दहियेन पन पगउ

३५५



३१ आशीष अगयनिहा १ - २ टा गण

३२ गणदीश यगुन गकुन 'अगठि' - ४ टा गण

३३ पुनमव हा- गणपुनगिधि

३४ नागेश मोहन हा 'गुणन' - काटगोठ पुट्टी (हास्य १२)

३५ पठवो ममठ- वेटी

आशीष अगयनिहा १

२ टा गण

१

छै सग कयिो असग

अपगे अपग सहय

ई आगिओ आगि

हुगुन नहउ मगग

वुहवै अहाँ सग कछि

एँ गपुन अवस

जीवन मगे वणिगस

नसिफो नहउ कसग

संवेदना टूट

पूगो नहै पगग

सग पाँतमि २२९२- २२ मागुनकम अछि

दोस सैनक पहिओ पाँतमि छुकेँ दीव मागवाक छूट छेओ गेओ अछि



२

छन गनिके पहियान छै

जीवन गनिके अनुमान छै

सोना यागी वैकमे

आँयने दुनियाँ छै

पुनर्हि आ जगमान संग

अपने ओ गजवान छै

युप्पे नहण्डुँ देखाँगे

केहन ई अजमान छै

सुप्रामो अगयनिहान जी

हमने सग वरमान छै

सग पाँतमि ररर+रररर मात्नाकृम अछि

तेसने सेनक पहि पाँतमि अंमि ठु छूटक तौनपन ठेठ गेठ अछि

मकलामे हमना जगैत दोष छै। पहि पाँतमि "जी" आदने सूयक छै तँ दोसने पाँतमि "छै" वनावनी सूयक। आगुनह जे उपाय वनाएउ जाए।

ऐ नयनापन अपन मंतव्य गजाजोगदनाविहियेन पन पडाउ।

जगदीश यगुन गकुन 'अनधि'

४ टा गजग



(१)

सभ धन सभ आंगनमे देय्यो योना-गुक्की

पसयठ जन-जीवनमे देय्यो योना-गुक्की

कय्यो गायन कय्यो कानन सभ दुनयिमे

सभानातिन-मन-धनमे देय्यो योना-गुक्की

पनवन-सन गानी आ हल्लुक लूने-सन सभ

सभदनि सभ दनपनमे देय्यो योना-गुक्की

नहनि आवन नहनि नाइछ सदी-गामी

पठ-पठ पनविननमे देय्यो योना-गुक्की

जे हेतै से नीके हेतै कहइछ गीना

अनक अनगिदगमे देय्यो योना-गुक्की

(मान्ना-काम :रररररर-रररररर)

(२)

नान दानिनानी ठा

मंगनी पैय उधानी ठा



सम याही एप्पने याही

वेयकि' घ'न घनागी ठा

उपनयनक अन्थ की

गहना आ घोती साडी ठा

पनम्पनामे पसि गेथौ

यथ कोनो बुधियागी ठा

ईहे दुःख, थकि पाहुन

हट्ट' पान सुपानी ठा

वधिरहसं वधिए गानी

वदवाक तैयागी ठा

नाम-नाम हे दुनयिमे

हुनके-सन मैथानी ठा

(सगै वान्नाकि वही, वान्ना-ट)

(३)

ए गमक ठेक वदवाम किए छै



सभ नसुनापन एतौ जाम किए छै
ने प्या सकैत छी ने पीवसकैत छी
एहनो वसुक्त एतौ दाम किए छै

जकना नै सोहर छै भाएक खुशी
ओकना जेनपन शूनीनाम किए छै

नै एछै होडी टंगौछै उपनैगमे
एहेन नसोप्य यानू नाम किए छै

ए सी कामे वैसथ कियौ सोयैए
ओकना छेठ वधियाग वाम किए छै
(समथ वान्मकि वहन् वान्म-१३)

(४)

कप्पनो सागन कप्पनो ननिहन् कप्पनो शूठ समाग गाजथ
कप्पनो ठागय यधना यह-यह कप्पनो तीन कमान गाजथ
कप्पनो पुनपी कुडहनपिंती अप्पड़िऔन समाठ जकां
कप्पनो वाड़ी कप्पनो गाछी कप्पनो भेठ मयाग गाजथ



कपनो आंगनमे अनपिन सन कपनो गान-पुआन जकां
कपनो याअन कपनो वाढन कपनो पान मपान गजअ

कपनो गामक यौवटयि आ मंदन औन शान जकां
आ कपनो सीमापन उअन देशक वीन जवान गजअ

कपनो मौनी आ पौनीमे सांगअ जीन-मनीय जकां
कपनो कोसीमे हयअ आ छटपट कोटपिनान गजअ

ककनो पाननि मुनहि-कयनी जामुन आम वान 'अनपि'
हमना पाननि दीयावागी अथवा देव-उअन गजअ
(भागी-कम : २२२२- २२२२- २२२२- १२१२२)

ऐ नयनापन अपन मंगल गजाननहानावहिये पन पडाउ

पुनसव ह

जगपुननिधि

कहवै छि हम जगपुननिधि

मुदा गेटव गै हम कोनो वधि

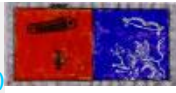
मयअ नहै जगना मे हाकाक

नहै छि तेयो हम गनिवाक

कयि सोयी कोना जीवैत गनिवन



गमिग्न छविदाव मे हम अप्पन वन
गै माधव कण्ठ मेथ अन्धाय
वस अप्पन पैर मे गै छटै वेमाय
सगल गाँव नहौ अन्धायि मे
वगै नहिह वस 'पाव्रन हाउस'
छान सव गने होए नहै छै
कएक छै हम ककनो टेन?
डप्प नहै गै क धानाधान
कहुन ई मेथ कोन वडका वान!
थडै छविडका पुवागी जंग
वज्रवै छटिबोटन पन हाइथ मंङ्ग
मेथै अछि जौ कछि आयक ओक
हट ह कनै छहिनका वृक्ष
आय कण्ठक सुगन वनसाग
कनै छि अहूँ कछि नसगल वान
सह नवदीप मेथ गाँव मे
वृक्ष छहिन घोटाय मे
शिक्षा-स्वास्थ्य वनगैथ अछि वृथापान
पुत्रा न नहै अछि वेनोपगान
मुदा हम मगन ई आशा मे
वृथा कानाह वेडा पान
सुन कन वनगै अप्पन प्ये
जपन आयन वोट छै के वेन



गै छोड़ने छी कोनो वक्तिप
युगल सब हमने बेनम बेन।।

ऐ नयनापन अपन मंगल गुणगोणहनावादिहियोन पन पडाउ।

नापोस मोहन ह्य ' गुंणन'

काटगिठ फुट्टी

(हिसूय १स)

साँप जेना फुट्टी के काटगिठ युडैठ,
की कहूहे दैया।

गनदगि सँ डाँड़ बनसिदप्पिन ठहनाय छठ
सानगो आँयन पन आवकि' सुहनाय छठ
काटठक गनिसनि वगेठक यगैठ,
की कहूहे दैया।

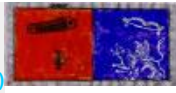
देपथि ओ' कहथि ई साओन केन घनहे
केशक सगिह मे डूविउमडठ मोन मनहे
काटमिधुवती ठगा गेठ कगैठ,
की कहूहे दैया।

पनवगिया पूछठक माँ फुट्टी की मेथी गे
माँह नापिहिन केशो काटिठ' गेथी गे
सुगन सुनाहि मेठ कनखुट्टा घैठ,
की कहूहे दैया।

सघन घन केश काटिहिपिपी वना देठक
पूगन के शोनायिा गनेगन देप्पा देठक
माथ छठ मधुवन ठगाओठ कगैठ,
की कहूहे दैया।

साँप जेना फुट्टी के काटगिठ युडैठ,
की कहूहे दैया।

(यथाग देठ जाउ:- एहि नयनाक उद्देश्य मनोनागन मात्र। अथवाश्रित्य सँ कोनो संबंध नही ई यन्यति फुट्टीकांडक
एकटा कामासौनायिा डारन' सकै छै। नापोस मोहन ह्य ' गुंणन' ॥)



ऐ नयनापन अपन मंगल गंगाजोगहनाव्रद्विषयोन पन पडाउ

पडव्री मल्लुड, गाम वेनमा, जाँठा मधुवनी

वेटी

गै अहाँ ओकना पढवौ

गै कछि वगै

जपन ओकन मन गेठ कछि दुहवाक

ओकना "उड़की" कहिकऽ

घन वैडवो!

दहेजमे गनि देविए ठापो नूपैआ

गठगी प्याँठा दहेज ठे वगै वगै

पुनश्च देविए अहूँ ओगवे

कछि कम आ कछि वेसी मुदा अहूँ केविए

दहेजकेँ अहाँ जमा कऽ देविए ठापो नूपैआ

पढ़ाव काँठ ओकना अपनाकेँ ना समर्थ वगै

ऐ समाजक गप्पक यगिना अहाँ ठेग-ठेग

अपन अपन वेटीक अधिकारक गप्प गै

सुन पियेविए!

पढ़व अप्पुनका अपनाय वूछनोक पनमिआम

गँ मनमे कयोह हएग

हए घण्टा मजैग अछि अही सगक वीस टा वेटी



गंगाजोगदनांव्रदिहयोगि पन संपन्न कनू। ऐ साइटकें प्रीतिहि गकुन, मधुपिका यौधनी आ नक्षत्रप्रिया द्वाला उज्ज्वल
कएत गेथ।

५ जुलाई २००४ कें हानपूः गंगाजोगदनावाक नववोगसपोनयोम २००४० उवहाउसाकि- गायहहहामथ “भाउसनकि गाछ”-

मैथिली भाउवृत्तसँ प्रानमन इंटरनेटपन मैथिलीक प्रथम उपस्थितिकि यात्रा “‘व्रदिह’- प्रथम मैथिली पाक्षिकि ई

पत्रिका” यनपिहुँयथ अछि, जे हानपूः व्रदिहयोगि पन ई प्रकाशति हेत अछि आव “भाउसनकि गाछ” भाउवृत्त

‘व्रदिह’ ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक भाउवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त गऽ नहथ अछि व्रदिह ई-

पत्रिका इषषम रररट- ५४७३३ वर्यएहअ



सद्विनिर्गत